मार्गदर्शिका

राजनीति-विज्ञान

गुणात्मक, रूचिकर एवं क्रियात्मक अध्ययन मार्गदर्शिका

(राजनीति-विज्ञान प्रवक्ताओं हेतु)

2016-17

SCERT

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

चतुर्थ–मार्गदर्शिका

राजनीति–विज्ञान

समकालीन विश्व संगठन एवं भारत

मुख्य सलाहकार

पी.एस. श्रीवास्तव

आई.ए.एस. शिक्षा सचिव, दिल्ली सरकार

चेयरपर्सन, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली

मार्ग दर्शन

श्रीमती अनिता सेतिया

निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

डॉ. प्रतिभा शर्मा

संयुक्त निदेशक एवं राज्य शिक्षक समन्वयक एस.सी.ई.आर.टी.

शैक्षिक समन्वयक

डॉ. नीलम

वरिष्ठ प्रवक्ता डाइट राजेन्द्र नगर

डॉ. पवन कुमार

वरिष्ठ प्रवक्ता डाइट केशव कुमार

लेखन समूह

डॉ. नीलम	डाइट राजेन्द्र नगर
डॉ. पवन कुमार	डाइट केशव पुरम्
श्रीमान मदन साहनी	सी.बी.एस.ई. विषय विशेषज्ञ
डॉ. भगवती प्रसाद ध्यानी	शिक्षा निदेशालय
श्रीमान श्याम किशोर गुप्ता	शिक्षा निदेशालय
श्रीमान तपराज वत्त	शिक्षा निदेशालय
श्रीमान रमेश	रावल कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मोहम्मद नासिर	शिक्षा निदेशालय
श्रीमती ऊषा किरन	शिक्षा निदेशालय
श्रीमान अरुण कुमार	एस.सी.ई.आर.टी.
श्रीमान राजीव रंजन	एस.सी.ई.आर.टी.

वेटिड एवं सम्पादन

श्रीमान मदन साहनी

डॉ. भवगती प्रसाद ध्यानी

प्रकाशन समूह

सपना यादव एवं मीनाक्षी यादव

प्रकाशक : राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

टंकण : एजूकेशनल स्टोर्स, एस-5, बुलन्दशहर रोड, इण्डस्ट्रीयल एरिया, साईट-I, गाजियाबाद (उ.प्र.)

विषय-सूची

1.	शांति	40
2.	समकालीन विश्व में सुरक्षा	46
3.	अंतर्राष्ट्रीय संगठन	54
4.	सत्ता के वैकल्पिक केन्द्र	64
5.	भारत के विदेश संबंध	72
6.	समकालीन दक्षिण एशिया	79

आमुख-1

21 वीं सदी में सरकार का मुख्य ध्यान आम आदमी को सशक्त करते हुए जीवन के बुनियादी कौशलों को विकसित करना है ताकि भारत के लोकतंत्र को और प्रभावी बनाया जा सके।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र भविष्य के आने वाले नागरिक है अत: यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वे न केवल अच्छे अंक प्राप्त करें बल्कि वे जिम्मेदार व उत्पादित नागरिक बन सके।

प्रस्तुत सहायक पाठ्य सामग्री शिक्षा निदेशालय दिल्ली सरकार के राजनीति विज्ञान के प्रवक्ताओं हेतु तैयार की गयी है जिसका उद्देश्य उनकी शैक्षणिक क्षमताओं का विस्तार करना है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद तथा मण्डलीय शिक्षा तथा प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा समय-समय पर तैयार की गयी शिक्षक संदर्शिकाए इन लक्ष्यों को प्राप्त करने का एक प्रयास है। इन शिक्षक संदर्शिका का उद्देश्य शिक्षण अधिगम को अधिक अंत: क्रियात्मक बनाना है जैसा कि राष्ट्रीय पाठ्याचार की रूपरेखा 2005 में रेखाकिंत है।

मैं इन विषय विशेषज्ञों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किए। साथ ही मैं संदर्शिका लेखन में सम्मिलित संयोजकों, लेखक समूह व संपादन मंडल के साथ-साथ सभी राज्य शैक्षिक व अनुसंधान परिषद तथा मंडलीय शिक्षा व प्रशिक्षण संस्थानों के शैक्षणिक व गैर-शैक्षणिक पदाधिकारियों व प्रकाशन विभाग के अमूल्य योगदान की सराहना करती हूँ।

यह मेरा पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत संदर्शिका अध्यापकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी आपके सुझाव एवं विचार आंमत्रित है।

-अनिता सेतिया

निदेशक

आमुख-2

प्रस्तुत सहायक पाठ्यसामग्री को राजनीति-विज्ञान की अवधारणा के अनुसार संबंद्ध करने का प्रयास किय गया है। कक्षा ग्यारहवीं और बाहरवीं के विभिन्न संबधित अध्यायों को इस माड्यूल में मिश्रित रूप में प्रस्तुत किया गया है। दोनों कक्षाओं की राजनीति विज्ञान की सामग्री को 6 माड्यूल्स के अंतर्गत निम्नलिखित शीर्षकों में विभक्त किया गया है:-

1. **प्रथम माड्यूल→** राष्ट्रवाद एवं विकास
2. द्वितीय माड्यूल→ संविधान का दर्शन एवं व्यवहार
3. तृतीय माड्यूल→ राजनीतिक सिद्धाँत व अवधारणाएँ
4. चतुर्थ माड्यूल→ समकालीन विश्व संगठन एवं भारत
5. पंचम माड्यूल→ भारतीय शासन एवं राजनीति
6. **षष्टम माड्यूल→ शीतयुद्धोत्तर विश्व राजनीति**

उपरोक्त माड्यूल्स के अतंर्गत अवधारणाओं को इस रूप में स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है जिससे एक समझ बने न कि अवधारणाएँ केवल ज्ञान, तथ्यों एवं सूचनाओं तक ही सीमित रह जाए। साथ ही प्रत्येक प्रकरण में अभ्यास व क्रियाकलापों को रोचक बनाते हुए इस तरह संरचित किए गए है जो उन्हें सोचने के लिए प्रेरित करें। प्रत्येक प्रकरण के अंतर्गत संवर्धित मूल्यों की भी बात की गयी है जो कि संविधान में निहित मूल्यों पर आधारित है।

माड्यूल निर्माण में जो समूह कार्य के लिए बनाया गया उन्हें लंबा शिक्षण अनुभव है।

माड्यूल निर्माण समिति के सदस्यों की शैक्षिक विशेषज्ञता और उनके द्वारा दिए गए अमूल्य समय और इस कार्य को पूर्ण करने में सहयोग के लिए में आभार व्यक्त करती हूँ/करता हूँ।

–डॉ. नीलम

डाइट राजेन्द्र नगर

डॉ. पवन कुमार

डाइट केशव पुरम्

POLITICAL SCIENCE (028)
Class - XI (2016-17)

One Paper | Marks: 100
Time: 3 hrs.

Units		Periods: 220	Marks: 100
Part A: Indian Constitution at work			
1	Constitution Why and How and Philosophy of the Constitution	17	12
2	Rights in the Indian Constitution	16	
3	Election and Representation	11	10
4	The Executive	11	
5	The Legislature	11	10
6	The Judiciary	11	
7	Federalism	11	10
8	Local Governments	11	
9	Constitution as a living document	11	8
	Total	**110**	**50**
Part B: Political Theory			
10	Political Theory : An Introduction	10	10
11	Freedom	11	
12	Equality	11	10
13	Social Justice	12	
14	Rights	11	10
15	Citizenship	11	
16	Nationalism	11	10
17	Secularism	11	
18	Peace	1 I	10
19	Development	11	
	Total	**110**	**50**

COURSE CONTENT

Part A: Indian Constitution at Work

1. **Constitution Why and How and Philosophy of the Constitution** **17 Periods**

   Constitution: Why and How, The making of the Constitution, the Constituent Assembly, Procedural achievements and Philosophy of the Constitution.

2. **Rights in the Indian Constitution** **16 Periods**

The importance of Rights, Fundamental Rights in the Indian Constitution, Directive Principles of State Policy, Relationship between Fundamental Rights and Directive Principles

3. **Election and Representation** **11 Periods**

Elections and Democracy, Election System in India, Reservation of Constituencies, Free and Fair Elections, Electoral Reforms

4. **Legislature** **11 Periods**

Why do we need a Parliament? Two Houses of Parliament. Functions and Power of the Parliament, Legislative functions, control over Executive. Parliamentary committees. Self-regulation.

5. **Executive** **11 Periods**

What is an Executive? Different Types of Executive. Parliamentary Executive in India, Prime 'Minister and Council of Ministers. Permanent Executive: Bureaucracy.

6. **Judiciary** **11 Periods**

Why do we need an Independent Judiciary? Structure of the Judiciary, Judicial Activism, Judiciary and Rights, Judiciary and Parliament.

7. **Federalism** **11 Periods**

What is Federalism? Federalism in the Indian Constitution, Federalism with a strong Central Government, conflicts in India's federal system, Special Provisions.

8. **Local Governments** **11 Periods**

Why do we need Local Governments? Growth of Local Government in India, 73rd and 74th Amendments, implementation of 73rd and 74th Amendments.

9. **Constitution as a Living Document** **11 Periods**

Are Constitutions static? The procedure to amend the Constitution. Why have there been so many amendments? Basic Structure and Evolution of the Constitution. Constitution as a Living Document.

Part B: Political Theory

10. **Political Theory: An Introduction** **10 Periods**

What is Politics? What do we study in Political Theory? Putting Political Theory to practice. Why should we study Political Theory?

11. **Freedom** **11 Periods**

The Ideal of Freedom. What is Freedom? Why do we need constraints? Harm principle. Negative and Positive Liberty.

12. **Equality** **11 Periods**

Significance of Equality. What is Equality? Various dimensions of Equality. How can we promote Equality?

13. **Social Justice** **12 Periods**

What is Justice? Just Distribution. Justice as fairness. Pursuing Social Justice.

14. **Rights** **11 Periods**

What are Rights? Where do Rights come from? Legal Rights and the State. Kinds of Rights. Rights and Responsibilities.

15. **Citizenship** **11 Periods**

What is citizenship? Citizen and Nation, Universal Citizenship, Global Citizenship

16. **Nationalism** **11 Periods**

Nations and Nationalism, National Self-determination, Nationalism and Pluralism

17. **Secularism** **11 Periods**

What is Secularism? What is Secular State? The Western and the Indian approaches to Secularism. Criticisms and Rationale of Indian Secularism.

18. **Peace** **11 Periods**

What is Peace? Can violence ever promote peace? Peace and the State. Different Approaches to the pursuit of peace. Contemporary challenges to peace.

19. **Development** **11 Periods**

What is development? Dominant, development Model and alternative conceptions of development.

Prescribed Books:

1. Indian Constitution at work, Class XI, Published by NCERT
2. Political Theory, Class XI, Published by NCERT

Note: The above textbooks are also available in Hindi and Urdu versions.

QUESTION PAPER DESIGN 2016-17

POLITICAL SCIENCE **Code No. 028** **CLASS-XII**

Time: 3 Hours **Max. Marks: 100**

S. No	Typology of Questions	Learning Outcomes & Testing Skills	Very Short Answer (1 Mark)	Very Short Answer (2 Marks)	Short Answer (4 Marks)	Long Answer I (5 Marks) based on Passages	Map Question Picture based inter -pretation (5 Marks)	Long Answer II (6 Marks)	Marks	% weightage
1	Remembering- (Knowledge based Simple recall questions, to know specific- facts, terms, concepts, principles, or theories; Identify, define, or recite, information)	• Reasoning • Analytical Skills • Critical thinking		1	2			2	22	22%
2	Understanding- (Comprehension -to be familiar with meaning and to understand conceptually, interpret, compare, contrast, explain, paraphrase information)		2		2	1		1	21	21%
3	Application (Use abstract information in concrete situation, to apply knowledge to new situations; Use given content to interpret a situation, provide an example, or solve a problem)		1	1		1	1	2	25	25%
4	**High Order Thinking Skills** (Analysis fit Synthesis-Classify, compare, contrast, or differentiate between different pieces of information; Organize and/or integrate unique pieces of information from a variety of sources) (includes Map interpretation)		1	2	1	1		1	20	20%
5	Evaluation - (Appraise, judge, and/or justify the value or worth of a decision or outcome, or to predict outcomes based on values)		1	1	1		1		12	12%
	Total		1×5=5	2×5=10	4×6=24	5×3=15	5×2=10	6×6=36	100	100%

POLITICAL SCIE7NCE (Code No. 028)

Class -XI (2016-17)

Question Paper Design

One Paper 100 Marks

Time: 3 hrs.

Units		Periods	Marks
1	Constitution Why and How and Philosophy of the Constitution	17	12
2	Rights of the Indian Constitution	16	
3	Election and Representation	11	10
4	Executive	11	
5	Legislature	11	10
6	Judiciary	11	
7	Federalism	11	10
8	Local Governments	11	
9	Constitution as a Living Document	11	08
	Total	**110**	**50**
10	Political Theory : An Introduction	10	10
11	Freedom	11	
12	Equality	11	10
13	Social Justice	12	
14	Rights	11	10
15	Citizenship	11	
16	Nationalism	11	10
17	Secularism	11	
18	Peace	11	10
19	Development	11	
	Total	**110**	**50**

3. Weightage of Difficulty Level — Percentage

Weightage of Difficulty Level	Percentage
Estimated difficulty level	20%
Difficult	50%
Average Easy	30%

4. Scheme of Options:

   There is internal choice for long answer questions of 6 marks.

   There are three passage - based questions of 5 marks each. No questions from plus (+) boxes.

5. In order to assess different mental abilities of learners, question paper is likely to include questions based on passages, visuals such as maps, cartoons, etc. No factual question will be asked on the information given in the plus (+) boxes in the textbooks.

POLITICAL SCIENCE (Code No. 028)
Class -XII (2016-17)

One Paper — Marks: 100

Time: 3 hrs.

Units		Periods	Marks
Part A: Contemporary World Politics			
1	Cold War Era	14	14
2	The End of bipolarity	13	
3	US Hegemony in World Politics	13	
4	Alternative centres of Power	11	16
5	Contemporary South Asia	13	
6	International Organizations	13	10
7	Security in Contemporary World	11	
8	Environment and Natural Resources	11	10
9	Globalisation	11	
	Total	**110**	**50**
Part B: Politics in India since Independence			
10	Challenges of Nation-Building	13	
11	Era of One-party Dominance	12	16
12	Politics of Planned Development	11	
13	India's External relations	13	6
14	Challenges to the Congress System	13	12
15	Crisis of the Democratic Order	13	
16	Rise of Popular Movements	11	
17	Regional aspirations	11	16
18	Recent Developments in Indian Politics	13	
	Total	**110**	**50**

COURSE CONTENTS

Part A: Contemporary World Politics

1	**Cold War Era** Emergence of two power blocs after the second world war. Arenas of the cold war. Challenges to Bipolarity: Non Aligned Movement, quest for new international economic order.India and the cold war.	14 Periods
2	**The End of Bipolarity** New entities in world politics: Russia, Balkan states and Central Asian states, Introduction of democratic politics and capitalism in post-communist regimes. India's relations with Russia and other post-communist countries.	13 Periods
3	**US Hegemony in World Politics** % Growth of unilateralism: Afghanistan, first Gulf War, response to 9/11 and attack on Iraq.Dominance and challenge to the US in economy and ideology. India's renegotiation of itsrelationshipwith the USA	13 Periods
4	**Alternative Centres of Power** Rise of China as an economic power in post-Maoera, creation and expansion of European Union, ASEAN. India's changing relations with China.	11Periods
5	**Contemporary South Asia in the Post-Cold War Era** Democratisation in Pakistan and Nepal. Ethnic conflict in Sri Lanka, Impact of economic globalization on the region. Conflicts and efforts for peace in South Asia. India's relations with its neighbours.	13 Periods
6	**International Organizations** Restructuring and the future of the UN. India's position in the restructured UN. Rise of newinternational actors: new international economic organisations, NGOs. How democratic andaccountable are the new institutions of global governance?	13 Periods
7	**Security in Contemporary World** Traditional concerns of security and politics of disarmament. Non-traditional or human Security: global poverty, health and education. Issues of human rights and migration.	11Periods
8	**Environment and Natural Resources** Environment movement and evolution of global environmental norms. Conflicts over traditional and common property resources. Rights of indigenous people. India's stand in global environmental debates.	11 Periods
9	**Globalisation** Economic, cultural and political manifestations. Debates on the nature of consequences of globalisation. Anti-globalisation movements. India as an arena of globalization and struggle against it.	11Periods
Part B: Politics in India since Independence		
10	**Challenges of Nation- Building** Nehru's approach to nation-building; Legacy of partition: challenge of refugee' resettlement, the Kashmir problem. Organisation and reorganization of states; Political conflicts over language.	13 Periods
11	**Era of One-Party Dominance** First three general elections, nature of Congress dominance at the national level, uneven dominance at the state level, coalitional nature of Congress. Major opposition parties.	12 Peroids
12	**Politics of Planned Development** Five year plans, expansion of state sector and the rise of new economic interests. Famine and suspension of five year plans. Green revolution and its political fallouts.	11 Periods
13	**India's External Relations** Nehru's foreign policy. Sino-Indian war of 1962, Indo-Pak war of 1965 and 1971. India's .nuclear programme. Shifting alliance in world politics.	13 Periods
14	**Challenges to the Congress System** Political succession after Nehru. Non-Congressism and electoral upset of 1967, Congress split and reconstitution, Congress' victory in 1971 elections, politics of 'garibi hatao'.	13 Periods

15	**Crisis of the Democratic Order** Search for 'committed' bureaucracy and judiciary. Navnirman movement in Gujarat and the' Bihar movement. Emergency: context, constitutional and extra-constitutional dimensions, resistance to emergency. .1977 elections and the formation of Janata Party. Rise of civil liberties organisations.	13 Periods
16	**Popular Movements in India** Farmers' movements, Women's movement, Environment and Development-affected people's movements. Implementation of Mandal Commission report and its aftermath.	11Periods
17'	**Regional Aspirations** Rise of regional parties. Punjab crisis and the anti Sikh riots of 1984. The Kashmir situation. Challenges and responses in the North East.	11 Periods
18	**Recent Developments in Indian politics** Participatory upsurge in1990s. Rise of the JD and the BJP. Increasing role of regional parties and coalition politics. Coalition governments:NDA (1998 - 2004)UPA (2004 - 2014)NDA (2Q14 onwards)	13 Periods

Prescribed Books:

1. Contemporary World Politics, Class XII, Published by NCERT
2. Politics in India since Independence, Class XII, Published by NCERT

Note: The above textbooks are also available in Hindi and Urdu versions.

QUESTION PAPER DESIGN 2016-17
Code No. 028

POLITICAL SCIENCE **CLASS-XII**

Time: 3 Hours **Wax. Marks: 100**

S.No	Typology of Questions	Learning Outcomes & Testing Skills	Very Short Answer (1 Mark)	Very Short Answer (2 Marks)	Short Answer (4 Marks)	Long Answer I (5 Marks) based on Passages and Picutres	Map Question Picture based inter-pretation (5 Marks)	Long Answer II (6 Marks)	Marks age	%weight
1	Remembering- (Knowledge based Simple recall questions, to know specific facts, terms, concepts, principles, or theories; Identify, define, or recite, information)	• Reasoning • Analytical Skills • Critical thinking		1	2			2	22	22%
2	Understanding- (Comprehension -to be familiar with meaning and to understand conceptually, interpret, compare, contrast, explain, paraphrase information)		2		2	1		1	21	21%
3	Application (Use abstract information in concrete situation, to apply knowledge to new situations; Use given content to interpret a situation, provide an example, or solve a problem)		1	1		1	1	2	25	25%
4	High Order Thinking Skills (Analysis & Synthesis- Classify, compare, contrast, or differentiate between different pieces of information; Organize and/or integrate unique pieces of information from a variety ofsources) (includes Map interpretation)		1	2	1	1		1	20	20%
5	Evaluation- (Appraise, judge, and/or justify the value or worth of a decision or outcome, or to predict outcomes based on values)		1	1	1		1		12	12%
	Total		**1×5=5**	**2×5=10**	**4×6=24**	**5×3=15**	**5×2=10**	**6×6=36**	**100**	**100%**

Note: Care is to be taken to cover all chapters.

The weightage or the distribution of marks over the different dimensions paper shall be as follows:-

1. **Weightage of Content**

Part A: Contemporary World Politics

Units		Marks
1	Cold War Era	14
2	The End of Bipolarity	
3	US Hegemony in World Politics	
4	Alternative Centres of Power	16
5	Contemporary South Asia	
6	International Organizations	10
7	Security in Contemporary World	
8	Environment and Natural Resources	,0
9	Globalization	
	Total	**50**

Part B: Politics in India since Independence

Units		Marks
10	Challenges of Nation-Building	
11	Era of One-Party Dominance	16
12 .	Politics of Planned Development	
13	India's External Relations	6
14	Challenges to the Congress System	12
15	Crisis of the Democratic Order	
16	Rise of Popular Movements	
17	Regional Aspirations	16
18	Recent Developments in Indian Politics	
	Total	**50**

2. Weightage of Difficulty Level

Estimated difficulty level	Percentage
Difficult	20%
Average	50%
Easy	30%

3. Scheme of Options:

   There-is internal choice for long answer questions.

   Map question has choice only with another map.

   There are three passage-based or picture-based questions.

4. In order to assess different mental abilities of learners, question paper is likely to include questions based on passages, visuals such as maps, cartoons, etc. No factual question will be asked on the information given in the plus (+) boxes in the textbooks.

No. of Printed Pages : 8

Common Annual School Examination, 2015-16

Subject : Political Science

Class : XI

Time : 3 Hrs.] [M. M. : 100

General Instructions :

(i) All questions are compulsory.

(ii) Questions 1 to 5 are of one mark each. The answer to these questions should not exceed to 20 words each.

(iii) Questions 6 to 10 are of two marks each. The answer to these questions should not exceed 40 words each.

(iv) Questions 11 to 16 are of four marks each. The answer to these questions should not exceed 100 words each.

(v) Questions 17 to 19 are passage based. These are of 5 marks each.

(vi) Questions 20 to 21 are map or picture based. These questions too are of 5 marks each.

(vii) Questions 22 to 27 are of six marks each. The answer to these questions should not exceed 150 words each.

सामान्य निर्देश :

(i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) प्रश्न संख्या 1 से 5 तक सभी प्रश्न एक-एक अंक के हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए।

(iii) प्रश्न संख्या 6 से 10 तक सभी प्रश्न दो-दो अंकों के हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 40 शब्दों सें अधिक नहीं होना चाहिए।

(iv) प्रश्न संख्या 11 से 16 तक सभी प्रश्न चार-चार अंकों के हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 100 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए।

(v) प्रश्न संख्या 17 से 19 गद्यांशों पर आधारित हैं। इनके पाँच-पाँच अंक हैं।

(vi) प्रश्न संख्या 20 से 21 मानचित्र अथवा चित्रों पर आधारित हैं। इनके अंक भी पाँच-पाँच हैं।

(vii) प्रश्न संख्या 22 से 27 दीर्घ उत्तरीय हैं। सभी प्रश्न छः-छः अंकों के हैं। इनके उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

1. What is meant by Mandamus ?

मैंडामस शब्द का क्या अर्थ है ?

2. From which country we borrowed the power of Judicial Review ? 1

भारत के संविधान में न्यायिक पुनर्निरीक्षण की धारणा कहाँ से ली गई है ?

3. What is meant by peace. 1

शान्ति से क्या तात्पर्य है ?

4. Write two political rights of a citizen ? ½) 1

नागरिक के दो राजनीतिक अधिकार लिखिए।

5. Write full form of UNDP. 1

UNDP का पूर्ण रूप लिखिए।

6. What do you understand by 'Question Hour' ? 2

'प्रश्न काल' से आप क्या समझते हैं ?

7. Explain any two jurisdictions of Supreme Court. 2

सर्वोच्च न्यायालय के कोई दो क्षेत्राधिकार स्पष्ट कीजिए।

8. Mention two features of Indian Federation. 2

भारतीय संघीय व्यवस्था की दो विशेषताएँ लिखिए।

9. "Indian Constitution is a living document." Justify by writing your opinion about the statement. 2

''भारत का संविधान एक जीवंत दस्तावेज है।'' अपना तर्क देते हुए इस वाक्य का औचित्य स्पष्ट कीजिए।

10. Distinguish between natural rights and fundamental rights. 2

प्राकृतिक अधिकारों तथा मौलिक अधिकारों में प्रमुख अंतर बताइए।

11. Describe any four functions of Election Commission of India. 4

भारतीय निर्वाचन आयोग के चार मुख्य कार्यों का वर्णन कीजिए।

12. What are the demands raised by states in their quest for greater autonomy ? 4

ज्यादा स्वायत्तता की चाह में प्रदेशों ने क्या माँगें उठाई हैं ?

13. Write any four changes that have been made in the Panchayati Raj System under 73rd Constitutional Amendment. 4

73वें संविधान संशोधन के अन्तर्गत पंचायती राज प्रणाली में किए गए कोई चार परिवर्तन लिखिए।

14. What does it mean to give each person his/her due ? How has the meaning of 'giving each his due' changed with time ? 4

हर व्यक्ति को उसका प्राप्य देने का क्या मतलब है ? हर किसी को उसका प्राप्य देने का मतलब समय के साथ कैसे बदला जा सकता है ?

15. Mention four differences between State and Nation. 4

राज्य और राष्ट्र में चार अन्तर बताइए।

16. 'Disarmament is necessary.' Why ? 4

'नि:शस्त्रीकरण आवश्यक है।' क्यों ?

17. Read the following passage and answer the questions based on it :

A democracy must ensure that individuals have certain rights and that the government will always recognise these rights. Therefore, it is often a practice in most democratic countries to list the rights of citizens in Constitution itself. Such a list of rights mentioned and protected by the Constitution is called the 'Bill of rights'. A bill of rights prohibits government from thus acting agains the rights of individuals and ensure a remedy in case there is violation of these rights.

From whom does a Constitution protect the rights of the individual ? The rights of a person may be threatened by another person or private organisation. In such a situation, the individual would need the protection of the government. So, it is necessary that the government is bound to protect the rights of the individual. On the other hand, the organs of the government (the legislature, executive, bureaucracy or even the judiciary) in the course of their functioning, may violate the rights of the person.

(a) How many fundamental rights are given to Indian citizen in the Constitution of India ? 1

(b) In case of violation of the fundamental rights of an individual, which fundamental right ensures remedy ? 1

(c) From whom does the Constitution protect the rights of an individual ? 3

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और इसके आधार पर पूछे प्रश्नों के उत्तर दीजिए —

प्रजातंत्र में सुनिश्चित होना चाहिए कि व्यक्तियों को कौन-कौन-से अधिकार प्राप्त हैं जिन्हें सरकार सदैव मान्यता देगी। संविधान द्वारा प्रदान किए गए संरक्षित अधिकारों की ऐसी सूची को 'अधिकारों का घोषणा-पत्र' कहते हैं। अत: अधिकारों का घोषणा-पत्र

सरकार को नागरिकों के विरुद्ध काम करने से रोकता है और उसका उल्लंघन हो जाने पर उपचार सुनिश्चित करता है। संविधान नागरिकों के अधिकारों को किससे संरक्षित करता है? नागरिक के अधिकारों को किसी अन्य व्यक्ति या निजी संगठन से खतरा हो सकता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को सरकार द्वारा सुरक्षा प्रदान किए जाने की आवश्यकता होती है। यह जरूरी है कि सरकार व्यक्ति के अधिकारों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हो। इसके अतिरिक्त सरकार के विभिन्न अंग (विधायिका, कार्यपालिका, नौकरशाही या न्यायपालिका) अपने कार्यों के संपादन में व्यक्ति के अधिकारों का हनन कर सकते हैं।

(a) भारत के संविधान द्वारा नागरिकों को कितने मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं?

(b) मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होने की स्थिति में किस मौलिक अधिकार के अन्तर्गत उनकी रक्षा की गई है?

(c) नागरिक के अधिकारों को किससे संरक्षित किया गया है?

18. Read the following passage and answer the questions :

Positive liberty recognises that one can be free only in society (not outside it) and hence tries to make that society such that it enables the development of the individual whereas negative liberty is only concerned with the inviolable area of non-interference and not with the conditions in society, outside this area, as such. Of cours, negative liberty would like to expand this minimum area as much as is possible keeping in mind, however, the stability of society. Generally they both go together and support each other, but it can happen that tyrants justify their rule by invoking agruments of positive liberty.

(a) What is meant by positive liberty? 2

(b) What is the concept of negative liberty? 2

(c) According to the passage what negative statement are given against positive liberty? 1

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

सकारात्मक स्वतन्त्रता के पक्षधरों का मानना है कि व्यक्ति केवल समाज में ही स्वतन्त्र हो सकता है, समाज के बाहर नहीं और इसीलिए वह इस समाज को ऐसा बनाने का प्रयास करते हैं, जो व्यक्ति के विकास का रास्ता साफ करे। दूसरी ओर नकारात्मक स्वतन्त्रता का सरोकार अहस्तक्षेप के अनुलंघनीय क्षेत्र से है, इस क्षेत्र से बाहर समाज की स्थितियों से नहीं। नकारात्मक स्वतन्त्रता अहस्तक्षेप के इस छोटे क्षेत्र का अधिक से अधिक विस्तार करना चाहेगी। हालाँकि ऐसा करने में वह समाज के स्थायित्व के ध्यान में रखेगी। आमतौर पर दोनों तरह की स्वतंत्रताएँ साथ-साथ चलती हैं और एक-दूसरे का समर्थन करती हैं लेकिन ऐसा भी

हो सकता है कि निरंकुश शासक सकारात्मक स्वतंत्रता के तर्कों का सहारा लेकर अपने शासन को न्यायोचित सिद्ध करने की कोशिश करे।

(a) सकारात्मक स्वतन्त्रता से क्या अभिप्राय है?

(b) नकारात्मक स्वतन्त्रता की अवधारणा क्या है?

(c) गद्यांश के अनुसार, सकारात्मक स्वतन्त्रता के विपक्ष में क्या तर्क दिया गया है?

19. Read the following passage and answer the questions based on it :

Attainment of equality requires that all such restrictions or privileges should be brought to an end. Since many of these systems have a sanctions of law, equality requires that the government and the law of the land should stop protecting these systems of inequality. This what our constitution does. The Constitution prohibits discrimination on grounds of religion, race, casts, sex or place of birth. Our Constitution also abolished the practice of untouchability. Most modern Constitutions and democratic governments have formally accepted the principle of equality and incorporated it as identical treatment by law to all citizens without any regard to their caste, race and religion or gender.

(a) What does the government do to establish equality? 2

(b) What is meant by 'Equality before law'? 2

(c) Which article of Constitution abolishes untouchability? 1

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए —

समानता की प्राप्ति के लिए जरूरी है कि सभी निषेध या विशेषाधिकारों का अंत किया जाए। चूँकि ऐसी बहुत-सी व्यवस्थाओं को कानून का समर्थन प्राप्त है इसलिए यह जरूरी होगा कि सरकार और कानून असमानता की व्यवस्थाओं को संरक्षण देना बंद करें। हमारे संविधान ने भी यही किया है। संविधान धर्म, नस्ल, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध करता है। हमारा संविधान छुआछूत की प्रथा का भी उन्मूलन करता है। अधिकतर आधुनिक संविधान और लोकतान्त्रिक सरकारें औपचारिक रूप से समानता के सिद्धांत को स्वीकार कर चुकी हैं और इस सिद्धांत को जाति, नस्ल, धर्म या लिंग पर ध्यान दिए बिना 'सभी नागरिकों को कानून के एक समान बर्ताव' के रूप में समाहित किया।

(a) समानता की स्थापना के लिए सरकारों ने क्या किया है?

(b) 'कानून के समक्ष समानता' से क्या अभिप्राय है?

(c) संविधान के किस अनुच्छेद द्वारा छुआछूत की प्रथा का उन्मूलन किया गया है?

20. Study the cartoon given below carefully and answer the following questions :

(a) Who are the people standing in front of the stage ?

(b) Why are these people standing here and why are they looking very humble ?

(c) Which Parliamentary power does this cartoon reflect ?

उपरोक्त दिए गए कार्टून का अध्ययन कीजिए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(a) मंच के समक्ष खड़े हुए व्यक्ति कौन हैं ?

(b) ये व्यक्ति यहाँ क्यों खड़े हैं तथा इतने दीन-हीन (विनम्र) क्यों दिख रहे हैं ?

(c) कार्टून संसद की किस शक्ति को प्रदर्शित कर रहा है ?

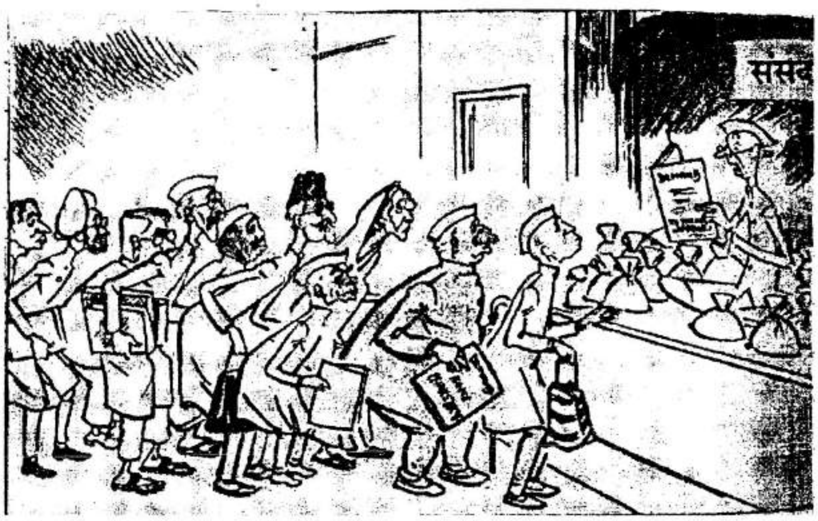

21. Study the picture given below and answer the following questions :

(a) What is meant by development ? 2

(b) What are the problems of developing countries ? 1

(c) Apart from electronic waste, which factors are responsible for damage of environment ? 2

दिए गए चित्र का ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(a) विकास से आप क्या समझते हैं ?

(b) विकासशील देशों की समस्याएँ क्या हैं?

(c) इलेक्ट्रॉनिक कचरे के अतिरिक्त किन कारणों से पर्यावरण को हानि होती है?

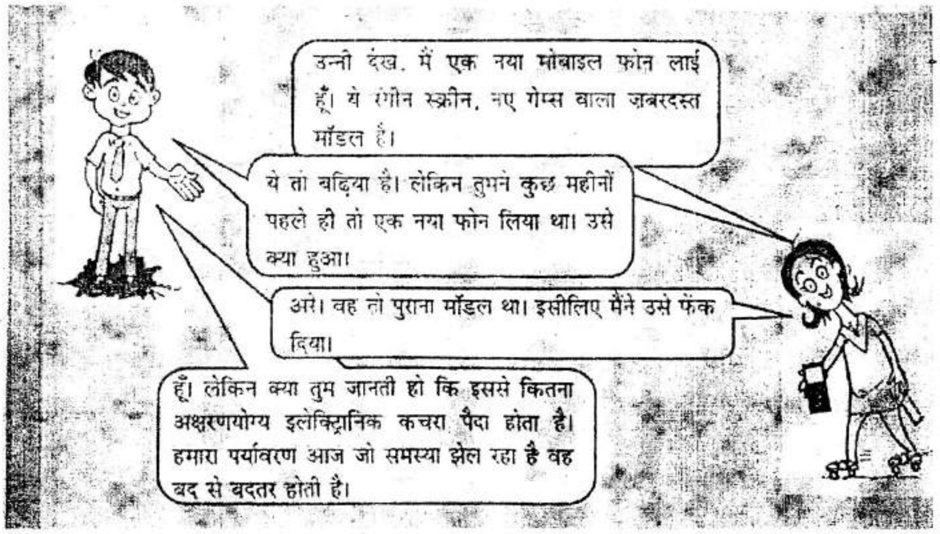

22. "India is a sovereign, secular, democratic republic." Explain. 6

"भारत प्रभुसत्ता सम्पन्न, धर्मनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक गणराज्य है।" व्याख्या कीजिए।

OR / अथवा

"The Constitution of India is a bag of borrowings." Discuss.

"भारतीय संविधान उधार लिए गए सिद्धांतों का समूह है।" व्याख्या कीजिए।

23. Distinguish between political executive and permanent executive. 6

राजनीतिक कार्यपालिका तथा स्थायी कार्यपालिका में अंतर लिखिए।

OR / अथवा

Discuss the functions and powers of the Prime Minister.

प्रधानमंत्री के कार्य तथा शक्तियों का वर्णन कीजिए।

24. Discuss the amending procedure of Indian Constitution. 6

भारतीय संविधान में संशोधन करने की विधियों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

OR / अथवा

"Indian Constitution is a blend of regidity and flexibility." Explain and discuss.

"भारतीय संविधान लचीला और कठोर दोनों है।" व्याख्या कीजिए।

25. Discuss the scope of Political Science. 6

राजनीति विज्ञान के विषय क्षेत्र का वर्णन कीजिए।

OR / अथवा

Discuss the importance of political theory.

राजनीतिक सिद्धांत के महत्व का वर्णन कीजिए।

26. Distinguish between a citizen and an alien. 6

नागरिक और विदेशी में क्या अन्तर है ?

OR / अथवा

How can citizenship be lost. Write in detail.

नागरिकता किस प्रकार खोई जा सकती है ? विस्तारपूर्वक बताइए।

27. Is India a secular state ? Give arguments in support of your answer. 6

क्या भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है ? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दीजिए।

OR / अथवा

Discuss the factors that establish the independence of judiciary.

न्यायपालिका की स्वतन्त्रता को स्थापित करने वाले तत्वों का वर्णन कीजिए।

No. of Printed Pages : 4

Marking Scheme

Common Annual School Examination, 2015-16

Subject : Political Science

Class : XI **[M. M. : 100**

1. हम आदेश देते हैं। 1
2. अमरीका के संविधान से। 1
3. युद्ध की अनुपस्थिति। 1
4. मत देने का अधिकार, चुनाव लड़ने का अधिकार। ½ + ½
5. United Nations Development Programme. 1

   संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम।
6. संसद के अधिवेशन के समय प्रतिदिन 'प्रश्नकाल' आता है जिसमें सांसदों द्वारा विभिन्न विषयों या मुद्दों पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सम्बन्धित मन्त्रियों को देने होते हैं। 2
7. प्रारंभिक, अपीलीय, सलाहकारी, मौलिक अधिकारों का रक्षक, न्यायिक पुर्ननिरीक्षण। (किन्हीं दो का विस्तार) 1 + 1
8. (i) भारतीय संविधान लिखित व कठोर है। 1 + 1

   (ii) केन्द्र व राज्य की शक्तियों का बटंवारा संविधान द्वारा किया गया है।

   (iii) सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना। (अथवा अन्य कोई भी विशेषता)
9. समय, परिस्थितियों व आवश्यकताओं के साथ परिवर्तनशील है, गतिशील है, या अन्य कोई तर्क। 2
10. (i) मौलिक अधिकार देश के संविधान में होते हैं प्राकृतिक अधिकार नहीं। 1 + 1

    (ii) मौलिक अधिकार न्याय संगत है जबकि प्राकृतिक अधिकार नहीं।

    (iii) प्राकृतिक अधिकार प्राकृतिक अवस्था में संभव हो सकते हैं, लेकिन मौलिक अधिकार राज्य में उपलब्ध होते हैं। (कोई दो)
11. मतदाता सूचियों को तैयार करना 4 × 1

    चुनाव के लिए तिथि निश्चित करना

    चुनाव का निरीक्षण, निर्देश तथा नियंत्रण

    चुनाव करवाना

    उप-चुनाव करवाना

    चुनाव चिन्ह प्रदान करना (अथवा अन्य कोई 4)

12. शक्तियों के बँटवारे में अधिक शक्तियाँ दी जाए जैसे पंजाब और तमिलनाडु सरकारों ने अधिक वित्तीय अधिकार। 4 × 1
प्रशासकीय विषयों पर केन्द्र का कम नियंत्रण।
हिन्दी भाषा को गैर हिन्दी भाषीय राज्यों में लागू न किया जाए।
अन्य भाषाओं व संस्कृति को प्रोत्साहन दिया जाए।
राज्यपालों को राज्यों की सलाह से नियुक्त किया जाए। (कोई चार)

13. स्थानीय स्तर की लोकतान्त्रिक संस्थाओं को संवैधानिक मान्यता। 4 × 1
तीन स्तरीय पंजायतीराज व्यवस्था
ग्राम सभा और ग्राम पंचायत की परिभाषा
पंचायतों की रचना
सदस्यों का चुनाव
पंचायती चुनाव राज्य चुनाव आयोग की निगरानी में
सीटों का आरक्षण (या अन्य कोई चार, संक्षिप्त विवरण)

14. प्लेटो के अनुसार जिसका जिसको प्राप्त है वह देना ही न्याय है। राज्य का उद्देश्य व्यक्ति का अधिकतम कल्याण है। और न्याय का अर्थ भी व्यक्ति को प्राप्य है वही देय है। वर्तमान में व्यक्ति को उसका प्राप्य देने का अर्थ लिया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रतिमा के विकास और लक्ष्य की पूर्ति के अवसर प्रांप्त हों। सभी के साथ समानता का व्यवहार व अवसरों की समानता हो। (विस्तृत विवरण) 4

15. राज्य के चार अनिवार्य तत्व हैं, राष्ट्र के अनेक तत्व हैं। 4 × 1
राष्ट्र के लिए एकता की भावना अनिवार्य, राज्य के लिए नहीं।
राज्य के लिए निश्चित भू-भाग आवश्यक, राज्य के लिए नहीं।
राज्य के लिए प्रभुसत्ता अनिवार्य, राष्ट्र के लिए नहीं। (या अन्य कोई 4)

16. विश्व शांति व सुरक्षा के लिए। 4 × 1
अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम करने के लिए।
युद्धों की भीषणता कम करने के लिए।
विश्व के आर्थिक विकास के लिए।
सैन्यीकरण व युद्धों को रोकने के लिए।
मानवजाति के कल्याण के लिए। (या अन्य कोई 4 संक्षिप्त विवरण सहित)

17. (i) 6 1
(ii) संविधानिक उपचारों का अधिकार। 1
(iii) व्यक्ति, निजी संगठनों तथा सरकार के विभिन्न अंगों से। 3

18. (i) अनैतिक व निरंकुश प्रतिबन्धों सहित स्वतन्त्रता। 2
(ii) सभी प्रतिबन्धों का अभाव ही नकारात्मक स्वतंत्रता है। 2
(iii) निरंकुश शासक सकारात्मक स्वतन्त्रता के तर्कों का सहारा लेकर अपने शासन को न्यायोचित सिद्ध करने का प्रयास कर सकता है। (i, ii - संक्षिप्त विवरण सहित)

19. (i) बिना किसी धर्म, जाति, लिंग व जन्मस्थान के भेद के भेदभाव का निषेध, छुआछूत का उन्मूलन, कानून के समक्ष समानता की स्थापना।

(ii) कानून के समक्ष सभी समान हैं, कोई की कानून से ऊपर या विशेष नहीं है। राज्य भी सभी के लिए एकसा कानून बनाएगा बिना किसी भेदभाव, सभी पर साधारण न्यायालय में मुकदमा चलाया जाएगा, व्यक्ति चाहे कोई भी हो।

(iii) अनुच्छेद 17 (समानता के मौलिक अधिकार के अन्तर्गत)

20. (i) विभिन्न मन्त्रालयों के मन्त्रिगण। 1

(ii) मन्त्रालयों के लिए धन आबंटित कराने के लिए, संसद से स्वीकृति के पश्चात ही धन आबंटित हो सकता तथा ये कार्य विनम्रता से ही संभव हैं। 2

(iii) संसद की कराधान तथा धन के प्रयोग पर नियन्त्रण की शक्ति। 2

21. (i) विकास एक निरंतर गतिशील प्रक्रिया है जो जीवन के हर क्षेत्र में उच्चतर स्थिति को प्राप्त करने का लक्ष्य रखती है। 2

(ii) औद्योगिक विकास, गरीबी, न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति इत्यादि (या अन्य कोई) 1

(iii) भूमण्डल का ताप बढ़ना, कृषि योग्य भूमि कम होना, जल प्रदूषण, ग्रीन हाऊस गैसों का उत्सर्जन। (या अन्य कोई) 2

22. प्रभुसत्ता सम्पन्न, धर्म निरपेक्ष, लोकतन्त्रात्मक तथा गणराज्य शब्दों की संक्षिप्त व्याख्या। 6

अथवा

संविधान निर्माताओं ने खुले दिल से दूसरे देशों के संविधान के गुणों को संचित किया इसी कारण आलोचकों द्वारा संविधान के बारे में ऐसा कहा गया है पर वास्तविकता यह है कि भारतीय संविधान के निर्माण पर अनेक तत्वों का योगदान रहा है।

ब्रिटिश संविधान—शक्तिशाली लोकसभा, राष्ट्रपति मुखिया संसदीय शासन प्रणाली, एकीकृत ढाचा।

अमरीकी संविधान—मौलिक अधिकार, संविधान की सर्वोच्चता, न्यायिक पुर्ननिरीक्षण, संघात्मक ढांचा।

आयरलैंड, कनैडियन, जर्मन, आस्ट्रेलिया के संविधानों का प्रभाव बताते हुए छात्र भारतीय संविधान की मूल-भूत विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए निष्कर्षत: उसे भारतीय स्थितियों के अनुकूल प्रस्तुत करेंगे।

23. नियुक्ति सम्बन्धी, योग्यता, कार्यकाल, उत्तरदायित्व, राजनीतिक सम्बंधों, भूमिकाओं तथा परस्पर सम्बन्धों से सम्बन्धित। 6

(संक्षिप्त व्याख्या सहित)

अथवा

मन्त्रिमण्डल के नेता के रूप में—मन्त्रिपरिषद का निर्माण। विभागों का विभाजन मन्त्रिमण्डल का सभापति, मन्त्रियों का हटाना। समन्वयकारी रूप, राष्ट्रपति का मुख्य सलाहकार, सरकार का मुखिया, राष्ट्रपति तथा मन्त्रिमण्डल में महत्वपूर्ण कड़ी, सरकार का प्रमुख प्रवक्ता, संसद का नेता, नियुक्तियाँ, विदेशी नीतियों का निर्माता, संकटकालीन शक्तियाँ। (संक्षिप्त वर्णन सहित)

24. अनुच्छेद 308 में संशोधन की दो विधियों का वर्णन है। परन्तु ये तीन विधियों से होता है। 6

(i) संसद द्वारा साधारण बहुमत से नए राज्यों का निर्माण, राज्य की सीमाओं में परिवर्तन, नागरिकता की प्राप्ति समाप्ति, सर्वोच्च न्यायलय का क्षेत्राधिकार बढ़ाना।

(ii) संसद द्वारा दो-तिहाई बहुमत से संशोधन है दोनों सदनों में कुल संख्या के स्पष्ट बहुमत तथा उपस्थित व मत देने वाले सदस्यों के दो तिहाई बहुमत के पास होने के बाद राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद संभव।

(iii) संसद के विशेष बहुमत तथा राज्य विधान पालिकाओं के अनुमोदन द्वारा संशोधन—इसमें राष्ट्रपति का चुनाव, और चुनाव विधि, केन्द्र व राज्यो के वैधानिक सम्बन्ध, संघीय सरकार व राज्य सरकारों की कार्य-पालिका सम्बन्धी शक्तियों की सीमा इत्यादि। (विस्तारपूर्वक वर्णन)

अथवा

इसके कुछ भागों में सरलता, कुछ में कठिन व कुछ भागों में कठिनतम तरीके से ही बदलाव संभव है। इसी लिये ऐसा कहा गया है। छात्र इस में संशोधन विधियों की व्याख्या तथा संशोधन के विषय क्षेत्र सहित विस्तारपूर्वक लिखेंगे।

25. राज्य का अध्ययन, सरकार का अध्ययन, शासन प्रबन्ध का अध्ययन, समुदायों तथा संस्थानों का राजनीतिक विचारधाराओं, राजनीतिक संस्कृति, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति व संगठनों तथा सम्बन्धों, नेतृत्व का, राजनीतिक दलों, सत्ता व शक्ति का अध्ययन। (संक्षिप्त किन्हीं छ: का वर्णन)

अथवा

राजनीतिक वास्तविकता को समझने में सहायक, ज्ञान का सरलीकरण करना, व्यावहारिक दक्षताओं का विकास, समस्याएं सुलझाने में सहायक, शासन प्रणालियों को वैधता प्रदान करना, बुद्धि का विस्तार, राजनीतिक आन्दोलन की प्रेरणा, सामाजिक परिवर्तन को समझने व व्याख्या के लिए सहायक। (किन्ही छ: का संक्षिप्त परिचय) 1 × 6

26. (1) नागरिक राज्य का होता है विदेशी राज्य का सदस्य नहीं 6 × 1

(2) राज्य भक्ति के आधार पर

(3) अधिकारों के आधार पर

(4) सैनिक सेवा के आधार पर

(5) न्यायालयों के अधिकार क्षेत्र के आधार पर

(6) प्रकारों के आधार पर (संक्षिप्त अर्थ व विस्तार)

अथवा

लम्बे समय तक अनुपस्थिति, विवाह, विदेश में सरकारी नौकरी, स्वेच्छा से नागरिकता का त्याग, पराजय द्वारा, सेना से भाग जाने पर, देशद्रोह, गोद लेना, विदेश सरकार से सम्मान प्राप्त करना, विदेश में संपत्ति खरीदना। (कोई छ: अर्थसहित)

27. स्वतन्त्रता के पश्चात भारत को संविधान में धर्मनिरपेक्ष घोषित किया गया है। इसकी विशेषताएँ प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्ष शब्द का इस्तेमाल, राज्य का कोई धर्म नहीं, राज्य की दृष्टि में सब धर्म समान, धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार, कानून के समक्ष समानता, धार्मिक अल्पसंख्यकों को मौलिक अधिकार, सरकारी शिक्षा संस्थानों में धार्मिक शिक्षा की मनाही, छुआछूत की समाप्ति इत्यादि इसे सच्चा धर्मनिरपेक्ष राज्य बनाती है। (उपरोक्त बिन्दुओं की संक्षिप्त व्याख्या) 6

अथवा

(1) न्यायाधीशों की नियुक्ति कार्यपालिका द्वारा 6

(2) नौकरी की सुरक्षा

(3) लम्बा कार्यकाल

(4) अच्छा वेतन तथा पेंशन

(5) सेवा की शर्तों में हानिकारक परिवर्तन न होना

(6) न्यायाधीशों की उच्च योग्यताएँ

(7) रिटायर होने के पश्चात् वकालत की मनाही

(8) न्यायपालिका का कार्यपालिका से पृथक्करण। (कोई छ:)

सीनियर स्कूल सर्टीफिकेट परीक्षा, मार्च – 2016
मूल्यांकन योजना–राजनीति विज्ञान
अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिन्दु
59/1/1

प्र0 1. उ0	**बर्लिन की दीवार से संबंधित निम्नलिखित कथनों में से कौन सा एक सही नहीं है ?** a. यह पूँजीपति तथा साम्यवादी विश्व के बीच विभाजन का प्रतीक थी। b. इसका निर्माण द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत पश्चात् किया गया। c. लोगों द्वारा इसे 9 नवम्बर, 1989 को तोड़ दिया गया। d. यह जर्मनी के दोनों भागों के एकीकरण का प्रतीक था। यह जर्मनी के दोनों भागों के एकीकरण का प्रतीक था।	1
प्र0 2. उ0	**आसियान (ए.एस.ई.ए.एन.) की स्थापना क्यों की गई ?** **आसियान (ए.एस.ई.ए.एन.) की स्थापना के कारण :** **(i)** आर्थिक वृद्धि को तीव्र करने के लिए। **(ii)** सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए। **(iii)**क्षेत्रीय शांति तथा स्थायित्व को बढ़ावा देने के लिए।	1
प्र0 3. उ0	**दोनों में से अधिक अनिवार्य कौन सा है और क्यों – बड़े बाँधों का निर्माण अथवा इसका विरोध करने वाले पर्यावरण संबंधी आंदोलन ?** परीक्षार्थी दिए हुए विकल्पों में से किसी एक के पक्ष में लिख सकता है – परन्तु उसके उत्तर के साथ तर्क होना चाहिए। जैसे – • विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिए बांधों का निर्माण आवश्यक है अथवा • बांधों का निर्माण लोगों के विस्थापन और पर्यावरण का निम्नीकरण करता है। अतः इसके विरूद्ध आंदोलन आवश्यक है।	1
प्र0 4. उ0	**गुट–निरपेक्षता की रणनीति के माध्यम से जवाहरलाल नेहरू किन दो लक्ष्यों को प्राप्त कर लेना चाहते थे ?** **(i)** कठिनाई से प्राप्त संप्रभुता की रक्षा । **(ii)** क्षेत्रीय अखण्डता और एकता को बनाए रखना। (iii) तीव्र आर्थिक विकास को बढ़ावा देना। (कोई दो)	2x½=1
प्र0 5. उ0	**चिपको आंदोलन के सर्वाधिक अनूठे पहलू को उजागर कीजिए।** महिलाओं की सक्रिय भागीदारी अथवा अन्य कोई उपयुक्त उत्तर	1
प्र0 6. उ0	**शीत युद्ध की किन्हीं दो प्रमुख सैन्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।** **(i)** दो महाशक्तियों के नेतृत्व में दो सैन्य गुटों का होना। **(ii)** महाशक्तियां युद्ध लड़ने के खतरों अर्थात महाविनाश से परिचित थीं । अथवा अन्य कोई उपयुक्त उत्तर	2x1=2

प्र0 7.	**"स्वतंत्र भारत के नेता राजनीति को समस्या के रूप में नहीं देखते थे; वे राजनीति को समस्या के समाधान का उपाय मानते थे।" आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं ?**	
उ0	परीक्षार्थी को उत्तर के पक्ष में तर्क / तथ्य / उदाहरण देना चाहिए। उदाहरण के लिए : स्वतंत्रता आंदोलन के अधिकांश नेताओं ने राजनीति को चुना और लोगों की समस्याएं हल करने के लिए सत्ता में आने का प्रयास किया। अथवा अन्य कोई उपयुक्त उत्तर	2
प्र0 8.	**निम्नलिखित का सही मिलान कीजिए :** **'A'** — **'B'** **(a)राजनीति से प्रेरित विवादास्पद नियुक्ति** — **(i) चारू मजूमदार** **(b)1947 में रेलवे की हड़ताल का नेतृत्व किया** — **(ii) जय प्रकाश नारायण** **(c)नेहरू मंत्रिमंडल में शामिल होन से इंकार** — **(iii) जार्ज फर्नांडिस** **(d)पुलिस हिरासत में मौत** — **(iv) न्यायमूर्ति ए. एन. रे.**	
उ0	(a) (iv) न्यायमूर्ति ए. एन. रे. (b) (iii) जार्ज फर्नांडिस (c) (ii) जय प्रकाश नारायण (d) (i) चारू मजूमदार	4x½=2
प्र0 9.	**हालांकि 1950 के दशक में, देश के शेष हिस्सों को भाषायी आधार पर पुनर्गठित किया गया था, लेकिन पंजाब को 1966 तक प्रतीक्षा क्यों करनी पड़ी ?**	
उ0	'पंजाबी सूबा' आंदोलन का नेतृत्व कमजोर था और इस आंदोलन को गैर सिक्खों और सिक्खों में भी कुछ जातियों का समर्थन प्राप्त नहीं था। पंजाब का यह आंदोलन अन्य राज्यों में हुए आंदोलनों जैसा मजबूत नहीं था।	2
प्र0 10.	**पूर्वोत्तर भारत का पुनर्गठन कैसे और कब तक पूरा किया गया ?**	
उ0	उत्तर-पूर्व राज्यों का पुनर्गठन लगभग 1972 में पूरा हो गया था, जैसे 1972 में आसाम में से एक क्षेत्र ले कर मेघालय बनाया गया। मणिपुर और त्रिपूरा भी इसी वर्ष अलग राज्य के रूप में उभरे। परन्तु अरूणाचल प्रदेश 1987 में बना जबकि नागालैण्ड 1963 में ही बन गया था।	2
प्र0 11.	**चीन की नई आर्थिक नीति ने किन चार तरीकों से चीन की अर्थव्यवस्था को लाभ पहुँचाया ?**	
उ0	**(i)** जड़ता को समाप्त करके **(ii)** कृषि के निजीकरण से **(iii)**व्यापार के नए नियम और नए विशेष आर्थिक क्षेत्रों के निर्माण द्वारा **(iv)**ग्रामीण अर्थव्यवस्था में निजी बचत का परिमाण बढ़ने की तीव्र वृद्धि दर से	4x1=4

प्र0 12.	एमनेस्टी इंटरनेशनल क्या है ? इसके मुख्य कार्य लिखिए।	
उ0	• **एमनेस्टी इंटरनेशनल** एक गैर सरकारी स्वंयसेवी संगठन है। • कार्य : **(i)** यह मानवाधिकारों से जुड़ी रिर्पोट तैयार और प्रकाशित करता है। **(ii)** यह सरकारी अधिकारियों के दुर्व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित करता है। **(iii)** यह मानवाधिकारों की रक्षा के लिए काम करता है। **(iv)** अन्य कोई प्रासंगिक बिन्दु।	1+3=4
प्र0 13.	**वैश्विक संपदा से क्या अभिप्राय है ? ऐसा क्यों कहा जाता है कि वैश्विक संपदा की सुरक्षा के सवाल पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आसान नहीं है ?**	
उ0	• विश्व की सांझी सम्पदा उन संसाधनों को कहते है जिन पर किसी एक का नहीं बल्कि पूरे अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का अधिकार होता है। जैसे पृथ्वी का वायुमंडल, अंटार्कटिका, समुद्री सतह ओर बाहरी अंतरिक्ष। • ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि : **(i)** एक सर्व–सम्मत र्प्यावरणीय एजेंडे पर सहमति कायम करना मुश्किल होता है। **(ii)** बाहरी अंतरिक्ष के इतिहास से भी पता चलता है कि इस क्षेत्र के प्रबन्धन पर उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों के बीच मौजूद असमानता का असर पड़ा है। **(iii)** बाहरी अंतरिक्ष में हो रहे दोहन कार्यों का लाभ न तो मौजूदा पीढ़ी में सबके लिए बराबर है और न आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए। (कोई दो कारण)	2+2=4
प्र0 14.	**भारत की काँग्रेस पार्टी का प्रभुत्व अन्य देशों में एकदलीय प्रभुत्व के उदाहरणों से किस प्रकार भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए।**	
उ0	**यह निम्नलिखित कारणों से भिन्न है :** **(i)** भारत में एक पार्टी का प्रभुत्व लोकतंत्र की कीमत पर कायम नहीं हुआ है। **(ii)** भारत में बहुदलीय व्यवस्था प्रचलित थी जबकि चीन और रूस जैसे देशों में एक पार्टी का प्रभुत्व एकल पार्टी व्यवस्था के कारण था। **(iii)** भारत में म्यांमार और बेलारूस की तरह एक पार्टी का प्रभुत्व सैन्य दखलान्दजी के कारण नहीं था। **(iv)** भारत में एक पार्टी का प्रभुत्व उसकी अपनी लोकप्रियता के कारण था।	4
प्र0 15.	**भारत की मिश्रित अर्थव्यवस्था के मॉडल के मुख्य परिणामों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।**	
उ0	**भारत की मिश्रित अर्थव्यवस्था के मॉडल के मुख्य परिणाम :** **(i)** कृषि, व्यापार और उद्योगों का अधिकांश भाग निजी हाथों में छोड़ दिया गया। **(ii)** राज्य द्वारा नियंत्रित मुख्य भारी उद्योगों ने औद्योगिक ढांचे, नियमित व्यापार और कृषि में महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप किया।	

	इससे निजी और सार्वजनिक, दोनों क्षेत्रों में वृद्धि हुई और इसने भावी विकास को आधार किया।	4
प्र0 16.	**1977 के चुनावों को जनता पार्टी ने किस प्रकार 1975 में लगाए गए आपातकाल के ऊपर जनमत संग्रह का रूप दे दिया ? व्याख्या कीजिए।**	
उ0	**जनता पार्टी ने 1977 के चुनावों को निम्नलिखित ढंग से जनमत संग्रह में बदला :** **(i)** सभी विरोधी दलों ने कांग्रेस के विरूद्ध आपस में हाथ मिलाकर जनता के सामने दोनों में से किसी एक को चुनने का विकल्प रखा। **(ii)** जनता पार्टी ने लोकतंत्र की वकालत की तथा आपातकाल को लोकतंत्र की हत्या बताया। **(iii)** जयप्रकाश नारायण विपक्ष का चेहरा बन गया और जे. पी. एंव इन्दिरा के बीच एक को चुनने का विकल्प बन गया। **(iv)** जनता पार्टी ने लोगों को लोकतंत्र और तानाशाही के बीच किसी एक कों चुनने का आह्वान किया।	4
प्र0 17.	**दिए गए अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:–** हर देश को पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की ओर पूरी तरह मुड़ना था। इसका मतलब था कि इस दौर की हर संरचना से पूरी तरह निजात पाना। 'शॉक थेरेपी' की सर्वोपरि मान्यता थी कि मिल्कियत का सबसे प्रभावी रूप निजी स्वामित्व होगा। इसके अंतर्गत राज्य की संपदा के निजीकरण और व्यावसायिक स्वामित्व के ढाँचे को तुरंत अपनाने की बात शामिल थी। 'सामूहिक फार्म' को 'निजी फार्म' में बदला गया और पूँजीवादी पद्धति से खेती शुरू हुई। इस संक्रमण में किसी भी वैकल्पिक व्यवस्था या 'तीसरे रूख' को मंजूर नहीं किया गया। **i. ऐसे दो देशों के नाम लिखिए जिन्हें अपनी व्यवस्था में पूरी तरह से परिवर्तन लाना था।** **ii. सामूहिक फार्मों को निजी फार्मों में क्यों बदला जाना था ?** **iii. क्योंकि किसी तीसरे रास्ते की कोई सम्भावना नहीं थी, तो अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए पहले दो रास्ते कौन से थे ?**	
उ0	**(i)** आर्मीनिया, जार्जिया, उज़्बेकिस्तान अथवा सोवियत संघ के विघटन के बाद बना कोई अन्य देश। (कोई दो देश) **(ii)** राज्य नियन्त्रित अर्थव्यवस्था की समाप्ति एंव निजीकरण और उदारीकरण के लागू होने के कारण। **(iii)** a) राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था (समाजवाद) b) पूंजीवाद	1+2+2=5
प्र0 18.	**दिए गए अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:** सबसे सीधा–सरल विचार यह है कि वैश्वीकरण के कारण राज्य की क्षमता यानी सरकारों को जो करना उसे करने की ताकत में कमी आती है। पूरी दुनिया में कल्याणकारी राज्य की धारणा अब पुरानी पड़ गई है और इसकी जगह न्यूनतम हस्तक्षेपकारी राज्य ने ले ली है। राज्य अब कुछेक मुख्य कामों तक ही अपने को सीमित रखता है, जैसे कानून और व्यवस्था को बनाए रखना तथा अपने नागरिकों की सुरक्षा करना। इस तरह के राज्य ने अपने को पहले के कई ऐसे लोक–कल्याणकारी	

	कामों से खींच लिया है जिनका लक्ष्य आर्थिक और सामाजिक–कल्याण होता था। लोक–कल्याणकारी राज्य की जगह अब बाज़ार आर्थिक और सामाजिक प्राथमिकताओं का प्रमुख निर्धारक है। **i. 'राज्य की क्षमता में कमी आना' एक उदाहरण द्वारा इन शब्दों का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।** **ii. 'कल्याणकारी राज्य' की धारणा का स्थान 'न्यूनतम हस्तक्षेपकारी राज्य' क्यों ले रहा है ?** **iii. बाज़ार किस प्रकार सामाजिक प्राथमिकताओं का प्रमुख निर्धारक बन गया है ?**	
उ0	**(i)** वैश्वीकरण के कारण राज्य की क्षमता यानि सरकारों को जो काम करना है, उसे करने की ताकत में कमी आती है। आजकल विभिन्न देशों की सरकारों को पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय नियमों का पालन करना पड़ता है। **(ii)** निजीकरण के कारण अधिकांश आर्थिक गतिविधियां निजी क्षेत्र में आ गई हैं। राज्यों की भूमिका आर्थिक विकास में सहायता करना, कानून व्यवस्था को बनाए रखना तथा नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करना है। **(iii)** बहुराष्ट्रीय कंपनियां आर्थिक वृद्धि के क्षेत्र में आ गई हैं। उन्हें अपने उत्पाद बेचने के लिए बाजारों की तलाश है। अतः अब बाजार सामाजिक प्राथमिकताओं के निर्धारक बन गए हैं।	2+2+1=5
प्र0 19.	**दिए गए अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः** भारत ने जब अपना पहला परमाणु परीक्षण किया तो इसे उसने शांतिपूर्ण परीक्षण करार दिया। भारत का कहना था कि वह अणुशक्ति को सिर्फ शांतिपूर्ण उद्देश्यों में इस्तेमाल करने की अपनी नीति के प्रति दृढ़ संकल्प है। जिस वक्त परमाणु परीक्षण किया गया था वह दौर घरेलू राजनीति के लिहाज से बड़ा कठिन था। 1973 में अरब–इज़रायल युद्ध हुआ था। इसके बाद पूरे विश्व में तेल के लिए हाहाकार मचा हुआ था। अरब राष्ट्रों ने तेल के दामों में भारी वृद्धि कर दी थी। भारत इस वजह से आर्थिक समस्याओं से घिर गया। भारत में मुद्रास्फीति बहुत ज्यादा बढ़ गई। **i. भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण कब किया और क्यों ?** **ii. भारत ने जब परमाणु परीक्षण किया, उस काल को भारत की घरेलू राजनीति का, सबसे कठिन काल क्यों समझा जाता है ?** **iii. 1970 के दशक के प्रारंभ में घटित किस अंतर्राष्ट्रीय घटना के कारण भारत में मँहगाई बहुत बढ़ गयी थी ?**	
उ0	**(i) मई 1974 में –** आणविक ऊर्जा को शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए, प्रयोग करने के लिए। **(ii)** अरब – इज़रायल युद्ध के कारण कीमतें बढ़ रही थीं। अतः भारत आर्थिक मोर्चे पर संकटों का मुकाबला कर रहा था। **(iii)** 1973 का अरब – इज़रायल युद्ध।	2+2+1=5
प्र0 20.	**नीचे दिए गए कार्टून का ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	

	i. दिए गए कार्टून से किन्हीं चार राष्ट्रीय नेताओं की पहचान कीजिए तथा प्रत्येक की क्रम संख्या भी लिखिए। ii. भारत के प्रधानमंत्री के रूप में नेता न. 2 के कार्यकाल का सबसे विवादास्पद मुद्दा क्या था ? iii. 1989 के लोकसभा निर्वाचन में, क्रम संख्या एक के नेतृत्व वाले दल की स्थिति क्या थी ?	
उ0	i. 1 राजीव गांधी 2 वी. पी. सिंह 3 लाल कृष्ण आडवानी 4 देवी लाल 5 ज्योति बसु 6 चन्द्र शेखर 7 एन. टी. रामा राव 8 पी. के. मोहन्तो 9 के. करूणानिधि (कोई चार) ii. मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करना। iii. 1989 में पार्टी बुरी तरह प्रभावित हुई तथा स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं कर सकी। (415, सांसदों से घट कर 189 पर पहुँच गइ थी) नोटः– निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 20 के स्थान पर हैं। 20.1 1984 के लोकसभा निर्वाचन में किस दल ने सर्वाधिक सीटें जीतीं और किसके नेतृत्व में ? 20.2 1990 में राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार ने कौन सा सर्वाधिक विवादास्पद निर्णय लिया ? 20.3 किस प्रधानमंत्री ने नए आर्थिक सुधारों की शुरूआत की तथा इसका क्या परिणाम निकला ?	2+1+2=5
उ0	20.1 (i) कांग्रेस पार्टी (ii) राजीव गांधी के नेतृत्व में 20.2 1990 में मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करना। 20.3 नए आर्थिक सुधार राजीव गांधी द्वारा लागू किए गए। इसने आर्थिक नीति की दिशा को यकायक बदल दिया।	2+1+2=5
प्र0 21.	**दिए गए दक्षिण एशिया के रेखा–मानचित्र में, पाँच देशों को A, B , C , D तथा E द्वारा चिह्नित किया गया है। नीचे दी गई जानकारी के आधार पर इनकी पहचान कीजिए और उत्तरपुस्तिका में उनके सही कम संख्या तथा संबंधित अक्षर, नीचे दी गई तालिका के रूप में लिखिए।**	

प्रयोग की गई जानकारी की क्रम संख्या	संबंधित अक्षर	देश का नाम
(i) से (v) तक		

i. एक महत्त्वपूर्ण देश परंतु उसे दक्षिण ऐशिया का भाग नहीं समझा जाता।
ii. इस देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था सफल रही है।

iii. इस देश में सैनिक तथा असैनिक दोनों प्रकार के शासक रहे हैं।

iv. वह देश जहाँ संवैधानिक राजतंत्र रहा है।

v. एक द्वीपीय राष्ट्र जो 1968 तक एक सल्तनत था।

उ0

प्रयोग की गई जानकारी की क्रम संख्या	संबंधित अक्षर	देश का नाम
(i)	B	चीन
(ii)	D	श्रीलंका
(iii)	E	बांग्लादेश
(iv)	A	नेपाल
(v)	C	मालदीव

5x1=5

नोट:– निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 21 के स्थान पर है।

21.1 दक्षिण एशिया में प्रायः कौन–कौन से देश शामिल किए जाते हैं ?

21.2 दक्षिण एशिया के कौन से दो देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था सफलतापूर्वक चल रही है।

21.3 दक्षेस (SAARC) तथा साफ्टा (SAFTA) के विस्तृत रूप लिखिए।

उ0

21.1 बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, अफगानिस्तान

नोट: यदि परीक्षार्थी अफगानिस्तान नहीं लिखता है तब भी उसे अंक दिए जाएं।

21.2 श्रीलंका और भारत

21.3 **दक्षेस (SAARC)** दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहकारी संगठन

साफ्टा (SAFTA) दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार–क्षेत्र समझौता

2+1+2=5

प्र0 22. **सोवियत संघ व्यवस्था की किन्हीं तीन सकारात्मक तथा तीन नकारात्मक विषेषताओं को उजागर कीजिए।**

उ0

सकारात्मक विशेषताएं :

(i) सोवियत व्यवस्था अमेरीका को छोड़कर शेष पूरे विश्व से कहीं अधिक विकसित थी।

(ii) सभी नागरिकों के लिए एक न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित था।

(iii) सरकार द्वारा बुनियादी ज़रूरत की चीज़ों जैसे स्वास्थ्य सुविधा, शिक्षा, बच्चों की देखभाल तथा लोक कल्याण की अन्य चीज़ों को रियायती दर पर उपलब्ध करवाना।

(iv) बेरोजगारी का न होना।

अन्य कोई सकारात्मक विशेषता

(कोई तीन विशेषताएं)

नकारात्मक विशेषताएं :

(i) व्यवस्था सत्तावादी थी और नौकरशाही का कड़ा शिकंजा था।

(ii) लोकतंत्र की कमी और अनेक क्षेत्रों में स्वतंत्रता का न होना।

(iii) केवल एक दलीय व्यवस्था का होना।

(iv) पार्टी द्वारा लोगों की भावनाओं और अपेक्षाओं की अवहेलना।

अन्य कोई नकारात्मक विशेषता

(कोई तीन विशेषताएं) 3+3=6

	अथवा **यह कहना कहाँ तक उचित है कि शीत युद्ध के दौरान, अंतर्राष्ट्रीय गठबंधनों का निर्धारण महाशक्तियों की जरूरतों और छोटे देशों की लाभ हानि के गणित से होता था ? व्याख्या कीजिए।**	
उ0	यह कथन महाशक्तियों तथा उनके गठबंधन के बारे में बिल्कुल ठीक है। **(i)** महाशक्तियों ने अपनी सैन्य शक्ति का प्रयोग करके देशों को अपने पक्ष में किया : **(ii)** सोवियत संघ ने अपने गुट (गठबंधन) के देशों की बड़ी सेनाओं के बल पर पूर्वी यूरोप में अपने प्रभाव का प्रयोग किया। **(iii)** दूसरी ओर अमरीका ने सीटो और सेन्टो जैसे गठबंधन बनाए तथा उत्तरी वियतनाम, उत्तरी कोरिया और इराक के साथ सोवियत संघ और चीन ने अपने संबंध मजबूत किए। **(iv)** महत्त्वपूर्ण संसाधनों की जरूरत को पूरा करने के लिए गठबंधन बनाए गए। **(v)** महाशक्तियों को अपने हथियारों के संचालन के लिए भू–क्षेत्रों की आवश्यकता थी। **(vi)** आर्थिक मदद एक अन्य मुद्दा था। उत्तर के पक्ष में अन्य कोई बिन्दु	6x1=6
प्र0 23.	**संयुक्त राज्य अमरीका के साथ भारत के सम्बन्ध किस प्रकार के होने चाहिए। इसके बारे में, भारत के अंदर तीन विभिन्न दृष्टिकोणों का विश्लेषण कीजिए।**	
उ0	**(i)** भारत को अमरीका से अपनी दूरी बनाए रखनी चाहिए और उसे अपनी व्यापक राष्ट्रीय शक्ति पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। **(ii)** भारत को अमरीकी वर्चस्व और आपसी समझ का यथा संभव अपने हित में लाभ उठाना चाहिए। अमरीका का विरोध करना व्यर्थ होगा और अंततः भारत को क्षति पहुंचेगी। **(iii)** भारत को विकासशील देशों का गठबंधन बनाने में नेतृत्व देना चाहिए। अन्य कोई दृष्टिकोण (कोई तीन व्याख्या सहित)	3x2=6
	अथवा **ऐसे किन्हीं तीन प्रमुख कारकों का मूल्यांकन कीजिए जो यूरोपीय संघ को आर्थिक सहयोग वाली संस्था से बदल कर, एक राजनैतिक रूप देने के लिए उत्तरदायी हैं।**	
उ0	**(i)** 1949 में स्थापित यूरोपीय परिषद राजनीतिक सहयोग की दिशा में एक कदम बढ़ाना था। **(ii)** 1957 में यूरोपीय इकनामिक कम्युनिटी के गठन से राजनीतिक चर्चा शुरू हुई जिससे यूरोपीय पार्लियामेण्ट का गठन हुआ। **(iii)** सोवियत संगठन के विघटन ने यूरोप में इस प्रक्रिया को तेजी प्रदान की और 1992 में इस प्रक्रिया की परिणति यूरोपीय संघ के रूप में हुई। **(iv)** इसने अपना झंडा, स्थापना दिवस, गान और अलग मुद्रा को अपनाया। **(v)** विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के कारण इसका अपना राजनीतिक प्रभाव भी है। (कोई तीन व्याख्या सहित)	3x2=6
प्र0 24.	**ऐसे किन्हीं तीन अंतर्राष्ट्रीय चुनौतीपूर्ण मसलों का वर्णन कीजिए जिनसे तभी निपटा जा सकता है जब सभी देश साथ मिलकर कार्य करें।**	

उ0	**अंतर्राष्ट्रीय चुनौतीपूर्ण मुद्दे :** (i) आतंकवाद (ii) ग्लोबल वार्मिंग / पर्यावरणीय निम्नीकरण (iii) पीने के पानी की कमी (iv) वैश्विक गरीबी (v) संक्रामक रोग अन्य कोई सही मुद्दा (कोई तीन का वर्णन)	3x2=6
	अथवा **बाह्य सुरक्षा की पारंपरिक धारणा से क्या अभिप्राय है ? इस प्राकर की सुरक्षा के किन्हीं दो तत्त्वों का वर्णन कीजिए।**	
उ0	• <u>बाह्य सुरक्षा की पारंपरिक धारणा :</u> किसी देश को सबसे बड़ा खतरा सैन्य खतरा माना जाता है। • <u>बाह्य सुरक्षा के तत्व :</u> (i) बाहरी आक्रमण के विरूद्ध अपनी रक्षा करना अथवा उसे रोकना। (ii) युद्ध को टालना। (iii) शक्ति संतुलन / गठबंधन बनाना (कोई दो व्याख्या सहित)	2+4=6
प्र0 25.	**"क्षेत्रीय माँगों को मानना और भाषा के आधार पर नए राज्यों का गठन करना, एक लोकतांत्रिक कदम के रूप में देखा गया।" इस कथन को न्यायोचित सिद्ध करने के लिए कोई तीन उपयुक्त तर्क दीजिए।**	
उ0	**<u>कथन के समर्थन में तर्क :</u>** (i) 60 वर्षों में भाषायी आधार पर बनने वाले राज्यों ने लोकतांत्रिक राजनीति की प्रकृति को सकारात्मक और रचनात्मक बना दिया है। (ii) भाषायी आधार पर राज्यों के निर्माण से राज्यों की सीमाएं निर्धारित करने में भाषा सभी के लिए एक समान आधार बन गई है। (iii) इससे देश का विघटन के बजाय एकीकरण हुआ है। (iv) लोगों की क्षेत्रीय अपेक्षाएं पूरी हुई हैं, लोगों को ताकत मिली है और लोकतंत्र सफल हुआ है। लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए अनेक क्षेत्रीय अपेक्षाओं को स्थान दिया जा रहा है। (कोई तीन व्याख्या सहित)	3x2=6
	अथवा **स्वतंत्रता के पश्चात भारत में अपनाए जाने वाले आर्थिक विकास के मॉडल से संबंधित सहमति तथा असहमति के विभिन्न क्षेत्रों का परिक्षण कीजिए।**	
उ0	**<u>सहमति के क्षेत्र :</u>** (i) भारत के विकास का अर्थ आर्थिक वृद्धि एंव सामाजिक और आर्थिक न्याय होना चाहिए।	

	(ii) विकास के मुद्दे को केवल व्यापारियों, उद्योगपतियों और किसानों पर ही नहीं छोड़ा जा सकता अपितु सरकार को एक प्रमुख भूमिका निभानी चाहिए। **(iii)** गरीबी उन्मूलन तथा सामाजिक और आर्थिक पुनर्वितरण के काम को सरकार की प्राथमिक जिम्मेवारी माना गया। **असहमति के क्षेत्र :** **(i)** सरकार द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका पर असहमति। **(ii)** यदि आर्थिक वृद्धि से भिन्नता हो तो न्याय की जरूरत से जुड़े महत्त्व पर असहमति। **(iii)** उद्योग बनाम कृषि तथा निजी बनाम सार्वजनिक क्षेत्र के मुद्दे पर असहमति।	3+3=6
प्र0 26.	**लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के पश्चात्, इंदिरा गांधी को प्रधान मंत्री बनाने में सहायक परिस्थितियों का विश्लेषण कीजिए। इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री के रूप में लोकप्रियता प्रदान करने वाली किन्हीं चार उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए।**	
उ0	• **इंदिरा गांधी को प्रधान मंत्री बनाने में सहायक परिस्थितियां :** **(i)** इंदिरा गांधी लोकप्रिय पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की पुत्री थीं। **(ii)** वह 1958 में कांग्रेस अध्यक्ष बन गई थी। **(iii)** वह 1964–66 में शास्त्री जी के मंत्रीमंडल में सूचना मंत्री रह चुकी थीं। (कोई दो बिंदु) • **इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री के रूप में लोकप्रियता प्रदान करने वाली उपलब्धियां :** **(i)** उसने 'गरीबी हटाओ' का लोकप्रिय नारा दिया था। **(ii)** उसने सार्वजनिक क्षेत्र की वृद्धि पर ध्यान दिया। **(iii)** उसने ग्रामीण भूमि की तथा शहरी सम्पति की हदबन्दी की जिससे आर्थिक असमानता कम हो सके। **(iv)** उसने रज़वाड़ों को दी जाने वाली सुविधाएं कम कीं। **(v)** 1971 में भारत–पाकिस्तान युद्ध में निर्णायक जीत। **(vi)** 1974 में पहला आणविक विस्फोट। (कोई चार बिंदु)	2+4=6
	अथवा **25 जून, 1975 को भारत में आपात स्थिति की घोषणा किए जाने के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों का विश्लेषण कीजिए।**	
उ0	**आपातकाल लागू करने की परिस्थितियाँ :** **(i)** न्यायपालिका और राजनीतिक कार्यपालिका के बीच संघर्ष। **(ii)** वृद्धि दर में कमी और कीमतों का बढ़ना। **(iii)** बिहार और गुजरात में मंहगाई और भ्रष्टाचार के विरूद्ध छात्र आंदोलन। **(iv)** जॉर्ज फर्नाडीज़ के नेतृत्व में रेलवे हड़ताल। **(v)** रामलीला मैदान की विशाल रैली जहां जयप्रकाश नारायण ने कर्मचारियों से सरकार के अवैध आदेश न मानने का आग्रह किया। **(vi)** इलाहाबाद हाई कोर्ट का इंदिरा गांधी के चुनाव को रद्द करने का निर्णय।	6

प्र0 27.	**भारतीय किसान यूनियन द्वारा चलाए जाने वाले किसान आंदोलन को, सर्वाधिक सफल जन आंदोलन बनाने वाले किन्हीं छः कारकों का वर्णन कीजिए।**	
उ0	**i.** भारतीय किसान यूनियन के नेतृत्व में चला यह आंदोलन बहुत ही अनुशासित था। **ii.** भारतीय किसान यूनियन ने जातिगत समुदायों को आर्थिक मसलों पर एकजुट करने के लिए 'जाति पंचायत' की परम्परागत संस्था का उपयोग किया। **iii.** धनराशि एंव संसाधन जुटाने के लिए भारतीय किसान यूनियन ने इसी जातिगत–वंशगत सम्पर्क जाल का प्रयोग किया। **iv.** भारतीय किसान यूनियन की मांगे किसानों की चिर प्रतीक्षित मांगे थीं और उनके हित में थीं। इसलिए किसानों द्वारा तुरन्त स्वीकार कर ली गईं। **v.** भारतीय किसान यूनियन ने स्वंय को अराजनीतिक रखा और एक दबाव समूह के रूप.में काम किया। **vi.** भारतीय किसान यूनियन ने दबाव की नीति प्रयोग की और किसानों की शक्ति का प्रदर्शन किया। अन्य कोई उपयुक्त बिंदु	6x1=6
	अथवा **क्षेत्रीय आकांक्षाएँ तथा उनकी पूर्ति लोकतांत्रिक राजनीति का एक अभिन्न अंग है। इस विचार से मिलने वाली किन्हीं तीन शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।**	
उ0	**i.** क्षेत्रीय आकाक्षाएं लोकतांत्रिक राजनीति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं और क्षेत्रीय आकाक्षाओं को अभिव्यक्त करना सामान्य है। **ii.** क्षेत्रीय मुद्दों को सुलझाने के लिए वार्ताएं और संवाद सर्वश्रेष्ठ तरीके हैं। **iii.** क्षेत्रीय मुद्दों को सत्ता की साझेदारी के माध्यम से संवैधानिक ढांचे में ही हल किया जा सकता है। **iv.** क्षेत्रीय संतुलन और आर्थिक विकास से भेदभाव की भावना में कमी आती है। अतः क्षेत्रों के पिछड़ेपन को प्राथमिकता के आधार पर दूर करने के प्रयास होने चाहिए। **v.** संवैधानिक प्रावधानों में ही क्षेत्रीय मुद्दों को सुलझाने के प्रावधान पहले से ही निहित हैं। संविधान की छटी अनुसूची विभिन्न कबीलों (जन जातियों) को अपनी प्रथाओं और पारम्परिक क़ानूनों को संरक्षित रखने की अनुमति देती है। **vi.** संघवाद का सही अर्थों में सम्मान होना चाहिए। अन्य कोई उपयुक्त शिक्षा (कोई तीन बिंदु)	3x2=6

पाठ-1

शांति

परिचय

युद्ध, ब्राह्य आक्रमण, आतंकी हमलों, मानव अधिकारों के हनन व संगठित हिंसा से जूझती हुई इस दुनिया को शांति की बहुत आवश्यकता है। दो विश्व युद्धों के दौरान मानवता ने भयंकर जन व धन हानि को झेला और शांति की अनुपस्थिति की भारी कीमत चुकायी। इसने शांति के महत्व को पहचानने के लिए मानवता को विवश किया। यही कारण है कि यद्यपि शीत युद्ध के दौरान दोनों महाशक्तियाँ सोवियत संघ व संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच क्यूबा मिसाइल संकट के रूप में तनाव चरम पर पहुँचा। किन्तु वास्तविक युद्ध का रूप नहीं ले पाया।

हिंसा अधिकतर समाज की मूल संरचना में रची बसी होती है। जातिभेद, वर्गभेद, पितृसत्ता, उपनिवेशवाद, नस्लवाद और सांप्रदायिकता इत्यादि संरचनात्मक हिंसा के अंतर्गत आते हैं। आज विश्व को मिलजुकर सभी समस्याओं का हल बातचीत द्वारा निकालने की ज़रूरत है न कि डर व भय के माहौल द्वारा। पारस्परिक सहयोग की स्थिति का होना तथा युद्ध की अनुपस्थिति को शांति के रूप में समझा जाता है। इस पाठ में हम शांति की अवधारणा, क्यूबा मिसाइल संकट, संरचानात्मक हिंसा, हिंसा से उत्पन्न संकटों, महात्मा गाँधी तथा मार्टिन लूथर किंग जैसे विचारकों के विश्व में शांति लाने के प्रयासों का अध्ययन करेंगे।

अधिगम उद्देश्य/परिणाम

इस पाठ को पढ़ने के बाद विद्यार्थी

1. शांति की अवधारणा से अवगत होंगे।
2. हिंसा के कारणों को जान सकेंगे।
3. विश्व में शांति स्थापित करने की आवश्यकता से अवगत होंगे।
4. शांति स्थापित करने के विभिन्न उपायों से अवगत होंगे।
5. समकालीन विश्व में शांति स्थापित करने में कौन-सी चुनौतियाँ उपस्थित हैं? जान सकेंगे।

विषय-वस्तु

भूमिका

समकालीन विश्व में आज युद्ध, आंतकवादी हमलों, नस्लीय भेदभाव और गुटीय दंगों, हिंसक घटनाओं तथा मानव अधिकारों के हनन की खबरें हमें विश्व में उपस्थित अशान्ति के माहौल से अवगत कराती है। जर्मन दार्शनिक नीत्शे

ने शांति के महत्त्व नहीं दिया तथा युद्ध को महिमामण्डित किया। उसका मानना था कि सिर्फ संघर्ष ही सभ्यता की उन्नति के लिए आवश्यक है। इटली के विचारक विल्फ्रेडो पैरेटों का दावा था कि अधिकतर समाजों में शासक वर्ग का निर्माण सक्षम और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ताकत का प्रयोग करने वाले लोगों से होता है। दो विश्व युद्धों में भयंकर जनहानि व धनहानि को मानवता ने झेला। जापान के हिरोशिमा व नागासाकी शहरों पर अगस्त 1945 मे आण्विक हथियारों के प्रयोग ने विश्व शांति के लिए एक भयंकर संकट उत्पन्न कर दिया। शांति की अनुपस्थिति की भारी कीमत चुकाने के बाद मानवता ने इसके महत्व को पहचाना। क्यूबा मिसाइल संकट ने शीतयुद्ध के दौर में सोवियत संघ व संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच तनाव को चरम पर पहुँचा दिया।

शांति का अर्थ

शांति का साधारण भाषा में अर्थ 'युद्ध की अनुपस्थिति' है। मगर यह शांति का संकुचित अर्थ है। आज के समय में शांति एक विस्तृत अवधारणा है। इसमें युद्ध, दंगे, नरसंहार, कत्ल या सामान्य शारीरिक प्रहार समेत सभी प्रकार के हिंसक संघर्षों के अभाव के रूप में हम शांति को देखते हैं। इस प्रकार साधारण भाषा में हम शांति से अभिप्राय विवादों/संघर्षों में कमी, हिंसा के डर से आज़ादी, युद्ध व संघर्षों का अन्त करने के लिए किए गए समझौते और एक ऐसा समय जब युद्ध व संघर्ष न हो रहा तो उस अवस्था को शांति कहते हैं।

संरचनात्मक हिंसा– साधारण भाषा में संरचनात्मक हिंसा से अभिप्राय भेदभाव, अभाव, सामाजिक अन्याय, स्त्री व पुरूष के बीच असमानता, स्त्री व पुरूष के बीच मानव अधिकारों को देने से इंकार से है। इस प्रकार की हिंसा की जड़े समाज में गहरे तौर पर होती है।

संरचनात्मक हिंसा के विभिन्न रूप–

(I) पितृसत्ता–

इस विचारधारा के अनुसार ज्येष्ठ पुरूष घर का मुखिया होगा। इस व्यवस्था में महिलाओं का दर्जा दूसरे दर्जे का है। कन्या भ्रूणहत्या, बाल–विवाह, घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, उत्पीड़न, कुपोषण जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

''औरत जन्म नहीं लेती, बना दी जाती है।''

–सिमन् दी बुअर

(II) रंगभेद– नस्ल व रंग के आधार पर लोगों को भेदभाव का सामना करना पड़ा। उदाहरणतयः

(क) 1865 तक अमेरिका में दास प्रथा।

(ख) हिटलर द्वारा यहूदियों का जनसंहार।

(ग) 1992 में दक्षिण अफ्रीका मे अश्वेतों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार, तथा समान नागरिक अधिकारों को प्रदान न किया जाना इसके कुछ जीवन्त उदाहरण है।

संघर्षों का एक तरीका सविनय अवज्ञा है जिसका इस्तेमाल महात्मा गाँधी ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान किया तथा गाँधी जी से प्रेरणा लेकर मार्टिन लूथर किंग ने अमेरिका में काले लोगों के साथ भेदभाव के खिलाफ 1960 में इसी तरह का संघर्ष का शुरू किया।

(III) **सांप्रदायिकता**– धर्म को आधार बनाकर उभरी दो या दो से अधिक धर्मों के लोगों के बीच में नकारात्मक भावना को सांप्रदायिकता के नाम से जाना जाता है। जब यह हिंसक रूप धारण कर लेता है तो उसे सांप्रदायिक दंगों के नाम से पुकारा जाता है।

हिंसा की समाप्ति–

यूनिसेफ के अनुसार "चूंकि युद्ध का आरंभ लोगों के दिमाग में होता है, इसलिए शांति के बचाव भी लोगों के दिमाग में ही रचे जाने चाहिए।"

1. हिंसा का प्रारंभ किसी व्यक्ति के दिमाग में नहीं होता, वास्तव में इसकी जड़ें समाज की संरचना में समाहित होती है।
2. न्यायपूर्ण समाज और लोकतंत्र की स्थापना।
3. शांतिपूर्ण–सहअस्तित्व को बढ़ावा देना।
4. मानव कल्याण की स्थापना।

आंतकवाद के जन्म के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित है-

1. युद्ध।
2. भूखमरी।
3. असमानता।
4. असहिष्णुता।
5. फैन्टसी।

क्या हिंसा कभी शांति को प्रोत्साहित कर सकती है?

हिंस कभी दुनिया में शांति नहीं ला सकती है। हिंसा रोकने के लिए प्रतिहिंसा का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। दुनिया में हम शांति केवल शांतिपूर्ण तरीकों से जैसे बातचीत, आपसी सहयोग व सौहार्द की भावना को विकसित करके ही ला सकते हैं। मगर कभी-कभी शांति स्थापित करने के लिए हिंसा आवश्यक होती है। तानाशाही शासन को हटाने के लिए कभी–कभी हिंसा का सहारा लिया जाता है। आत्मरक्षा के लिए ही युद्ध को उचित ठहराया जा सकता है। मगर कभी-कभी हिंसा का इस्तेमाल आत्मघाती साबित होता है। जिस हिंसा का प्रयोग जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए किया गया होता है। उसी हिंसा का प्रयोग जनता के अधिकारों को छीनने के लिए भी हो सकता है।

शांति और राज्यसत्ता

प्रत्येक राज्य अपने को एक स्वतंत्र व सर्वोच्च्व सत्ता मानता है तथा वह अपने हितों को बचाने व बढ़ाने के लिए लगातार प्रयासरत रहता है। यदि विश्व में शांति लाने का प्रयास करना है तो हमें अपना दृष्टिकोण व्यापक बनाते हुए मानवतावादी बनाना आवश्यक है।

सामान्यतयः पुलिस व सेना जैसे सशस्त्र बलों का प्रयोग जनता की रक्षा के लिए होता है। मगर कई देशों में इनका प्रयोग जनता के विरोधी स्वरों को दबाने के लिए किया जाता है। निरकुंश शासन, व सैनिक तानाशाही में यह आमतौर पर देखा जाता है।

समस्याओं व विवादों का हल नागरिकों को आज़ादी का सही ढ़ंग से उपयोग करने की आजादी देने में है।

शांति कायम करने के विभिन्न तरीके–

शांति को कायम रखने के लिए अलग–अलग रणनीतियाँ अपनाई गई है। इन रणनीतियों को आकार देने में तीन दृष्टिकोणों ने अहम् भूमिका अदा की है।

1. राष्ट्र प्रमुख केन्द्र के तौर पर–

(क) राष्ट्र की सम्प्रभुता का आदर करता है।

(ख) देशों के बीच प्रतियोगिता या प्रतिद्धंद्धिता की भावना होती है।

2. राष्ट्रों की गहराई तक जमी आपसी प्रतिद्वंद्विता की प्रकृति को स्वीकार किया जाए।

(क) देशों के बीच प्रतियोगिता या प्रतिद्वन्द्वता की भावना को स्वीकार करता है मगर इसका जोर सकारात्मक रूप में देखता है।

(ख) सभी देशों के बीच पारस्परिक निर्भरता की संभावनाओं पर जोर दिया जाता है।

(ग) सामाजिक–आर्थिक सहयोग पर बल।

3. राष्ट्र आधारित व्यवस्था को मानव इतिहास की समाप्तप्रायः अवस्था मानती है।

(क) इसमें वह वैश्विक समुदाय के उदय को शांति की गारन्टी के रूप में लेती है।

(ख) राष्ट्रों के बीच आपसी व्यापार व लेन–देन बढ़ रहा है।

(ग) यह पर बहुराष्ट्रीय निगमों (MNC'S) तथा जनआंदोलन प्रमुख भूमिका अदा कर रहे हैं।

(घ) वैश्वीकरण के युग में राज्यों की प्रधानता में लगातार कमी आ रही है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने अनेक उपलब्धियाँ हासिल की, लेकिन शांति के प्रति खतरों को रोकने और समाप्त करने में यह पूर्णतयः सफल नहीं हो पाया हैं।

समकालीन चुनौतियाँ

वर्तमान विश्व के सामने आज कुछ गंभीर खतरे व्याप्त है। जिससे न केवल राष्ट्रों को बल्कि मानवता को भी गहरा खतरा है।

संयुक्त राष्ट्र संघ–24 अक्टूबर 1945 को विश्व में शांति स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन किया गया। मगर यह विश्व में शांति स्थापित करने में पूर्णतयः सफल न हो सकी। वर्तमान में इस पर विकसित देशों के प्रभाव को प्रदर्शित करने का आरोप लगता रहा है। एक धुव्रीय विश्व में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा ईराक तथा अफगानिस्तान पर आक्रमण तथा इनकी शासन व्यवस्था में हस्तक्षेप इसका जीवन्त उदाहरण है।

आंतकवाद

आधुनिक हथियारों और उन्नत तकनीक का निर्मम प्रयोग करके आतंकवादी शांति के लिए खतरा पैदा कर रहे है। 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका पर आंतकवादी हमला, 1993 में बम्बई में बम्ब विस्फोट, 13 दिसम्बर 2001 को भारतीय संसद पर आंतकवादी हमला, 26 नवम्बर 2008 को मुम्बई के ताज होटल समेत कई जगहों पर आंतकवादी हमलें, 13 नवम्बर 2015 को पेरिस पर आंतकवादी हमले तथा ISIS वैश्विक आंतकवाद के नए चेहरे के तौर पर उभर रहा है। जैविक, रासायनिक, व परमाणु हथियार नई चुनौतियाँ है। आज सभी देशों के सामने यह खतरा व्याप्त है कि कहीं यह हथियार इन असामाजिक तत्वों के हाथ में न पड़ जाए। विश्व समुदाय इन आंतकवादी संगठनों को पूर्णतय: अपने नियंत्रण में नहीं ला पाया है। वर्तमान समय में शस्त्रों का दुरूपयोग न करके तथा निशस्त्रीकरण की नीति को अपना कर शांति की स्थापना की जा सकती है। शांति आंदोलन के तहत विश्व के विभिन्न समुदायों व वर्गों, पेशों के लोग संगठित होकर इंटरनेट के माध्यम से शांति का संदेश फैलाने का प्रयास कर रहे हैं।

पाठगत अवधारणाएँ

1. **पितृसत्ता–** इस विचारधारा के अनुसार ज्येष्ठ पुरूष घर का मुखिया होगा। इस व्यवस्था में महिलाओं का दर्जा दूसरा है।
2. **रंगभेद–** नस्ल व रंग के आधार पर किया जाने वाला भेदभाव।
3. **साम्प्रदायिकता–** धर्म को आधार बनाकर उभरी दो या दो से अधिक धर्मों के लोगों के बीच में नकारात्मक भावना को सांप्रदायिकता के नाम से जाना जाता है।
4. **उपनिवेशवाद–** ऐसी नीति या व्यवहार जिसमें एक देश किसी दूसरे देश की राजनैतिक व्यवस्था पर पूर्णतय: या आंशिक तौर पर नियंत्रण करता है, तथा उस देश का आर्थिक शोषण किया जाता है।
5. **संरचनात्मक हिंसा–** संरचनात्मक हिंसा से अभिप्राय भेदभाव, अभाव, सामाजिक अन्याय, स्त्री व पुरूष के बीच असमानता, स्त्री व पुरूष के बीच मानव अधिकारों को देने से इंकार से है।
6. **शांति–** शांति से अभिप्राय विवादों/संघर्षो में कमी, हिंसा के डर से आज़ादी, युद्ध व संघर्षों का अन्त करने के लिए किए गए समझौते और एक ऐसा समय जब युद्ध व संघर्ष न हो रहा हो तो उस अवस्था को शांति कहते हैं।
7. **सविनय अवज्ञा–** सविनय अवज्ञा से अभिप्राय शांतिपूर्ण तरीके से सक्रिय तौर पर कुछ कानूनों का पालन करने से इंकार करना है। इसे महात्मा गाँधी ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण स्थान दिया।
8. **अहिंसा–** विस्तृत अर्थो में अहिंसा से अभिप्राय मन, वचन तथा कर्म से किसी को नुकसान न पहुँचाना है।

प्रस्तावित/सुझावित क्रियाकलाप

1. लोकतांत्रिक व्यवस्था में अपने अधिकारों के लिए शांतिपूर्ण संघर्ष के क्या तरीके हो सकते हैं? जानकारियाँ जुटाइए और उदाहरण से अपनी बात स्पष्ट कीजिए।
2. 'हिंसा का सहारा लेना कभी-कभी जरूरी होता हैं' इस कथन के पक्ष अथवा विपक्ष में तर्कपूर्ण बहस कीजिए।

मूल्यांकन प्रश्न

1. शांति क्या है? 1 अंक
2. युद्ध करना कब न्यायसंगत होता है? 1 अंक
3. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना का एक प्रमुख कारण बताओ? 1 अंक
4. क्यूबा मिसाइल संकट क्या था? 2 अंक
5. क्या शांति स्थापना करने के लिए हिंसा जरूरी है? 2 अंक
6. हिंसा के कोई चार प्रकारों का वर्णन करें? 4 अंक
7. मार्टिन लूथर किंग व महात्मा गाँधी के शांति स्थापना के तरीकों का वर्णन करें। 4 अंक
8. 'हथियारों की होड़ से विश्व में शांति स्थापित हो सकती है या नहीं।' इस कथन के पक्ष व विपक्ष में तर्क दें। 6 अंक

संवर्द्धित मूल्य

1. मानवीय मूल्यों का संवर्द्धन होगा।
2. आपसी सहयोग व विचार-विमर्श के महत्व से अवगत होगें।
3. सहनशीलता की भावना का विकास होगा।
4. मानवीय जीवन के आवश्यक तत्वों से अवगत होगें।
5. लोकतंत्र के प्रति आस्था बढ़ेगी।
6. अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।

पाठ-2

समकालीन विश्व में सुरक्षा

परिचय

विश्व में आज असुरक्षा का माहौल व्याप्त है, तथा हर देश अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा, एकता व अखण्डता को कायम रखने के लिए प्रयासरत है इसलिए बड़ी मात्रा में अत्याधुनिक हथियारों व सैनिक साजो-सामान से अपनी सेना को लैस कर रहा है। हथियारों की होड़, आपसी अविश्वास व असुरक्षा की भावना में बढ़ोत्तरी हो रही है। सुरक्षा से अभिप्राय 'खतरे से आज़ादी' है जिसमें हर प्रकार के शारीरिक, मानसिक तनाव व आघात से मुक्ति हो तथा मानव के अस्तित्व को खतरा न हो। वर्तमान में हम हथियारों के ढेर पर बैठे है, क्या हथियार सचमुच दुनिया में शान्ति ला सकते है? गरीबी, प्राकृतिक आपदाओं, बीमारियों से जूझती मानवता को अपनी सुरक्षा के लिए दवाईयों व भोजन से अधिक क्या हथियारों की आवश्यकता है? आज के समय में परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, रासायनिक व जैविक हथियारों के निर्माण ने मानव अस्तित्व के लिए भयंकर संकट उत्पन्न कर दिया है। विश्व में खतरनाक हथियारों के परिसीमन के लिए एन.पी.टी. (N.P.T.), सी.टी.बी.टी. (C.T.B.T.), स्ट्रार्ट (S.T.A.R.T.) जैसी सन्धियों ने खतरों को सीमित करने में अहम् भूमिका निभाई है। इस पाठ में हम सुरक्षा का मुख्य सरोकर किन चीजों से है, सुरक्षा की पारम्परिक धारणा, उससे उत्पन्न खतरों व बचाव तथा सुरक्षा की अपारम्परिक धारणा के अंतर्गत मानवाधिकारों का हनन, आतंकवाद, वैश्विक तापवृद्धि, खतरनाक जानलेवा रोगों तथा सहयोगमूलक सुरक्षा की धारणा, निशस्त्रीकरण, अस्त्र-नियत्रंण, व भारत की सुरक्षा रणनीति का अध्ययन करेंगे।

अधिगम परिणाम

इस पाठ को पढ़ने के बाद विद्यार्थी

1. सुरक्षा की अवधारणा व उसके केन्द्रीय मूल्यों को समझ सकेंगे।
2. सुरक्षा की परम्परागत अवधारणा व उसके स्वरूप को समझ सकेंगे।
3. सुरक्षा की परम्परागत व अपरम्परागत धारणा में अन्तर कर पाएँगे।
4. सहयोगमूलक सुरक्षा की अवधारणा को समझ सकेंगे।
5. भारत की सुरक्षा रणनीतियों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

विषय-वस्तु

सुरक्षा क्या है?

सुरक्षा का अर्थ है – **'खतरे से आज़ादी'**। इसका अभिप्राय हर प्रकार के शारीरिक, मानसिक तनाव व आघात से

मुक्ति है। सुरक्षा का अभिप्राय (सरोकर) इन चीजों से है।

1. **आत्मरक्षाः**- प्रत्येक मनुष्य को शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना से बचाव करना है। आत्मरक्षा के लिए वह दूसरे की हत्या तक कर सकता है। यदि वह उसके प्राणों को छीनने का प्रयास कर रहा हो।
2. अमानवीय व्यवहार व शोषण से मुक्ति।
3. आत्मविकास के अवसर।
4. अन्याय व अपमानजनक माहौल से मुक्ति।

सुरक्षा की अवधारणाएँ–

1. सुरक्षा की पारंपरिक धारणा। 2. सुरक्षा की अपारम्परिक धारणा।

सुरक्षा की पारम्परिक धारणा

इस अवधारणा में किसी राष्ट्र व राज्य की स्वतंत्रता और अस्तित्व को हानि पहुँचाने वाले खतरे से मुक्ति को ही सुरक्षा की पारम्परिक धारणा के रूप में देखा जाता है। यह सुरक्षा की संकुचित धारणा है, इस धारणा में सीमित खतरे हैं। इसमें राजसत्ता व राज्य की सुरक्षा को उत्पन्न खतरे तथा उन्हीं से रक्षा के लिए सुरक्षात्मक रणनीति तैयार की जाती है। सुरक्षा की पारम्परिक धारणा की मुख्य धारणाएँ निम्नलिखित है-

1. **बाहरी आक्रमण–** पारम्परिक धारणा का मुख्यतः संबंध बाहरी खतरों से सुरक्षा करना होता है।
2. **सैन्य खतरे–** सुरक्षा की पारम्परिक धारणा में सैन्य खतरे किसी देश के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक समझा जाता है।
3. **खतरे का स्रोत कोई दूसरा देश–** सामान्यतः देश की बाहरी सुरक्षा के खतरे का स्रोत कोई दूसरा देश होता है। वह देश सैन्य आक्रमण की धमकी देकर उस देश की एकता, अखण्डता, सम्प्रभुता और स्वतंत्रता, क्षेत्रीय अखण्डता जैसे **केन्द्रीय मूल्यों** (किसी राष्ट्र के संदर्भ में) के लिए खतरा उत्पन्न करता है।
4. **सेना व नागरिकों के जीवन को खतरा–** बाहरी आक्रमण द्वारा उस देश की सेना को ही नहीं बल्कि नागरिकों के जीवन को भी खतरा होता है।

बाहरी आक्रमण से निपटने के उपाय–

बुनियादी तौर पर बाहरी आक्रमण से निपटने के लिए आक्रमण के शिकार देश के समक्ष निम्नलिखित विकल्प हो सकते हैं :

(1) वह देश या तो आत्मसमर्पण कर दे।

(2) शत्रु पक्ष की बात को बिना युद्ध किए मान लें।

(3) शत्रु का डटकर मुकाबला करें।

(4) सैन्य संगठन।

(5) शक्ति संतुलन।

(6) कूटनीति।

परम्परागत सुरक्षा के उपाय

उपाय नाम	कार्य
1. शक्ति सन्तुलन	पड़ोसी देश के बराबर या अधिक सैन्य क्षमता के विकास से।
2. सैन्य गठबंधन	अनेक देशों द्वारा सैन्य समझौते करके गठबंधन बनाना।
3. निशस्त्रीकरण	देशों द्वारा अस्त्र-शस्त्रों के भण्डार में कटौती।
4. न्याययुद्ध	युद्ध का प्रयोग आत्म-रक्षा या दूसरों को जनसंहार से बचाना।
5. विश्वास बहाली	देशों में एक दूसरे के प्रति विश्वास की भावना का विकास।

(B) **आन्तरिक सुरक्षाः-** प्रत्येक राष्ट्र को अपनी आंतरिक शासन व्यवस्था को मजबूत करना होता है। जब किसी देश की शासन व्यवस्था कमजोर हो तो वहाँ गृहयुद्ध, आन्तरिक कलह उत्पन्न होने की संभावना होती है जिसका लाभ उठाकर पड़ोसी शत्रु राष्ट्र उस देश पर आक्रमण कर सकते है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पश्चिमी राष्ट्रों में आन्तरिक सुरक्षा का मुद्‌दा कम महत्वपूर्ण हो गया। जिसके निम्नलिखित कारण थे–

(i) पश्चिमी देशों द्वारा अपनी सीमा के अन्दर एकीकृत और शांति सम्पन्न होना।

(ii) पश्चिमी देशों के सामने सीमा के भीतर बसे समुदायों अथवा वर्गो से कोई गंभीर खतरा नहीं था।

बाहरी खतरे की आशंका

(i) अमेरिका व सोवियत संघ को अपने ऊपर एक दूसरे से सैन्य हमले का डर था।

(ii) यूरोपीय देशों को अपने उपनिवेशों में वहाँ की जनता से युद्ध की चिंता सता रही थी ये लोग आजादी चाहते थे। जैसे फ्रांस को वियतनाम व ब्रिटेन को केन्या से जूझना पड़ा।

सुरक्षा के पारम्परिक तरीके निम्नलिखित है–

1. **निशस्त्रीकरण–** निरस्त्रीकरण का अर्थ है सभी राज्य चाहे उनका आकार, ताकत और प्रभाव कुछ भी हो वह भयंकर विनाश करने वाले अस्त्रों को नियंत्रित करना या पूर्णतयः समाप्ति।

2. **अस्त्र-नियंत्रण–** अस्त्र-नियंत्रण में वैश्विक स्तर पर जनसंहार करने वाले हथियारों जैसे परमाणु हथियारो, रासायनिक हथियारों व जैविक हथियारों को नियन्त्रित करने का प्रयास किया जाता है। जैसे स्टार्ट, पी.टी.बी.टी., सी.टी.बी.टी जैसी सन्धियाँ।

3. **विश्वास बहाली–** CBM (Confidence Building Measures)– इसमें दो देशों के बीच तनावपूर्ण व गतिरोध पूर्ण संबंधों को बातचीत के द्वारा आपसी व्यापार व सांस्कृतिक आदान-प्रदान के द्वारा धीरे-धीरे सुधारने का प्रयास किया जाता है।

युद्ध करना निम्नलिखित स्थितियों में न्यायसंगत होगा :

1. आत्मरक्षा के लिए।

2. जब शान्ति स्थापित करने के लिए की गई सभी वार्ताएँ असफल हो जाए।

3. जब युद्ध न करने पर अत्यधिक मात्रा में जनसंहार हो रहा हो तब इसे रोकने के लिए किए गए युद्ध को न्यायसंगत माना जाएगा।

एशिया और अफ्रीका के नव स्वतंत्र देशों के सम्मुख सुरक्षा की चुनौतियाँ:-

(i) अपने पड़ोसी देश से सैन्य हमले की आशंका। सीमा रेखा, भूक्षेत्र तथा आबादी पर नियंत्रण को लेकर।

(ii) **अंदरुनी सैन्य संघर्ष:**—अलगाववादी आन्दोलनों से खतरा जो राष्ट्र का विभाजन करना चाहते थे।

निशस्त्रीकरण सन्धियाँ:-

(i) जैविक हथियार सन्धि (BWC) 10 अप्रैल 1972 में प्रारम्भ, 26 मार्च 1975 को लागू देशों के हस्ताक्षर के बाद तथा दिसम्बर 2014 तक 175 देशों द्वारा जैविक व रासायनिक हथियारों के विकास उत्पादन व भण्डारण पर रोक।

(ii) रासायनिक हथियार सन्धि (CWC)-1992 में, हस्ताक्षर 13 जनवरी 1993 को, 165 द्वारा हस्ताक्षर, अप्रैल 2016 में 192 देशों द्वारा सहमति, अक्टूबर 2015 तक विश्व के लगभग 90% रासायनिक हथियारों के भण्डारों को नष्ट कर दिया गया।

(iii) एंटीबैलेस्टिक मिसाइल संधि (ABM)-प्रक्षेपास्त्रों के भण्डार में कमी करना।

(iv) सामरिक अस्त्र परिसीमन सन्धि (SALT)-घातक हथियार परिसीमन।

(v) सामरिक अस्त्र न्यूनीकरण सन्धि (START)-घातक हथियारों की संख्या में कमी।

(vi) परमाणु अप्रसार सन्धि (NPT)-1968 में सन्धि। यह संधि केवल परमाणु शक्ति-सम्पन्न देशों को परमाणु हथियार रखने की अनुमति देती है और बाकी देशों को ऐसे हथियार हासिल करने से रोकती है। यह 1 जनवरी 1967 से पहले किसी परमाणु हथियारों का निर्माण व विस्फोट करने देशों को ही परमाणु शक्ति सम्पन्न मानती है।

(vii) सी.टी.बी.टी.:- व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि को 10 सितम्बर 1996 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा ग्रहण किया गया। यह संधि पृथ्वी की सतह, वायुमण्डल, अंतरिक्ष, जल और पृथ्वी के तल में परमाणु बम के विस्फोट पर प्रतिबंध लगाती है।

सुरक्षा की अपारम्परिक धारणा—

1. सुरक्षा की अपारम्परिक धारणा न केवल सैन्य खतरे से संबंध रखती है बल्कि इसमें मानवीय अस्तित्व पर चोट करने वाले अन्य व्यापक खतरों व आकाक्षांओं को भी शामिल किया जाता है।

अपारम्परिक धारणा में संदर्भों का दायरा बड़ा होता है। इसमें सिर्फ राज्य ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता की सुरक्षा जरूरी होती है।

इस धारणा के अनुसार सामान्य जनता के विदेशी सेना के हाथों मारे जाने, व मानव अधिकारों के हनन के साथ ही वर्तमान समय में अपने देश की सरकार के हाथों से बचाना भी उतना ही जरूरी होता है। अपारम्परिक धारणा में सुरक्षा के नए स्रोत भी है जैसे- आतंकवाद, भयंकर महामारियाँ और मानव अधिकारों का व्यापक हनन।

गैर परम्परागत (अपारम्परिक) सुरक्षा

(i) **मानव सुरक्षाः-** बाह्य आक्रमण व आंतरिक विद्रोह से सुरक्षा वास्तविक सुरक्षा नहीं है। साथ ही जनता का सुरक्षित होना भी आवश्यक है। वर्तमान समय में युद्ध, मानवाधिकार उल्लंघन, जनसंहार व आतंकवाद से अधिक लोग अकाल, महामारी, व आपदा से मरते है। इस प्रकार मानव सुरक्षा का अभिप्राय है– 'अभाव तथा भय से मुक्ति'।

(ii) **वैश्विक सुरक्षाः-** जिन खतरों का सामना कोई देश अकेले नहीं कर सकता। यह वैश्विक प्रकृति की समस्या है इनके समाधान के लिए वैश्विक सहयोग आवश्यक है।

खतरे या भय के नवीन स्त्रोतः-

(A) मानवता की सुरक्षा के खतरेः-

(i) आतंकवाद।

(ii) विश्वव्यापी निर्धनता।

(iii) असमानता।

(iv) शरणार्थियों की जीवन बाधायें।

(B) विश्व सुरक्षा के खतरेः-

(i) महामारियाँ।

(ii) पर्यावरण प्रदूषण।

(iii) प्राकृतिक आपदायें।

(iv) वैश्विक ताप वृद्धि।

(v) जनसंख्या वृद्धि।

(vi) एडस और बर्ड फ्लू।

मानवाधिकार विषयक चर्चा

(i) राजनीतिक अधिकार जैसे अभिव्यक्ति व सभा करने की आज़ादी।

(ii) आर्थिक और सामाजिक अधिकार।

(iii) उपनिवेशकृत जनता तथा जातीय और मूलवासी, व अल्पसंख्यकों के अधिकार।

मानव अधिकारों के वर्गीकरण को लेकर व्यापक सहमति है लेकिन किसे सार्वभौम मानवाधिकार की संज्ञा दी जाए इस पर आम सहमति नहीं है।

मानवाधिकार की सुरक्षाः- संयुक्त राष्ट्र संघ का घोषणापत्र अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी को अधिकार देता है कि वह मानवधिकार की रक्षा के लिए हथियार उठाये। संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् शांति सेना भेजने का फैसला लेती है।

सहयोगमूलक सुरक्षा

समकालीन विश्व में राष्ट्रों के सम्मुख उपस्थित चुनौतियाँ इतनी जटिल व दुर्गम है कि कोई राष्ट्र अकेले इनका सामना कर पाने की स्थिति में नहीं है। जैसे–वैश्विक आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन आदि। इसलिए सभी देशों को आपसी सहयोग द्वारा इसका सामना करना होगा।

सहयोगमूलक सुरक्षा वह सुरक्षा है जिसमें दो या दो से अधिक देश अपनी सुरक्षा के लिए एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं। कई मुद्दे जैसे पर्यावरण और आतंकवाद का सामना एक देश अकेले नहीं कर सकता। इसलिए इन समस्याओं से निपटने की तैयारी में सभी का आपसी सहयोग आवश्यक है।

भारत की सुरक्षा की रणनीति

भारत की सुरक्षा की रणनीति के चार प्रमुख घटक है–

1. **सैन्य क्षमता मजबूत करना–** भारत को अपनी सैन्य क्षमता को मजबूत करना पड़ा क्योंकि भारत पर पड़ोसी देशों जैसे पाकिस्तान व चीन के हमले होते रहे हैं। पाकिस्तान के साथ भारत के तीन घोषित युद्ध 1947–48, 1965,1971 तथा एक अघोषित युद्ध 1999 कारगिल युद्ध हो चुका है तथा चीन द्वारा 1962 में भारत पर एक हमला भी हुआ।
2. अपने हितों की रक्षा करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग करता है जैसे–एफ्रो-एशियाई एकता, उपनिवेशवाद का विरोध तथा गुटनिरपेक्षता को प्रोत्साहन दिया।
3. अपने देश की अंदरूनी सुरक्षा समस्याओं से निपटना तथा देश की एकता, अखण्डता को कायम रखना तथा विभिन्न समुदायों व जनसमूहों को अपनी बात खुलकर रखने व शासन की प्रक्रिया में शान्तिपूर्ण ढंग से भागीदारी निभाने का मौका प्रदान किया जाए।
4. भारतीय अर्थव्यवस्था का तीव्र गति से विकास किया जाए तथा यह विकास समाज के अधिकांश व्यक्तियों का कल्याण करने में सहायता करें तथा लोगों को गरीबी और अभाव से मुक्ति दिलाएँ। तथा अमीर व गरीब के बीच बढ़ती खाई को भी कम करें।

पाठगत अवधारणाएँ

1. **सुरक्षा–** सुरक्षा का अर्थ है **'खतरे से आज़ादी'**। इसका अभिप्राय हर प्रकार के शारीरिक, मानसिक तनाव व आघात से मुक्ति है।
2. **अपरोध–** अपरोध से अभिप्राय युद्ध की आशंका को रोकना और संतुलन कायम करना है।
3. **रक्षा–** युद्ध को सीमित रखने अथवा उसको समाप्त करने से होता है।
4. **निशस्त्रीकरण–** निशस्त्रीकरण एक ऐसा कृत्य है जिसमें हथियारों में कमी लाने, सीमित करने या पूर्णतय: समाप्त करने पर बल दिया जाता है।
5. **अस्त्र-नियंत्रण–** अस्त्र-नियत्रंण के अंतर्गत हथियारों को विकसित करने अथवा उसको हासिल करने के लिए कुछ कायदे-कानूनों का पालन करना पड़ता है।

6. **विश्वास बहाली**– विश्वास बहाली की प्रक्रिया में यह सुनिश्चित किया जाता है कि प्रतिद्वन्द्वी देश किसी गलतफहमी या गफलत में पड़कर जंग के लिए आमादा न हो जाए।

7. **आतंकवाद**– भय दिखाकर राजनीतिक उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति करना।

8. **शरणार्थी**– जो युद्ध, प्राकृतिक आपदा अथवा राजनीतिक उत्पीड़न के कारण स्वदेश छोड़ने पर मजबूर होते हैं अथवा आंतरिक रूप से विस्थापितजन है।

9. **सैनिक गठबंधन**– गठबंधन में कई देश शामिल होते हैं और सैन्य हमले को रोकने अथवा उससे रक्षा करने के लिए **समवेत** कदम उठाते है। अधिकांश गठबंधनों को लिखित संधि से एक औपचारिक रूप मिलता है और ऐसे गठबंधनों को यह बात बिल्कुल स्पष्ट रहती है कि खतरा किससे है।

10. **केन्द्रीय मूल्य = सम्प्रभुता + क्षेत्रीय अखण्डता।**

प्रस्तावित क्रियाकलाप

1. विद्यार्थी वर्तमान समय में उपस्थित सुरक्षा की विभिन्न चुनौतियों की सूची बनाए।
2. सुरक्षा की परम्परागत व अपरम्परागत अवधारणा में अन्तर दर्शाने वाले एक चार्ट को बनाए।

मूल्यांकन प्रश्न

1. निशस्त्रीकरण का अर्थ बताइये। 1 अंक
2. आतंकवाद क्या है? 1 अंक
3. 'शक्ति संतुलन' क्या है? 1 अंक
4. सुरक्षा को खतरा उत्पन्न करने वाले किन्हीं दो नए स्रोतों के बताइए। 2 अंक
5. सुरक्षा से क्या अभिप्राय है? 2 अंक
6. युद्ध के सिवाय मानव सुरक्षा के किन्हीं अन्य चार खतरों का उल्लेख कीजिए। 4 अंक
7. (अ) यह कार्टून क्या दर्शाता है। 2 अंक

(ब) इस कार्टून में लोग क्या माँग कर रहे हैं? 2

(स) क्या हथियारों से वास्तव में विश्व में शान्ति आ सकती है? 1 अंक

8. सुरक्षा की परम्परागत व अपरम्परागत धारणा में अन्तर बताइए। 6 अंक

संवर्द्धित मूल्य–

1. शान्ति का महत्व समझेंगे।
2. निशस्त्रीकरण के महत्व व उपयोगिता को जानेंगे।
3. आपसी सहयोग व मानवीय गुणों से अवगत होंगे।

पाठ-3

अंतर्राष्ट्रीय संगठन

1. परिचय

विश्व में नयी-नयी चुनौतियों का सामना करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के पुर्ननिर्माण की बातों पर इस अध्याय में चर्चा की गई है। सोवियत संघ के बिखरने के बाद तथा अमेरिका की शक्ति के विस्तार के संदर्भ में भी इन संगठनों की भूमिका को स्पष्ट किया गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् में होने वाले परिवर्तनों का विश्व में सुधार की प्रक्रियाओं व कठिनाइयों का सामना करने के उपायों पर गहरा प्रभाव दर्शाया गया है।

संयुक्त राष्ट्र संघ से भारत के संबंधों तथा सुरक्षा परिषद् के सुधारों के प्रति भारत के दृष्टिकोण को भी स्पष्ट किया गया है। साथ ही इस विषय को भी उठाया गया है कि यदि विश्व में किसी एक महाशक्ति या शक्तिशाली देश का दबदबा हो तो क्या संयुक्त राष्ट्र संघ अपने कार्यों को ठीक से क्रियान्वित कर पायेगा या नहीं। अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका पर विशेष रूप से चर्चा की गई है।

2. अधिगम परिणाम

- विश्व में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की भूमिका।
- नयी-नयी चुनौतियों का सामना करने के लिये इन संगठनों का पुर्ननिर्माण।
- अमेरिका की शक्ति का बढ़ना।
- संयुक्त राष्ट्र तथा उसकी सुरक्षा परिषद् में होने वाले परिवर्तनों पर चर्चा।
- शीतयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ में सुधार की माँग।
- संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का जुड़ाव।
- अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के आधार पर किसी एक महाशक्ति का विश्व पर प्रभाव का अंदेशा।

विषय वस्तु

अंतर्राष्ट्रीय संगठन क्यों चाहिए?

संयुक्त राष्ट्र संघ को एक विश्व का अनिवार्य संगठन माना गया है क्योंकि यह न केवल मानवता की शांति व प्रगति का प्रतीक है बल्कि युद्ध जैसी स्थिति को टालते हुये देशों की सहायता भी करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का मुख्य रूप है। यह संगठन राज्यों की इच्छा से राज्यों के लिए ही निर्मित होते है और उनके लिये ही कार्य करते है ऐसी कई समस्यायें और चुनौतियाँ होती है, जो अधिकतर देश मिलकर सुलझाना चाहते है। जैसे 'ग्लोबल वार्मिग' जिनके लिऐ अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की जरूरत है।

इसी दिशा में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) वैश्विक स्तर पर वित्त–व्यवस्था की देखभाल करता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ का विकास–

दूसरे विश्व युद्ध के विनाश को न रोक पाने की स्थिति में लीग आफ नेशंस के उत्तराधिकारी के रूप में की गई। 51 देश इसके सदस्य बने थे जो 2006 तक 192 हो गये। सभी स्वतंत्र देश इसके सदस्य है।

संघ के मुख्य उद्देश्य

इसके गठन के पीछे मुख्य उद्देश्य विभिन्न राज्यों के बीच किसी भी प्रकार की युद्ध की स्थिति को रोकना था। किसी भी परिस्थिति में युद्ध छिड़ भी जाये तो शत्रुता के दायरे को सीमित भी करने का प्रयास किया जाता है।

मुख्यतय: विवाद सामाजिक, आर्थिक विकास के अभाव में होते है। इन अभावों को विकास स्तर पर लाने का प्रयास किया जाता है।

संघ की आम सभा में प्रत्येक सदस्य को एक वोट का अधिकार है। सुरक्षा परिषद् में पाँच स्थायी सदस्य है। इनके नाम–अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन है। 1946 में नार्वे के ट्राइग्व ली पहले महासचिव बने। 2008 में दक्षिण कोरिया के 'बान की मून' आठवें महासचिव बने जो कि पहले एशियाई महासचिव है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की विभिन्न शाखायें है जो सामाजिक व आर्थिक मुद्दों को निपटाती है। जिनमें–

- विश्व स्वास्थ्य संगठन, (WHO) (वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन)
- संयुक्त राष्ट्रसंघ विकास कार्यक्रम, (UNDP) (यूनाइटेड नेशंस डेवलपमेंट प्रोग्राम)
- संयुक्त राष्ट्र संघ मानवाधिकार आयोग (UNHRC) यूनाइटेड नेशंस ह्यून राइट्स कमिशन)
- संयुक्त राष्ट्रसंघ शरणार्थी उच्चायोग (UNHCR) (यूनाइटेड नेशंस संघ हाई कमीशन फॉर रिफ्यूजीज)
- संयुक्त राष्ट्र बाल कोष आदि मुख्य है।

(1) संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना

अगस्त 1941	:	अमरीकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट और ब्रितानी प्रधानमंत्री चर्चिल द्वारा अटलांटिक चार्टर पर हस्ताक्षर किए गए।
जनवरी 1942	:	धुरी शक्तियों के खिलाफ लड़ रहे 26 मित्र-राष्ट्र अटलांटिक चार्टर के समर्थन में वाशिंग्टन में मिले और दिसंबर 1943 में सुयक्त राष्ट्रसंघ की घोषणा पर हस्ताक्षर हुए।
फरवरी 1945	:	तीन बड़े नेताओं (रूजवेल्ट, चर्चिल और स्टालिन) ने याल्टा सम्मेलन में प्रस्तावित अंतर्राष्ट्रीय संगठन के बारे में संयुक्त राष्ट्रसंघ का एक सम्मेलन करने का निर्णय किया।
अप्रैल-मई 1945	:	सेन फ्रांसिस्को में संयुक्त राष्ट्रसंघ का अंतर्राष्ट्रीय संगठन बनाने के मसले पर केंद्रित दो महीने लंबा सम्मेलन संपन्न।
26 जून 1945	:	संयुक्त राष्ट्रसंघ चार्टर पर 50 देशों के हस्ताक्षर। पोलैंड ने 15 अक्टूबर को हस्ताक्षर किए। इस तरह संयुक्त राष्ट्रसंघ में 51 मूल संस्थापक सदस्य हैं।

24 अक्टूबर 1945: संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना। 24 अक्टूबर संयुक्त राष्ट्रसंघ दिवस।

30 अक्टूबर 1945: भारत संयुक्त राष्ट्रसंघ में शामिल।

(2) संयुक्त राष्ट्र संघ की संरचना प्रमुख अंग

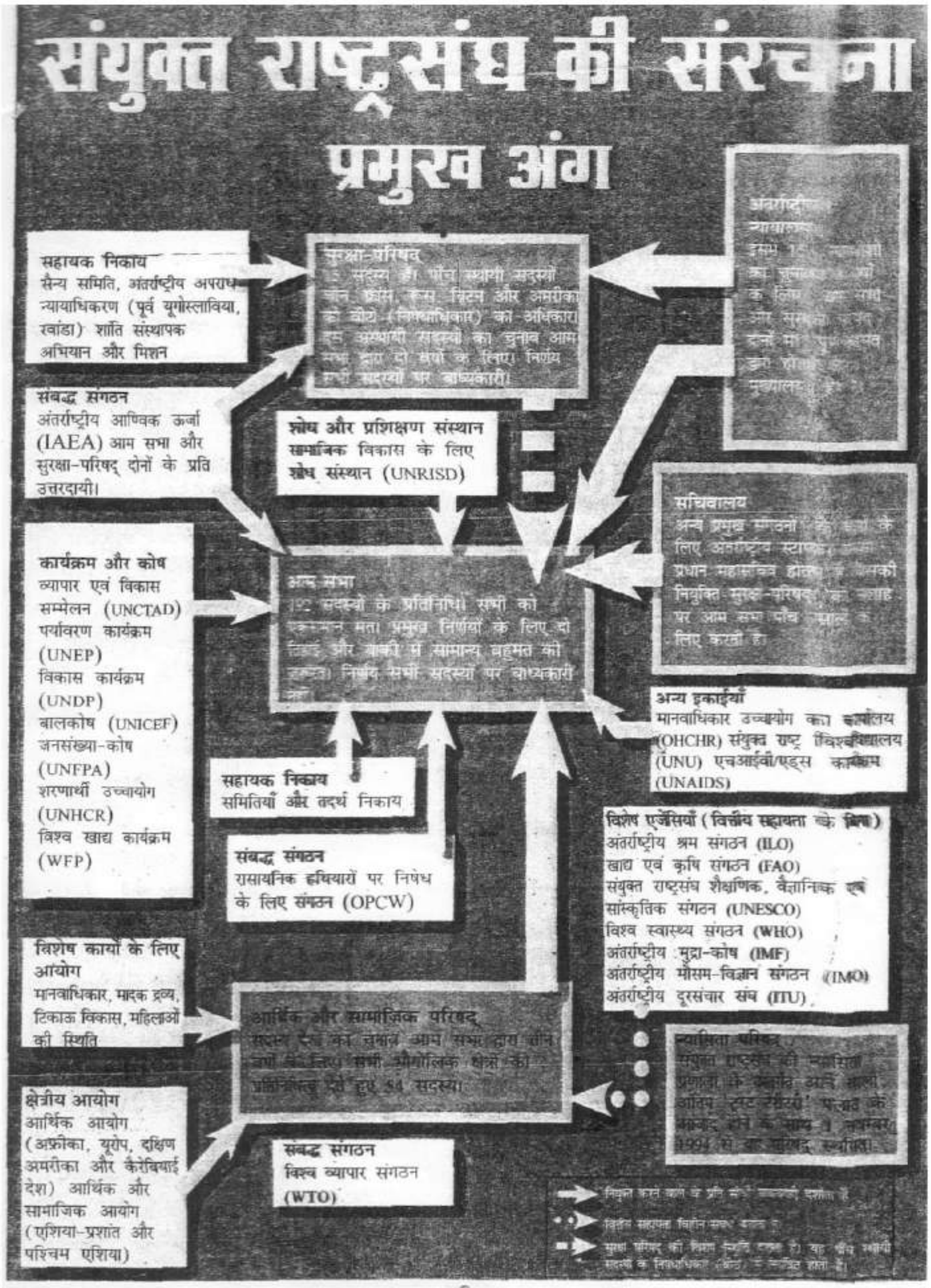

http://www.newint.org/issue375/pics/un-map-big.gif पर आधारित

शीतयुद्ध के बाद UNO में सुधार

परिवर्तित परिस्थितियों के अनुसार आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु व विकास की प्रक्रिया को तेज करने के लिए किसी भी संगठन में सुधार आवश्यक हो जाता है।

विश्वस्तरीय सुधारों की माँग के आधार पर संघ के सामने दो मुख्य मुद्दे उठते रहे है जिनमें मुख्यतय: इसकी बनावट और प्रक्रिया तथा दूसरे संगठन के न्यायाधिकार में आने वाले मुद्दों के बारे में। लगभग सभी देश इन विषयों पर सहमत रहे हैं। परन्तु इन विषयों पर किस प्रकार से सुधार होना चाहिए इस पर इन सदस्य देशों के बीच सहमति नहीं बन पाई है। मुख्य समस्या सुरक्षा परिषद् के कार्य को लेकर रहती है। जिनमें स्थायी व अस्थायी सदस्यों की संख्या को बढ़ाने पर जोर दिया जाता है। एशिया, अफ्रीका व दक्षिण अमेरिका के ज़्यादा देशों को सुरक्षा परिषद की सदस्यता देने की माँग ज़ोर पकड़ती रहती है। संघ के बजट की प्रक्रियाओं को सुधारने पर भी जोर दिया जा रहा है।

कुछ देशों के अनुसार संघ को विश्व शांति व सुरक्षा के मसलों पर ज़्यादा प्रभावी कार्य करने चाहिए। जबकि कुछ सदस्यों देशों के अनुसार संघ की भूमिका विकास व मानवीय मूल्यों के कार्यों जैसे–स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण, जनसंख्या नियंत्रण, मानवाधिकार आदि न्याय तक सीमित रखें।

1991 से विश्व मे आये बदलाव का संघ पर प्रभाव–

1. सोवियत संघ का बिखरना।
2. अमेरिका का शक्तिशाली होना।
3. सोवियत संघ के उत्तराधिकारी राज्य रूस व अमेरिका की बीच अधिक सहयोगात्मक संबध।
4. चीन का तेजी से महाशक्ति के रूप में उदय।
5. एशिया की अर्थव्यवस्था की तरक्की।
6. अन्य नये देशों का संघ में शामिल होना।
7. विश्व के सामने नई-नई चुनौतियों का आना जैसे जनसंहार, गृहयुद्ध, जातिय संघर्ष, परमाणु प्रसार, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण प्रदूषण आदि।

संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य देश उपरोक्त समस्याओं से निपटने में संघ की भूमिका पर निर्भर होने के साथ-साथ यह मूल्यांकन करने में भी लगे है। कि क्या यह संघ इन सब समस्याओं का व्यवहारिक समाधान करने में सक्षम है।

प्रक्रियाओं और ढ़ाँचे में सुधार

सुरक्षा परिषद् में सुधार पर बहस के चलते 1992 में UNO की आम सभा में एक प्रस्ताव पास हुआ जिसमें मुख्यत: संघ के प्रति तीन शिकायतें थी। (1) सुरक्षा परिषद राजनीतिक वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व नहीं करती। (2) संघ के फैसलों पर पश्चिमी मूल्यों व हितों का छाप होती है। (3) सभी सदस्य देशों को परिषद में समान प्रतिनिधित्व प्राप्त नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव

ट्राइग्व ली (1946–1952) नार्वे; वकील और विदेश मंत्री; कश्मीर को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच हुई लड़ाई में युद्धविराम के लिए प्रयास; कोरिया–युद्ध को शीघ्र समाप्त करवाने में नाकामयाब रहने पर आलेचना; दोबारा महासचिव बनाने का सोवियत संघ ने विरोध किया। महासचिव के पद से त्यागपत्र।

डेग हैमरशोल्ड (1953–1961) स्वीडन; अर्थशास्त्री और वकील; स्वेज नहर से जुड़े विवाद को सुलझाने और अफ्रीका के आनौपनिवेशीकरण के लिए काम किया। कांगो–संकट को सुलझाने की दिशा में किए गए प्रयासों के लिए मरणोपरांत नोबेल शांति पुरस्कार। सोवियत संघ और फ्रांस ने अफ्रीका में इनकी भूमिका की आलोचना की।

यू थांट (1961–1971); बर्मा (म्यांमार) शिक्षक और राजनयिक; क्यूबा के मिसाइल–संकट के समाधान और कांगो के संकट की समाप्ति के लिए प्रयास किए। साइप्रस में संयुक्त राष्ट्रसंघ की शांतिसेना बहाल की। वियतनाम युद्ध के दौरान अमरीका की आलोचना की।

कुर्त वाल्डहीम (1972–1981); ऑस्ट्रिया) कूटनयिक और विदेशमंत्री। नामीबिया और लेबनॉन की समस्याओं के समाधान प्रयास किए। बांग्लादेश में राहत–अभियान की देख–रेख। तीसरी बार महासचिवपद पर चुने जाने की दावेदारी का चीन ने विरोध किया।

जेवियर पेरेज द कूइयार (1982–1991) पेरू; वकील और राजनयिक; साइप्रस, अफगानिस्तान और अल सल्वाडोर में शांति–स्थापना के लिए प्रयास किए। नामीबिका की आज़ादी के लिए मध्यस्थता। फॉकलैंड युद्ध के बाद ब्रिटेन और अर्जेंटीना के बीच मध्यस्थता।

बुतरस बुतरस घाली (1992–1996) मिस्र; राजनयिक, विधि वेत्ता और विदेशमंत्री; 'एन अजेंडा फॉर पीस' नामक रिपोर्ट जारी की। मोजांबिक में संयुक्त राष्ट्रसंघ का सफल अभियान चलाया। बोस्निया, सोमालिया और रवांडा में संयुक्त राष्ट्रसंघ की असफलताओं के लिए आरोप लगे। गंभीर असहमतियों के कारण अमरीका ने दुबारा महासचित बनने का विरोध किया।

कोफी ए. अन्नान (1997–2006) घाना; संयुक्त राष्ट्रसंघ के अधिकारी; एड्स, टी.बी. और मलेरिया से लड़ने के लिए एक वैश्विक कोष बनाया। अमरीकी नेतृत्व में इराक पर हुए हमले को अवैध करार दिया। 2005 में मानवाधिकार परिषद् तथा शांति संस्थापक आयोग की स्थापना की। 2001 का नोबेल शांति पुरस्कार मिला।

बदलाव की इन बढ़ती माँगों को देखते हुये 1997 को संघ के महासचिव कोफी अन्नान ने जाँच के आधार पर जो सुझाव रखे उसके अनुसार नये सदस्य चुने जाने पर जोर देने व उनके मान दंड तय किये गये जिसके अनुसार–

1. नये सदस्यों को आर्थिक रूप से ताकतवर होना चाहिए।
2. राष्ट्र की सैन्य ताकत बड़ी हो
3. संघ के बजट में योगदान ज़्यादा हो
4. आबादी में बड़ा राष्ट्र हो
5. देश लोकतंत्र व मानवाधिकारों का सम्मान करता हो।
6. भूगोल, अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति के लिहाज से विश्व की विविधता की नुमाइन्दगी करता हो।

संघ के वार्षिक बजट में सर्वाधिक योगदान करने वाले देश चीन, स्पेन, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, जापान तथा अमेरिका है।

कोई भी देश चाहे वह संघ का सदस्य न भी हो तो अपनी राय संघ के प्रति पेश कर सकता है। सदस्यता हासिल करने वाले देशों के लिहाज से अपनाये गये मापदंड जैसे जनसंख्या, सैन्यताकत अर्थव्यवस्था आदि या लोकतंत्र को मानने वाले राष्ट्र आदि के आधार पर यह देश संघ के सदस्य के रूप में प्रभावशाली होंगे या नहीं, यह एक बहस का विषय है। सुरक्षा परिषद् की सदस्यता या प्रतिनिधित्व प्राप्त करने का आधार भौगोलिक होने की बजाय केवल आर्थिक विकास माना जाये तो भी विकास के भिन्न स्तर तो है ही साथ ही उनकी संस्कृति व सभ्यतायें भी भिन्न है।

सदस्यता से जुड़ा एक और मुद्दा प्रकृति को बदलने का भी है। जैसे कि वीटो पावर यानी निषेधाधिकार समाप्त होना चाहिए। अनेक राष्ट्रों के अनुसार यह शक्ति लोकतंत्र व संप्रभु राष्ट्रों के बीच बराबरी की धारणा से मेल नहीं खाती जो कि संघ के लिये उचित नहीं है।

संघ के पाँच स्थायी सदस्यों को विशेष अधिकार दिये गये है। मुख्य रूप से यह कि ये सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य होगें और उन्हें वीटों का अधिकार होगा जबकि अस्थायी सदस्य दो वर्ष के लिए चुने जाते हैं। दो साल बाद इन अस्थायी सदस्यों को जल्दी सुरक्षा परिषद का सदस्य नहीं चुना जाता है। ताकि सभी महादेशों को बारी–बारी प्रतिनिधित्व मिल सके। अस्थायी सदस्यों की संख्या दस है। इन दस सदस्यों को वोटो का अधिकार नहीं होता जबकि स्थायी में से कोई भी एक सदस्य अपने VETO का प्रयोग कर सकता है। इस तरह किसी भी निर्णय को रोक सकता है।

संघ के ढाँचे में सुधार अर्थात् VETO अधिकार को भी समाप्त करने पर ज़ोर दिया जाता रहा है। परन्तु स्थायी सदस्यों की और से इस विषय पर कोई पहल नहीं की जाती यह भी कहा जाता है कि यदि वीटो का अधिकार नहीं होगा तो शक्तिशाली देशों की दिलचस्पी शायद संघ की और नहीं रह पायेगी। उनके समर्थन के अभाव में यह संघ ज़्यादा प्रभावकारी नहीं रह पायेगा।

संयुक्त राष्ट्र का न्यायाधिकार

संयुक्त राष्ट्र संघ के 60 वर्ष पूरे होने पर सितम्बर 2005 में इसके सभी सदस्य देश एक जुट हुये और मौजूद स्थितियों की समीक्षा करते हुये निम्नलिखित कदम उठाये गये।

- शांति संस्थापक आयोग का गठन।
- नागरिकों को किसी प्रकार के अत्याचार से बचाने में असफल राष्ट्र की सहायता।
- मानवाधिकार परिषद् की स्थापना (2006)।
- सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य पर सहमति।
- आतंकवाद की हर प्रकार से निंदा।
- एक लोकतंत्र कोष का गठन।
- न्यासिता परिषद् को समाप्त करने पर सहमति।

इन सब उपरोक्त मुद्दों के अतिरिक्त अभी भी कई विषयों पर तर्क-वितर्क चलता रहता है जैसे कि 'शांति संस्थापक आयोग क्या काम करेगा? क्या यह किसी भी राष्ट्र के हर झगड़े में दखल दे सकता है? मानवाधिकार के मापदंड क्या होंगे? और क्या आतंकवाद की कोर्द सर्वमान्य परिभाषा मानी जा सकती है। मुख्य रूप से लोकतंत्र को बढ़ावा देने के लिये संघ धन का प्रयोग कैसे कर सकता है?

संयुक्त राष्ट्र संघ में सुधार व भारत

संघ के ढांचे में सुधार के मामलों में भारत ने हमेशा ही समर्थन किया है। भारत के अनुसार विश्व के बदलते परिवेश में संघ को दृढ़ता व मजबूती प्रदान करना अति आवश्यक है। साथ ही भारत ने विभिन्न सदस्यों देशों के बीच संबंधों व उनके विकास में संघ की सक्रिय भूमिका को महत्व दिया है।

भारत का हमेशा यह मानना रहा है कि संघ की आम सभा के सदस्यों की संख्या तो बढ़ी है परन्तु सुरक्षा परिषद के प्रतिनिधित्व के तौर पर इसकी संरचना हमेशा चिंता का विषय रही है। संघ की सदस्य संख्या 1965 में 11 से बढ़कर 15 होने के बाद भी स्थायी सदस्यों की संख्या समान ही रही। साथ ही जब आम सभा में ज्यादातर विकासशील देश ही सदस्य है तो सुरक्षा परिषद् के फैसलों पर उनका प्रभाव निश्चित होना चाहिए।

भारत हमेशा स्थायी व अस्थायी सदस्यों की संख्या में बढ़ोत्तरी का समर्थक रहा है। सुरक्षा परिषद् की कार्यशैली की सफलता विश्व के राष्ट्रों के समर्थन पर ही निर्भर है। मुख्य रूप से विकासशील देश स्वयं भारत भी सुरक्षा परिषद् का एक स्थायी सदस्य बनने का बहुत ही इच्छुक रहा है। विश्व की जनसंख्या का 1/5वाँ हिस्सा भारत में निवास करता है। लोकतंत्र के मामले में भी भारत, विश्व का सबसे बड़ा देश है। संघ के अनेक शांति प्रयासों में भारत ने हमेशा सकारात्मक ठोस प्रयास किये है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की अर्थव्यवस्था ने सराहनीय जोर पकड़ा है। संघ के बजट में भी हमेशा योगदान दिया है। इसलिए भारत भी चाहता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद में वह भी वीटों धारी सदस्य बने। परन्तु कुछ देश भारत के परमाणु हाथियारों को लेकर चिंतित होने के साथ अमैत्रीपूर्ण संबंधों के चलते नहीं चाहते कि भारत संघ का स्थायी सदस्य बने। पाकिस्तान के साथ भारत के संबधों को देखते हुये कुछ देशों का मानना है कि स्थायी सदस्य के रूप में भारत की संघ में भूमिका प्रभावशाली नहीं हो पायेंगी। साथ ही कुछ अन्य उभरते हुये देश जैसे–जर्मनी, जापान, दक्षिण अफ्रीका को भी शामिल करना पड़ेगा जबकि सुरक्षा परिषद् के विस्तार के मद्दे नज़र अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका का प्रतिनिधित्व आवश्यक बनता है। जो कि सुरक्षा परिषद् में नहीं है। इसलिए इन दुविधाओं को देखते हुये भारत का स्थायी सदस्य होना मुश्किल नज़र आता है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन

WTO 1995 में विश्व व्यापार के नियमों को तय करने के लिए इस संगठन की स्थापना की गई। इसके सदस्यों की संख्या 150 है, हर फैसला इसके हर सदस्य की सहमति से होता है। हालांकि अमेरिका, यूरोपीय संघ तथा जापान जैसी बड़ी आर्थिक शक्तियाँ इस संगठन से संबधित विश्व व्यापार के नियमों को अपने हितों के अनुसार बनाने के प्रयास में सफल हो गई है। विकासशील देशों को इसकी कार्यशैली से संतुष्टि नहीं है।

एक ध्रुवीय व्यवस्था में संयुक्त राष्ट्र संघ

एक ध्रुवीय विश्व में जहाँ अमेरिका सबसे शक्तिशाली देश के रूप में दिखाई देता है। और कोई गंभीर प्रतियोगी देश भी नहीं है। सुधार व बदलाव की प्रक्रियाएँ जरूरी है। साथ ही इनके सुधारों से अन्य विकासशील देशों को लाभ मिलने की आशा बंधी है।

अन्तर्राष्ट्रीय आण्विक ऊर्जा एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र संघ शांति स्थापना अभियानों का मानचित्र

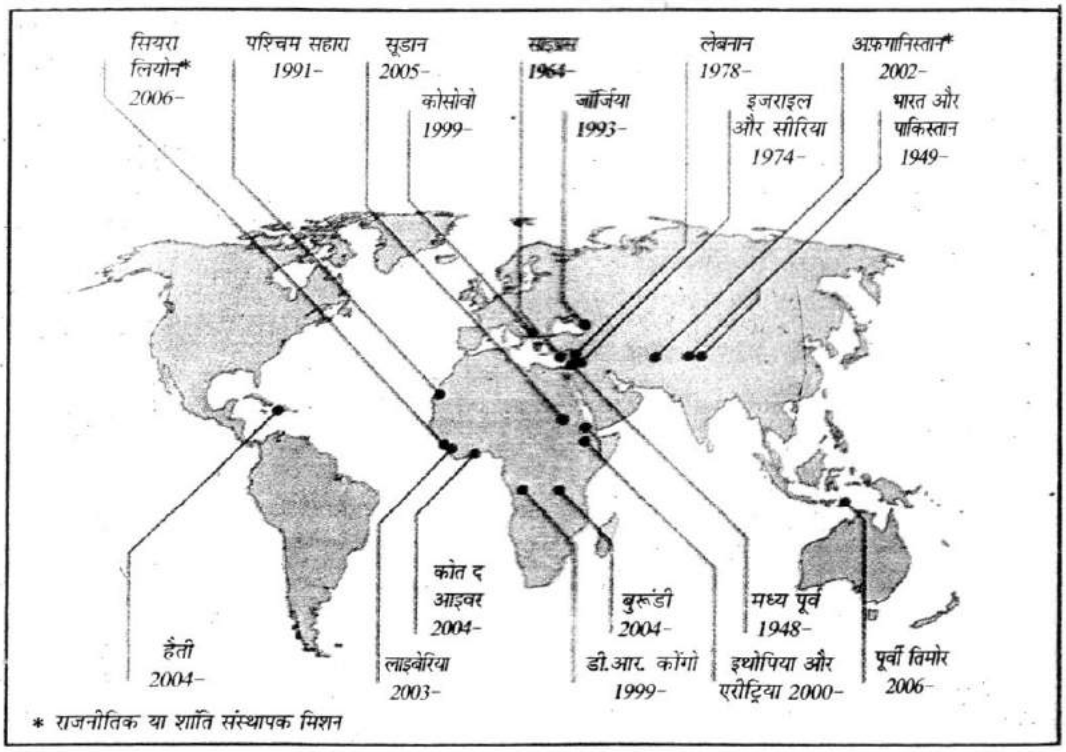

क्या संयुक्त राष्ट्रसंघ को शांति स्थापना की अपनी गतिविधियों को बढ़ाना चाहिए? विश्व के नक्शे पर उन जगहों पर एक निशान लगाइए जहाँ आप संयुक्त राष्ट्रसंघ की शांतिसेना को देखना चाहते हैं?

स्रोत: *www.un.org/depts/dhl/maplib/flag से लिए आरेख पर आधारित*

अंतर्राष्ट्रीय संगठनः पाठगत अवधारणायें

1. **संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO)**– महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संगठन
2. **आई. एम. एफ. (IMF)**– अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
3. **शीत युद्ध**– तनावपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय स्थिति जिसमें युद्ध होने के बजाय आपसी वार्ता बंद हो।
4. **डब्ल्यू एच ओ (WHO)**– विश्व स्वास्थ्य संगठन
5. **यूनिसेफ (UNICEF)**– संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपात कोश
6. **विश्व बैंक (World Bank)**– विकासशील देशों की आर्थिक मदद के लिए बनाया गया बैंक
7. **वीटो (Veto)**– सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यों को प्राप्त विशेष निषेधाधिकार।
8. **एमनेस्टी इंटरनेशल**– गैर-सरकारी संगठन जो अंतराष्ट्रीय स्तर पर अधिकारों की रक्षा करता है।

प्रश्न/उत्तर

1 अंक

1. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना किस वर्ष में हुई?
2. भारत संयुक्त राष्ट्र का सदस्य कब बना?
3. IMF का पूरा नाम क्या है?

2 अंक

1. निषेधाधिकार से आपका क्या तात्पर्य है?
2. आपके विचार में पाठ के आधार पर भारत को सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता क्यों मिलनी चाहिए?

4 अंक

1. सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यों के निषेधाधिकार को समाप्त न करने के दो मुख्य कारण क्या है?
2. विश्व में अमेरिका को महाशक्ति क्यों माना जाता है?

5 अंक

2002 से लेकर 2006 तक के संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति स्थापना के अभियानों को मानचित्र पर दर्शाओं

या

6 अंक

संयुक्त राष्ट्र संघ की संरचना के अंतर्गत प्रमुख अंगों के नाम सांकेतिक चार्ट बनाकर लिखों?

संवर्धित मूल्य

1 विश्व में शान्ति स्थापना के प्रयास को बढ़ावा देने का प्रयास करेंगे।

2 धन का सदुपयोग देश के विकास कार्यों में, करने की समझ पैदा होगी।

3 विश्वस्तर पर भारत को शांति दूत के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे।

4. निशस्त्रीकरण की नीति को बढ़ावा देगें।

5. विश्व के धरातल पर मानवीय मूल्यों व परस्पर मेलजोल को उत्साहित करने पर बल देगें।

क्रिया कलाप

1 युद्ध की स्थिति का चित्र दिखाते हुये छात्रों को UNO का महत्त्व समझाया जा सकता है।

2 धन का उपयोग युद्ध के कार्यों पर होना चाहिये या विकास के कार्यों पर, इस विषय पर चर्चा की जाऐं।

पाठ–4

सत्ता का वैकल्पिक केन्द्र

परिचय

शीतयुद्ध के अंत के बाद अर्थात् दो ध्रुवीय व्यवस्था के टूटने के बाद यूरोपीय संघ यूरोप में, एशिया में चीन व आसियान, अमेरिकी प्रभुत्व को चुनौती देने वाली सत्ता के वैकल्पिक क्रेन्द्रों के रूप में विश्व राजनीति में उभर रहे हैं।

यह केन्द्र अपने–अपने क्षेत्रों में चलने वाली ऐतिहासिक दुश्मनियों व कमजोरियों का हल क्षेत्रीय स्तर पर हल खोज़ना चाहते थे। साथ ही अपने–अपने इलाकों में अधिक शान्ति पूर्ण और सहकारी क्षेत्रीय व्यवस्था विकसित करने का प्रयास कर रहे है। 1970 के दशक उत्तरार्ध में चीन का भी आर्थिक शक्ति के रूप में उदय हुआ। चीन के उभरने से विश्व राजनीति में नाटकीय प्रभाव आया। इस अध्याय में यूरोपीय संघ, आसियान व चीन की नीतियों व विकास के कार्यों के उद्देश्यों व तौर–तरीकों पर चर्चा की गई है। साथ ही भारत व चीन के परस्पर सुधरते संबंधों पर भी प्रकाश डाला गया है।

विश्व स्तरीय राजनीति के पटल पर भारत, चीन व जापान जैसे देशों की अर्थव्यवस्थाओं के तेजी से विकास का उल्लेख किया गया है।

अधिगम परिणाम

1. * सत्ता के वैकल्पिक केन्द्रों के रूप में यूरोप में यूरोपीय संघ का विस्तार
2. * एशिया में दक्षिणी–पूर्वी एशिया (आसियान) का गठन
3. * चीन का विश्वस्तरीय अर्थव्यवस्था के रूप में उदय
4. * विश्व राजनीति पर चीन का बढ़ता प्रभाव
5. * भारत तथा चीन के बीच बदलते संबधों पर चर्चा।

विषय वस्तु

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यूरोपीय व एशिया के देशों की नष्ट होती अर्थव्यवस्था को सकारात्मक तरीके से सुधारना चाहते थे। शीत युद्ध, नाटो तथा मार्शल योजना के तहत जिस सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था को जन्म दिया। उसके अंतर्गत 1948 में यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन, 1957 में यूरोपीय आर्थिक इक्नोमिक कम्यूनिटी का गठन तथा जून 1979 में यूरोपीय संसद के लिये पहला प्रत्यक्ष चुनाव हुआ। इनके राजनीतिक स्वरूप के चलते तथा सोवियत गुट के पतन से 1992 में यूरोपीय संघ की स्थापना हुई।

यूरोपीय संघ का मानचित्र

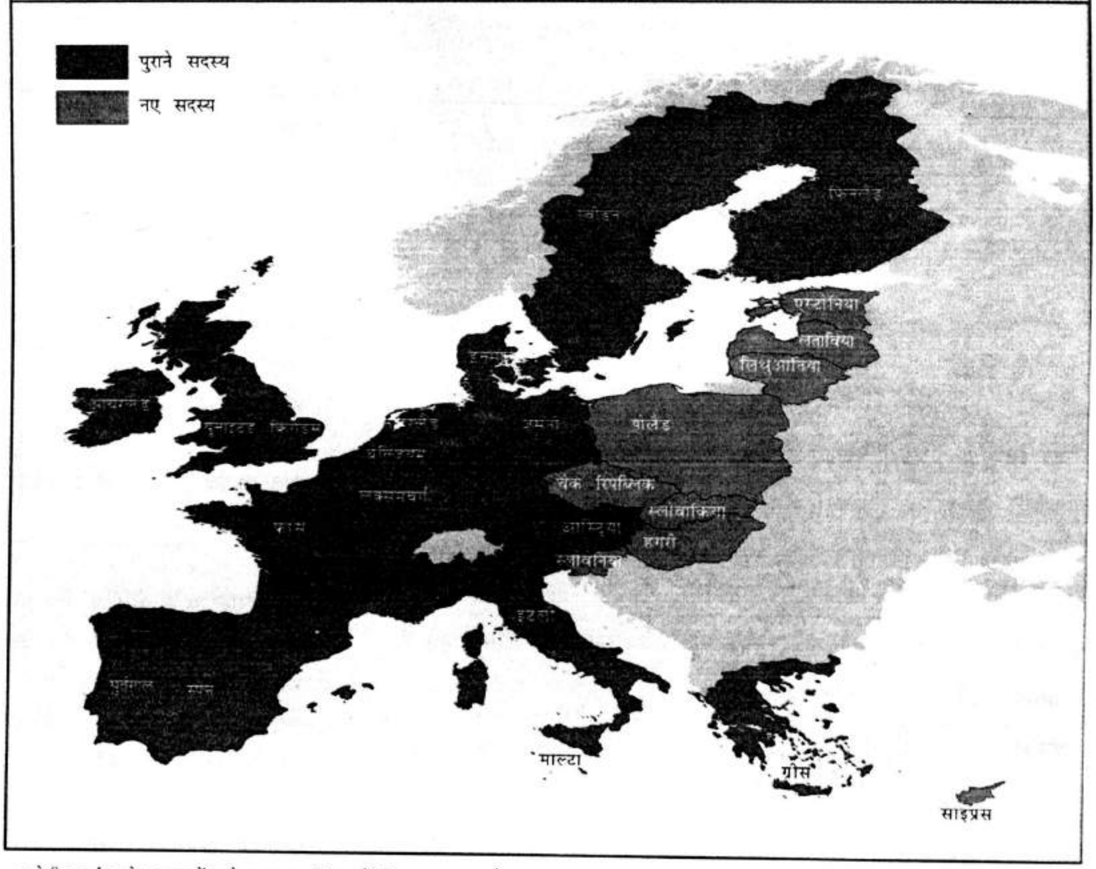

यूरोपीय संघ के सदस्यों को इस मानचित्र में दिखाया गया है।

यूरोपीय संघ–2005 तक यूरोपीय संघ सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में विश्व में सामने आया है। यह विशाल राष्ट्र राज्य की तरह काम करने लगा है। अन्य देशों के साथ संबंधों के मामले में सांझी सुरक्षा व विदेश नीति के अलावा इस संघ का अपना झण्डा, अपना राष्ट्रीय गान, अपने देश का स्थापना दिवस तथा स्वयं की मुद्रा भी सांझी की।

इसकी आर्थिक शक्ति का प्रभाव नजदीकी देशों में ही नहीं बल्कि एशिया और अफ्रीका के दूर-दराज के देशों में भी पड़ने लगा था।

यूरोपीय संघ 'विश्व व्यापार संगठन' के अर्न्तगत एक समूह के रूप में काम कर रहा है। साथ ही इसकी कूटनीति व सैनिक शक्ति पूरी दुनियाभर में प्रभावशाली है।

परन्तु कुछ विदेशी मामलों व रक्षा के मुद्दों पर आर्थिक रूप से क्षमता सीमित भी हो जाती है। उदाहरण के लिए डेनमार्क व स्वीडन ने संघ की मास्ट्रिस्ट संधि और सांझी यूरोपीय मुद्रा यूरो को मानने से इंकार कर दिया। 2003 में संघ की सांझी संविधान बनाने की कोशिश भी नाकामयाब रही।

पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया का मानचित्र

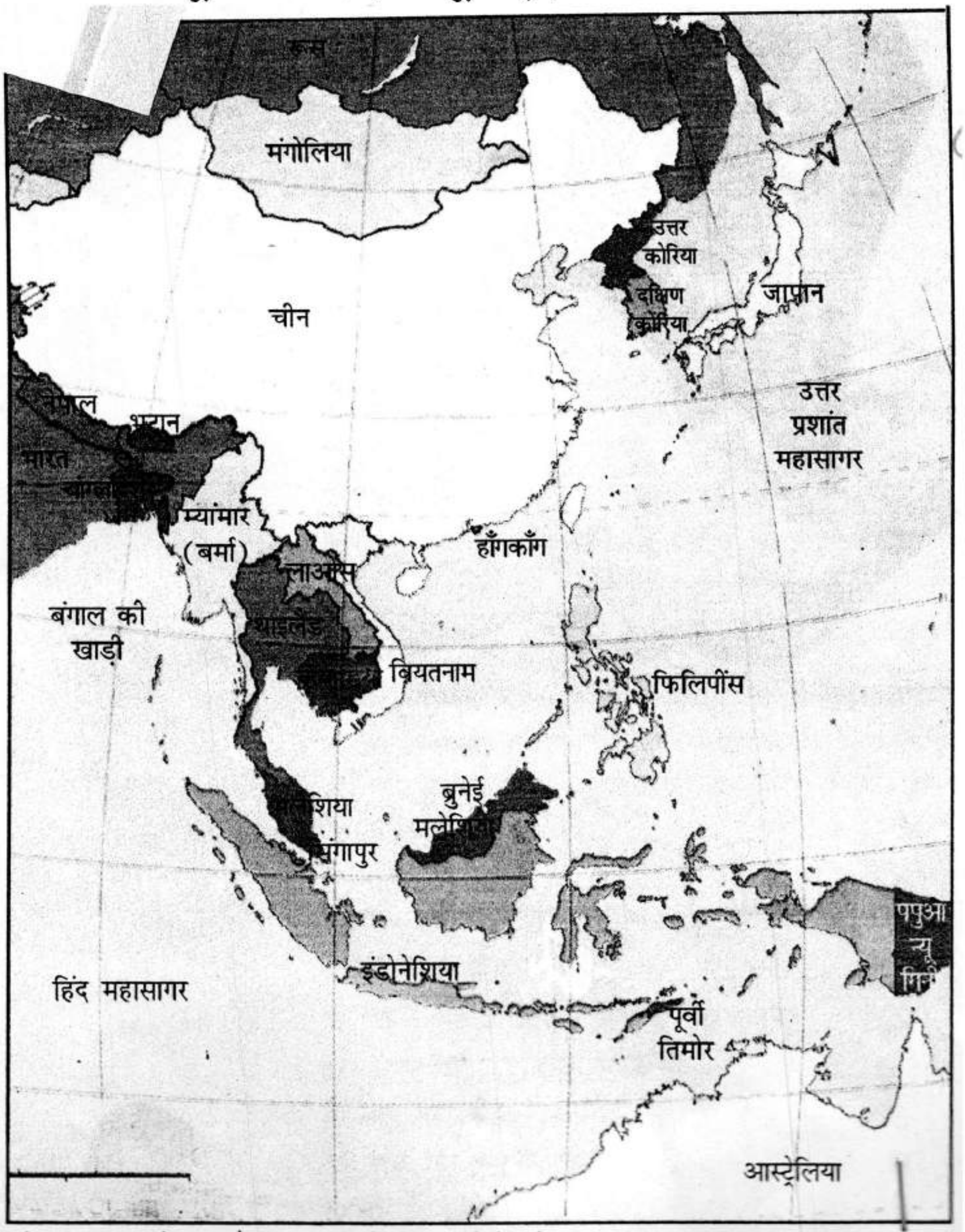

चीन, जापान, कोरिया और आसियान के सदस्य देशों को इंगित करता मानचित्र।

स्रोत: *"यूनिवर्सिटी ऑफ टेकसास लाइब्रेरीज़, आस्टिन से साभार"*

दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन (आसियान)

द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्त होने पर एशिया के दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्रों को राष्ट्र-निर्माण आर्थिक पिछड़ेपन व गरीबी से निपटने और शीत युद्ध के चलते एक सहयोग संगठन का निर्माण करना पड़ा जो कि आसियान (ASEAN) के नाम से जाना जाता है।

1967 में एशिया के पाँच देशों इण्डोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाइलैण्ड ने बैकॉक घोषणा पर हस्ताक्षर करके इस केन्द्र की स्थापना की आगे चलकर इसकी संख्या दस हो गई।

आसियान का उद्‌देश्य–इस संगठन का मुख्य उद्‌देश्य इससे जुड़े देशों के आर्थिक सामाजिक व सांस्कृतिक विकास करना था। संयुक्त राष्ट्र संघ के नियमों का पालन करते हुए क्षेत्रीय शांति और स्थायित्व को बढ़ावा देना मुख्य उद्‌देश्य रहा है।

आसियान शैली–आसियान के कामकाज में राष्ट्रीय सार्वभौमिकता का सम्मान विशेष महत्त्व रखता है न कि यूरोपीय संघ की तरह स्वयं को अंतर्राष्ट्रीय संगठन बनाना। आसियान के देशों की सुरक्षा और विदेश नीतियों में तालमेल बनाये रखने के लिये 1994 में 'आसियान क्षेत्रीय' मंच की स्थापना की गई।

आसियान ने निवेश, श्रम और सेवाओं के मामलों में मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाने पर भी ध्यान दिया है। एशिया का एकमात्र संगठन आसियान ही है जो एशियाई देशों और विश्व शक्तियों को राजनैतिक और सुरक्षा मामलों पर चर्चा करने का राजनैतिक मंच प्रदान करता है।

भारत ने दो आसियान सदस्यों, सिंगापुर और थाईलैण्ड के साथ 'मुक्त व्यापार' का समझौता किया है। भारत ने 1991 में 'पूरब की और चलो की नीति अपनायी।

चीनी अर्थव्यवस्था का उदय–1978 के बाद चीन की आर्थिक सफलता ने पूरे विश्व में तीसरे बड़े केन्द्र के रूप में इस देश की पहचान बनाई है। चीन की विशाल आबादी, बड़ा भू-भाग, संसाधन, क्षेत्रीय अवस्थिति और राजनैतिक प्रभाव इस आर्थिक वृद्धि के साथ मिलकर चीन के विश्वस्तरीय प्रभाव को कई गुणा बढ़ा देते हैं।

विकास की दर को सुदृढ़ करने के लिए न केवल अमेरिका से संबंधों को सुधारा बल्कि आधुनिकीकरण के प्रस्ताव रखे। ये सुधार कृषि, उद्योगों, सेना, विज्ञान व प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित थे।

1978 में खुले द्वार की नीति की घोषणा भी की। 1982 में खेती का तथा 1998 में उद्योगों का निजीकरण किया गया। विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) के निर्माण से विदेशी-व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। सबसे अधिक प्रशंसनीय भूमिका चीन की रही है।

हालांकि चीन में बेरोजगारी व भ्रष्टाचार के मामले बढ़े हैं परन्तु क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर चीन शक्तिशाली आर्थिक शक्ति बनकर उभरा है।

1949 की साम्यवादी क्रांति के बाद चीन ने सोवियत संघ से प्रेरित होकर अर्थव्यवस्था का समाजवादी मॉडल अपनाया। आर्थिक रूप से पिछड़े साम्यवादी चीन ने पूँजीवादी दुनिया से अपने रिश्ते तोड़ लिए।

उन्नत तकनीक का आयात व विदेशी मुद्रा की कमी।

बेरोजगारी का बढ़ना।

जनकल्याण की योजना पर अधिक खर्च।

अर्थव्यवस्था का खस्ताहाल।

अप्रैल1951—पश्चिमी यूरोप के छह देशों—फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, इटली, बेल्जियम, नीदरलैंड और लक्जमबर्ग ने पेरिस संधि पर दस्तखत करके यूरोपीय कोयला और इस्पात समुदाय का गठन किया।

मार्च 1957—इन्हीं छह देशों ने रोम की संधि के माध्यम से यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC) और यूरोपीय एटमी ऊर्जा समुदाय (Euratom) का गठन किया।

जनवरी 1973—डेनमार्क, आयरलैंड और ब्रिटेन ने भी यूरोपीय समुदाय की सदस्यता ली।

जून 1979—यूरोपीय संसद के लिए पहला प्रत्यक्ष चुनाव।

जनवरी 1981—यूनान (ग्रीस) ने यूरोपीय समुदाय की सदस्यता ली।

जून 1985—शांगेन संधि ने यूरोपीय समुदाय के देशों के बीच सीमा नियंत्रण समाप्त किया।

जनवरी 1986—स्पेन और पुर्तगाल भी यूरोपीय समुदाय में शामिल हुए।

अक्टूबर 1990—जर्मनी का एकीकरण।

फरवरी 1992—यूरोपीय संघ के गठन के लिए मास्ट्रिस्ट संधि पर दस्तखत।

जनवरी 1993—एकीकृत बाजार का गठन।

जनवरी 2002—नई मुद्रा यूरो को 12 सदस्य देशों ने अपनाया।

मई 2004—साइप्रस, चेक गणराज्य, एस्टोनिया, हंगरी, लताविया, लिथुआनिया, माल्टा, पोलैंड, स्लोवाकिया और स्लोवेनिया भी यूरोपीय संघ में शामिल।

जनवरी 2007—बुल्गारिया और रोमानिया यूरोपीय संघ में शामिल। स्लोवेनिया ने यूरो को अपनाया।

चीन के साथ भारत के संबंध

भारत और चीन पश्चिमी साम्राज्यवाद से पहले एशिया की महाशक्ति के रूप में न केवल आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी प्रभावशाली थे, फिर भी कभी आपस में टकराये नहीं थे।

1950 की शुरूआत में हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा लोकप्रिय हुआ। परन्तु 1959 में तिब्बत और 1962 में चीन के साथ सैन्य संघर्ष के कारण दोनों देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों पर बुरा प्रभाव पड़ा। फलतः 1962 के चीन के सैनिक हमले से भारत की पराजय हुई। 1981 में सीमा विवादों को सुलझाने का प्रयास शुरू हुआ।

शीतयुद्ध के समाप्त होने के बाद से भारत व चीन के संबंधों में सुधार आना शुरू हुआ।

1988 में राजीव गाँधी के चीन दौरे से दोनों के संबंधों में सुधार आया। दोनों ही देशों ने विश्व व्यापार संगठन जैसे अंर्तराष्ट्रीय आर्थिक संगठनों के संबंध में भी एक जैसी नीतियाँ अपनाई है।

चीन व भारत के नेता दिल्ली व बींजिग का दौरा करते रहते हैं। साथ ही एक दूसरे को करीब से जानने भी लगे है। 1999 से भारत और चीन के बीच 30% की दर से सालाना व्यापार बढ़ा है। 1992 में 33 करोड़ 80 लाख डालर का द्वि-पक्षीय व्यापार हुआ था। 2006 यह बढ़कर 18 अरब डालर हो गया था। 2006 में चीन के राष्ट्रपति हू जिन्ताओं

के भारत दौरे में कई समझौतों पर हस्ताक्षर हुये जैसे की विदेशों में ऊर्जा सौदा हासिल करने का मसला।

जापान–द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद एशिया के राज्य जापान ने बड़ी तेजी से प्रगति की है। जापान की अर्थव्यवस्था विश्व की दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है। एशिया के देशों में जापान Group–8 के देशों में शामिल है।

सोनी, पैनासोनिक, कैनन, सुजुकी, होंडा, टयोटा और माज्दा आदि प्रसिद्ध जापानी ब्रांड अपने उच्च प्रौद्योगिक उत्पाद के लिये विश्व भर में प्रसिद्ध है।

जापान ऐसा देश है जिसे द्वितीय विश्व युद्ध में परमाणु बम की तबाही झेलनी पड़ी। इसके बावजूद जापान संयुक्त राष्ट्र संघ के बजट में 20 प्रतिशत योगदान करता है। 1951 से जापान का अमेरिका के साथ सुरक्षा गठबंधन है।

जापान के संविधान के अनुच्छेद 9 के अनुसार 'राष्ट्र के संप्रभु अधिकार के रूप में' युद्ध को तथा अंतर्राष्ट्रीय विवादों का सुलझाने ने बल-प्रयोग अथवा धमकी से काम लेने के तरीके का, जापान के लोग हमेशा के लिये त्याग करते हैं। 2006 में भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के जापान दौरे में कुछ समझौते पर हस्ताक्षर किये गये।

2014 में प्रधानमंत्री मोदी के जापान दौरे में भारत को $ 35 billion अगले 5 साल तक देने का वादा भी किया गया।

4–पाठगत अवधारणायें

1. **वैकल्पिक केन्द्र**–विशेष रूप से प्रस्तुत समाधान की बजाय किसी भी समस्या का कोई अन्य हल
2. **मुक्त द्वार नीति**–चीन द्वारा 1978 में अपनी अर्थव्यवस्था को 'मुक्त द्वार नीति' अपनाते हुये विश्व में चरणबद्ध तरीके से खोल दिया।
3. **मार्शल योजना**–अमेरिका ने यूरोप की अर्थव्यवस्था के पुर्नगठन के लिये अपनाई गई योजनाओं को मार्शल योजना कहा जाता है।
4. NATO–(**North Atlantic Treaty Organisation**) 1949 में अमेरिका ने 'नाटो' के तहत् एक सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था को स्थापित किया जिसके अंतर्गत किसी भी बाहरी आक्रमण को सामूहिक रूप से रोका जा सके।
5. SEZ—(**Special Economic Zone**) चीन द्वारा व्यापार के नये कानून तथा विशेष आर्थिक क्षेत्रों के निर्माण से विदेशी व्यापार में वृद्धि की गई।
6. **शॉक थेरेपी**–राष्ट्र की मुद्रा नीति व मूल्यों पर सरकार का नियत्रंण कम करना तथा अन्य राज्यों के लिये उदारीकरण की नीति अपनाना।

यूरोपीय एकता के महत्त्वपूर्ण पड़ाव

April 1951— में पश्चिमी यूरोप के 6 देशों फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, इटली, बैल्जियम, नीदरलैण्ड और लक्जमबर्ग ने पेरिस संधि पर हस्ताक्षर करके यूरोपीय कोयला और इस्पात समुदाय का गठन किया।

March 1957—इन्हीं उपरोक्त 6 देशों ने रोम की संधि के द्वारा (EEC) यूरोपीय आर्थिक समुदाय व यूरोपीय एटमी ऊर्जा समुदाय (Euratom) का गठन किया।

January 1973—डेनमार्क, आयरलैंड व ब्रिटेन ने भी यूरोपीय संगठन की सदस्यता की।

June 1979—यूरोपीय संसद का प्रत्यक्ष चुनाव हुआ।

Januaray 1981—यूनान (Greece) ने यूरोपीय समुदाय की सदस्यता ली।

5. प्रश्न उत्तर

1 अंक

1. यूरोपीय संघ की मुद्रा को किस नाम से जाना जाता है?
2. चीन किस वर्ष में विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बना?
3. जापान के दो मुख्य औद्योगिक ब्रॉण्ड के नाम लिखो?

2. अंक

1. भारत ने जिन दो देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौता किया उनके नाम लिखो?
2. 1970 में चीन ने अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये कौन से दो निर्णय लिये?

4. अंक

1. आसियान विजन 2020 की मुख्य बातें क्या है?
2. चीन की बढ़ती हुई ताकत को दर्शाता हुआ कार्टून बनाये (Pg 59)

5 अंक

1. यूरोपीय संघ के पुराने व नये सदस्यों को दर्शाते हुये एक मानचित्र (Map) बनायें

   अथवा

   पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया का मानचित्र बनाये।

6 अंक

– क्या चीन व भारत की मौजूदा अर्थव्यवस्थायें एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था को चुनौती देने में सक्षम हैं? विस्तार से लिखो।

6. क्रियाकलाप

* यूरोपीय संघ तथा आसियान के झंडे के प्रतीक चिन्ह के चित्र बनाकर यह वर्णन करें कि ये क्या दर्शाना चाहते हैं?
* आसियान के सदस्यों के उद्देश्यों व संबंधों को मंच पर प्रस्तुतीकरण करते हुये आपस में विस्तार से चर्चा करें?

7. संवर्धित मूल्य

1. विश्व शांति व सुरक्षा के वैकल्पिक दृष्टिकोण अपनाने की चेष्टा पर ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है।
2. भारत को विश्वस्तरीय मंच पर अग्रिम श्रेणी में लाने का प्रयास करेंगे।
3. छात्रों को यह शिक्षा दी जा सकती है कि देश के विकास से प्राप्त धन का सदुपयोग युद्ध पर खर्च करने की बजाय देश की प्रगति एवं विकास पर लगाया जाना चाहिये।
4. सभी विकासशील देश आपस में परस्पर सौहार्द से अपने देश को आगे ले जाने का प्रयास करेंगे ।
5. कोई भी देश युद्ध की नीति में विश्वास नहीं रखना चाहता इस विषय पर चर्चा की जा सकती है।

पाठ-5

भारत के विदेश संबंध

परिचय

जिस समय भारत में अपनी स्वतंत्रता को प्राप्त किया उस समय अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ चुनौतीपूर्ण थीं, क्योंकि महायुद्ध की तबाही से दुनिया बाहर निकली थी और विश्व के सामने पुनर्निर्माण का सवाल प्रमुख था, इसी युग में उपनिवेशवाद की समाप्ति के फलस्वरूप दुनिया में नए देश उभर रहे थे, एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन बनाने के प्रयास हो रहे थे, नव-स्वतंत्र राष्ट्रों के सामने दोहरी चुनौती थी एक लोकतंत्र को कायम रखना और दूसरा जनता की भलाई करना, भारत के सामने इनके अलावा भी कुछ चिंताएँ थीं क्योंकि अंग्रेजी सरकार अपने पीछे अंतर्राष्ट्रीय विवादों की एक विरासत छोड़ गई थी जिनमें गरीबी को मिटाने, और बँटवारे के कारण उत्पन्न दबाव को कम करना, इनमें प्रमुख थे।

स्वतंत्र भारत का जन्म विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि में हुआ था, उसने अपने सामने अपनी विदेश नीति में अन्य देशों की संप्रभुता का सम्मान करने और शांति कायम करके अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा, एक देश की विदेश नीति पर घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय वातावरण का असर पड़ता है, विकासशील देशों के पास अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के भीतर अपनी समस्याओं को पूरा करने के लिए संसाधनों की कमी थी जिसके चलते उन देशों का जोर इस बात पर होता था कि उनके पड़ोस मे अमन-चैन कायम रहे और विकास होता रहे, जिसके लिए विकासशील देश आर्थिक और सुरक्षा की दृष्टि से ज़्यादा ताकतवर देशों पर निर्भर थे, अनेक विकासशील देशों ने अपनी विदेश नीति इन्हीं ताकतवर देशों की मर्जी को ध्यान में रखकर बनाई क्योंकि इन देशों से उन्हें अनुदान अथवा क़र्ज़ मिल रहा था, इस वजह से दुनिया के देश दो खेमों में बँट गए। एक खेमा संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके समर्थक देशों का था तो दूसरा खेमा सोवियत संघ के प्रभाव वाले देशों का था, भारत ने जब आज़ादी प्राप्त की तो दुनिया तेजी से दो खेमों में विभाजित होती जा रही थी, भारत इन दोनों खेमों में से किसी में भी सम्मिलित नहीं हुआ और उसने अपनी विदेश नीति को शांतिपूर्ण ढ़ंग से लागू करने और इसके द्वारा अंतर्राष्ट्रीय झगड़ों से बचे रहने का सफल प्रयास किया।

अधिगम परिणाम

1. छात्र भारत की विदेश नीति के निर्माण को समझ पाएँगे।
2. छात्र भारत और उसके पड़ोसियों के बीच संघर्ष तथा सहयोग में विदेश नीति की समीक्षा कर पाएँगे।
3. छात्र विश्व महाशक्तियों से भारत की विदेश नीति द्वारा संबंधों की समझ का विकास कर पाएँगे।
4. छात्र गुटनिरपेक्षता की आवश्यकता का बोध कर पाएँगे।

गुटनिरपेक्षता की नीति

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन दुनिया में औपनिवेशिक और साम्राज्यवाद के विरूद्ध चल रहे संघर्षों का एक हिस्सा था। इस

आंदोलन का असर एशिया और अफ्रीका के कई मुक्ति आन्दोलनों पर हुआ, स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले भी भारत के राष्ट्रवादी नेता दुनिया के अन्य उपनिवेशों में मुक्तिसंग्राम चला रहे नेताओं के संपर्क में थे, उनके सभी नेता आखिर उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विरूद्ध लड़ाई लड़ रहे थे, सुभाष चंद्र बोस जिन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इंडियन नेशनल आर्मी (INA) को बनाया था। इससे साफ जाहिर होता है कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारत के संबंध विदेशों में रह रहे भारतीयों से बन चुके थे। भारत स्वतंत्रता संग्राम या आंदोलन जिन विचारों से प्रेरित था उनका असर भारत की विदेश नीति पर भी पड़ा। भारत को स्वतंत्रता शीतयुद्ध के शुरूआती सालों में मिली उस समय विश्व दो खेमों में बंट रहा था इसमें पहले खेमे का अगुवा संयुक्त राज्य अमेरीका था तो दूसरे का सोवियत संघ दोनों के बीच आर्थिक, राजनीतिक और सैनिक टकराव जारी थे। परमाणु हथियारों का निर्माण शुरू हो चुका था। देशों को आज़ाद करने की प्रक्रिया भी आरंभ हो चुकी थी इन सभी बातों के बीच भारतीय नेताओं को अपने राष्ट्रहित भी साधने थे।

नेहरू की भूमिका

भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रीय एजेंडा तय करने में निर्णायक भूमिका निभाई। वह भारत के पहले विदेश मंत्री थे। उनका प्रभाव भारत की विदेश नीति की रचना और क्रियान्वन पर गहरा असर पड़ा। नेहरू की विदेश नीति के 3 बड़े उद्देश्य थे :

- कठिन संघर्ष से प्राप्त संप्रभुता को बचाए रखना।
- क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखना।
- और तेज रफ्तार से आर्थिक विकास करना।

नेहरू इन उद्देश्यों को गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाकर हासिल करना चाहते थे। इन दिनों देश में कुछ पार्टियाँ और समूह ऐसे भी थे जिनका मानना था कि भारत को अमेरिकी खेमे के साथ ज्यादा नजदीकी बढ़ानी चाहिए, क्योंकि उसकी प्रतिष्ठा लोकतंत्र के हिमायती के रूप में थी। साम्यवाद के विरोधी कुछ राजनीतिक पार्टियाँ यह चाहती थीं कि भारत अपनी विदेश नीति अमेरिका के पक्ष में बनाएँ ऐसे दलों में जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी प्रमुख थीं।

दोनो खेमों से दूरी

भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन किया क्योंकि भारत अपनी विदेश नीति में शांतिपूर्ण विश्व का सपना देख रहा था। भारत में इसके लिए विश्वयुद्ध से उपजे तनाव को कम करने की कोशिश की और संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति अभियानों में अपनी सेना को भी भेजा। शीतयुद्ध के दौरान भारत किसी भी खेमे में शामिल नहीं हुआ। भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति को अपना आदर्श बनाया और संतुलन साधने की कठिन कोशिश थी, और कभी-कभी संतुलन बहुत कुछ हो भी नहीं हो पाता था। 1956 में जब ब्रिटेन ने स्वेज नहर के मसले को लेकर मिस्र पर आक्रमण किया तो भारत में इस नव-औपनिवेशिक हमले के विरूद्ध विश्वव्यापी विरोध की अगुआई की, लेकिन इसी साल जब सोवियत संघ ने हंगरी पर आक्रमण किया था तो भारत ने सोवियत संघ के इस कदम की सार्वजनिक निंदा नहीं की। इस प्रकार भारत में अंतर्राष्ट्रीय मामलों में स्वतंत्र रवैया अपनाया। उसे दोनों खेमो के देशों ने सहायता और अनुदान दिए।

इसी बीच भारत विकासशील देशों की गुटनिरपेक्षता की नीति के बारे में आश्वस्त करने में लगा था कि पाकिस्तान अमेरिकी नेतृत्व वाले सैनिक गठबंधन में शामिल हो गया। इस वजह से 1950 के दशक में भारत-अमेरिकी संबंधों

में खटास पैदा हो गई। अमेरिका, सोवियत संघ से भारत की बढ़ती हुई दोस्ती को लेकर भी नाराज़ था।

एफ्रो-एशियाई एकता

नेहरू के दौर में भारत ने एशिया और अफ्रीका के 9 स्वतंत्र देशों के साथ संपर्क बनाएँ। 1940 और 1950 के दशकों में नेहरू बड़े मुखर स्वर मे एशियाई एकता की पैरवी करते रहे। नेहरू की अगुवाई में भारत ने 1947 के मार्च में ही एशियाई संबंध सम्मेलन (एशिया रिलेशन कॉन्फ्रेंस) का आयोजन कर दिया था जबकि कभी भारत को आज़ादी मिलने में 5 महीने बाकी थे। भारत ने इंडोनेशिया की आज़ादी के लिए भरपूर प्रयास किए क्योंकि भारत यह चाहता था कि इंडोनेशिया डच औपनिवेशिक शासन से यथासंभव मुक्त हो जाए। 1949 में इंडोनेशिया के स्वतंत्रता संग्राम के समर्थन में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन भारत ने किया। भारत में नस्लवाद का खास कर दक्षिण अफ्रीका में जारी रंगभेद का विरोध किया। इंडोनेशिया के एक शहर बांडुंग में एफ्रो-एशियाई सम्मेलन 1955 में बुलाया। अफ्रीका और एशिया के नव-स्वतंत्र देशों के साथ भारत के बढ़ते संपर्क का इसे चरम बिंदु माना जाता है। बांडुंग सम्मेलन में ही गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव पड़ी। गुटनिरपेक्ष आंदोलन का पहला सम्मेलन 1961 में सितंबर में बेलग्रेड में हुआ। गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना में नेहरू की बहुत अहम् भूमिका थी।

चीन के साथ शांति और संघर्ष

यह बात उल्लेखनीय है कि भारत ने चीन के साथ अपने रिश्ते की शुरूआत बड़े दोस्ताना ढंग से की। चीनी क्रांति 1949 में हुई थी। इस क्रांति के बाद भारत चीन की कम्युनिस्ट सरकार को मान्यता देने वाले पहले देशों में से एक था। नेहरू के कुछ सहयोगी जैसे सरदार वल्लभ भाई पटेल को आशंका थी कि आने वाले दिनों में चीन भारत पर आक्रमण कर सकता है। लेकिन नेहरू सोचते थे कि भारत चीन पर आक्रमण की संभावना दूर-दूर तक नहीं है। शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के पाँच सिद्धांतों अर्थात् पंचशील की घोषणा भारत के प्रधानमंत्री नेहरू और चीन के प्रमुख चाऊ-एन-लाई ने संयुक्त रूप से 29 अप्रैल 1954 में की। दोनों के बीच मजबूत संबंध की दिशा में यह एक अगला कदम था।

1962 में चीन का आक्रमण

चीन के साथ भारत के दोस्ताना रिश्तों में दो कारणों से खटास आई। चीन ने 1950 तक तिब्बत पर कब्जा कर लिया इससे भारत और चीन के बीच ऐतिहासिक रूप से जो एक मध्यवर्ती राज्य बना चला आ रहा था वह समाप्त हो गया। चीन के इस कदम का भारत ने कभी खुले तौर पर विरोध नहीं किया लेकिन जैसे तिब्बत की संस्कृति को कुचलने की खबरें सामने आने लगी वैसे-वैसे भारत की बेचैनी भी बढ़ी। तिब्बत के धर्मगुरू दलाई लामा ने भारत से राजनीतिक शरण मांगी और सन् 1959 में भारत की ने उन्हें शरण दी। चीन ने आरोप लगाया कि भारत सरकार चीन में अंदरूनी तौर पर विरोधी गतिविधियों को हवा दे रही है।

इसके बाद भारत और चीन के बीच एक सीमा विवाद उठ खड़ा हुआ। चीन ने भारतीय क्षेत्र में पड़ने वाले 2 इलाकों जम्मू-कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र के अक्साई चीन और अरूणाचल प्रदेश के अधिकांश हिस्सों पर अपना अधिकार जमाया।

अरूणाचल प्रदेश को उस समय नेफा या उत्तर पूर्वी सीमांत कहा जाता था। 1956 से 1959 के बीच चीन ने अक्साई चीन इलाके पर कब्जा कर लिया और इस इलाके में उसने रणनीति बढ़त हासिल करने के लिए सड़क बनाई। दोनों देशों के शीर्ष नेताओं के बीच लंबी-लंबी वार्ताएँ चली लेकिन मतभेद को सुलझाया नहीं जा सका. दोनों की सेनाओं के बीच सीमा पर कई झड़पें भी हुई।

चीन में 1962 के अक्टूबर में दोनों विवादित क्षेत्रों पर बड़ी तेजी तथा व्यापक स्तर पर हमला किया। पहला हमला एक हफ्ते तक चला। इस दौरान चीनी सेना ने अरूणाचल प्रदेश के कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया। हमले का अगला दौर नवंबर महीने में शुरू हुआ और लद्दाख से लगे पश्चिमी मोर्चे पर भारतीय सेना ने चीन की बढ़त को रोका लेकिन पूर्व में चीनी सेना आगे बढ़ते हुए असम के मैदानी हिस्से तक पहुँच गई। आखिरकार चीन ने एकतरफा युद्धविराम घोषित किया और चीन की सेनाएं उसी मुकाम पर लौट गई जहाँ वे हमले से पहले के वक्त तैनात थीं।

चीनी हमले के संकट से उभरने के लिए भारत को अमेरिका और ब्रिटेन दोनों से सैन्य मदद की गुहार लगानी पड़ी, जिससे उसकी छवि को देश और विदेश में बड़ा झटका लगा। सोवियत संघ इस संकट की घड़ी में तटस्थ बना रहा। चीन युद्ध से भारतीय स्वाभिमान को ठेस पहुँची। कुछ प्रमुख सैन्य कमांडरों ने या तो इस्तीफा दे दिया या अवकाश ग्रहण कर लिया। नेहरू के नजदीकी सहयोगी और तत्कालीन रक्षा मंत्री वी.के. कृष्णा मेनन को भी मंत्रिमंडल छोड़ना पड़ा। नेहरू की छवि भी थोड़ी धूमिल हुई क्योंकि वे चीन के इरादों को समय रहते भाँप नहीं सके और सैन्य तैयारी न कर पाने को लेकर नेहरू की आलोचना हुई। इसी कारणवश उनकी सरकार के विरूद्ध पहली बार अविश्वास प्रस्ताव लाया गया जिस पर लोकसभा में चर्चा भी हुई इसके तुरंत बाद कांग्रेस ने कुछ महत्त्वपूर्ण उप-चुनावों में हार का मुँह देखा और देश का राजनीतिक नक्शा बदल गया।

भारत-चीन संघर्ष का असर केवल सरकार पर ही नहीं विपक्षी दलों पर भी पड़ा। इस युद्ध और चीन-सोवियत संघ के बीच बढ़ते मतभेदों से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के अंदर बड़ी उठापटक मची। सोवियत संघ का पक्षधर खेमा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में ही बना रहा और उसने कांग्रेस के साथ नजदीकी बढ़ाई। दूसरा खेमा जो चीन का पक्षधर था उसने मार्क्सवादी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई एम.) बनाई। चीन युद्ध के कारण मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के कई नेताओं को चीन का पक्ष लेने की वजह से गिरफ्तार किया गया।

चीन युद्ध के कारण भारतीय नेता पूर्वोत्तर की डावांडोल स्थिति के प्रति सचेत हुए, क्योंकि यह इलाका अत्यंत पिछड़ी दशा में था ओर अलग-थलग पड़ गया था। चीन युद्ध के तुरंत बाद इस इलाके को नई शक्ल में ढालने की कोशिश शुरू की गई। नागालैंड को प्रांत का दर्जा दिया गया, मणिपुर और त्रिपुरा हाँलाकि केंद्र शासित प्रदेश थे लेकिन उन्हें अपनी विधानसभा के निर्वाचन का अधिकार मिला।

पाकिस्तान के साथ युद्ध और शांति

1947 में कश्मीर में भारत और पाकिस्तान की सेनाओं के बीच एक छाया युद्ध छिड़ गया था। बहरहाल यह संघर्ष व्यापक युद्ध का रूप न ले सका। यह मसला फिर संयुक्त राष्ट्र संघ के हवाले कर दिया गया। कश्मीर के सवाल पर हुए संघर्ष कि बावजूद भारत और पाकिस्तान की सरकारों के बीच सहयोग संबंध कायम हुए। दोनों सरकारों ने मिलजुलकर प्रयास किया कि बँटवारे के समय जो महिलाएँ अपहृत हुई थी उन्हें अपने परिवारों के पास वापस लौटाया जा सके। नदी जल के बँटवारे को लेकर चला आ रहा लंबा विवाद विश्व बैंक की मध्यस्ता से सुलझा लिया गया।

नेहरू और जनरल अयूब खान ने 'सिंधु नदी संधि' पर 1960 में हस्ताक्षर किए। भारत–पाक संबंधों में गर्मी के बावजूद इस संधि पर ठीक–ठीक अमल होता रहा। दोनों देशों के बीच गंभीर सैन्य संघर्ष की शुरूआत 1965 में हुई जिस समय अप्रैल में पाकिस्तान ने गुजरात के कच्छ इलाके के रण में सैनिक हमला बोला। उसके बाद जम्मू–कश्मीर में उसने सितंबर के महीने के बड़े पैमाने पर हमला किया। पाकिस्तान के नेताओं को उम्मीद थी कि जम्मु–कश्मीर की जनता उनका समर्थन करेगी लेकिन ऐसा हुआ नहीं। कश्मीर के मोर्चे पर पाकिस्तानी सेना की बढ़त को रोकने के लिए प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने पंजाब की सीमा की तरफ से जवाबी हमला करने के आदेश दिए। दोनों देशों की सेनाओं के बीच गंभीर लड़ाई हुई और भारतीय सेना आगे बढ़ते हुए लाहौर के नजदीक तक पहुंच गई। इस लड़ाई का अंत संयुक्त राष्ट्र संघ के हस्तक्षेप के कारण हुआ। बाद में भारतीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तानी के जनरल अयूब खाँन के बीच 1966 में ताशकंद समझौता हुआ। सोवियत संघ ने इसमें मध्यस्थ की भूमिका निभाई। इस युद्ध के कारण यूं तो पाकिस्तान को बहुत ज़्यादा सैन्य क्षति भारत द्वारा पहुँची, परंतु युद्ध में भारत की कठिन आर्थिक स्थिति पर भी ज़्यादा बोझ पड़ा।

बांग्लादेश युद्ध 1971

1970 में पाकिस्तान के सामने एक गहरा अंदरूनी संकट खड़ा हो गया। पाकिस्तान के पहले आम चुनाव में कोई साफ़ जनादेश नहीं आया। जुल्फिकार अली भुट्टो की पार्टी पश्चिमी पाकिस्तान में जबकि शेख मुजीबुर्रहमान की पार्टी अवामी लीग पूर्वी पाकिस्तान में कामयाब हुई। क्योंकि पूर्वी पाकिस्तान के लोगों के साथ पश्चिमी पाकिस्तान का सौतेला रवैया इसके लिए जिम्मेदार था। इसलिए पूर्वी पाकिस्तान के लोगों ने अवामी लीग को वोट दिया। अवामी लीग ने एक परिसंघ बनाने की मांग रखी जिसे पाकिस्तान के शासकों ने नहीं माना और ना ही इस जनादेश को स्वीकार किया। जब सन् 1971 में पाकिस्तानी सेना ने शेख मुजीबुर्रहमान को गिरफ्तार कर लिया और पूर्वी पाकिस्तान के लोगों पर जुल्म ढ़ाना शुरू किया तो इस इलाके में जिसे आज बांग्लादेश कहते हैं, अपने आप को पाकिस्तान से मुक्त कराने के लिए संघर्ष छेड़ दिया। 1971 में भारत को 80 लाख शरणार्थियों का बोझ सहना पड़ा। यही कारण था कि भारत ने बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम को नैतिक समर्थन एवं भौतिक सहायता दी जिसे पाकिस्तान ने अपने देश को तोड़ने की साज़िश करार दिया। पाकिस्तान को अमेरिका और चीन ने मदद की। अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन के सलाहकार हेनरी किसिंजर ने 1971 के जुलाई में पाकिस्तान होते हुए गुप–चुप तरीके से चीन का दौरा किया। अमेरिका–पाकिस्तान–चीन की धुरी बनते हुए देखकर भारत ने भी जवाब में सोवियत संघ के साथ शांति और मित्रता की एक 20 वर्षीय संधि पर दस्तखत किए। संधि से भारत को इस बात का आश्वासन मिला कि हमला होने की सूरत में सोवियत संघ भारत की मदद करेगा। आखिरकार 1971 के दिसंबर में भारत और पाकिस्तानी के बीच एक पूर्णव्यापी युद्ध छिड़ गया। पाकिस्तान के लड़ाकू विमानों ने पंजाब–राजस्थान पर हमले किए जबकि उसकी सेना ने अपना मोर्चा कश्मीर में खोला। जवाब में भारत ने अपनी वायुसेना, नौसेना और थल सेना के पश्चिमी और पूर्वी मोर्चे से कार्यवाही की। स्थानीय लोगों के समर्थन के बीच भारतीय सेना पूर्वी पाकिस्तान में तेजी से आगे बढ़ी। 10 दिनों के अंदर ही भारतीय सेना ने ढाका का घिराव कर लिया और पाकिस्तानी सेना ने 90000 सैनिकों के साथ आत्मसमर्पण कर दिया। बांग्लादेश के रूप में एक नए राष्ट्र का जन्म हुआ जिसके बाद भारतीय सेना ने एक तरफ़ा युद्धविराम घोषित कर दिया। इसके उपरांत 3 जुलाई 1972 को इंदिरा गाँधी और जुल्फिकार अली भुट्टो के बीच शिमला समझौते पर दस्तख़त हुए, और अमन की बहाली हुई। 1971 की जंग के बाद इंदिरा गाँधी की लोकप्रियता बढ़ी और इस जीत के बाद अधिकतर राज्यों में

विधानसभा के चुनाव हुए और अनेक राज्यों में कांग्रेस पार्टी भारी बहुमत से जीती। 1962 के बाद भारत को अपने सीमित संसाधन खासतौर से रक्षा क्षेत्र में लगाने पड़े। भारत को अपने सैन्य ढाँचे का आधुनिकीकरण करना पड़ा। चौथी पंचवर्षीय योजना 1969 शुरू हुई तो युद्ध के बाद भारत का रक्षा व्यय बहुत ज़्यादा बढ़ गए।

भारत की परमाणु नीति

भारत में सन् 1974 के मई के महीने में परमाणु परीक्षण किया। तेज गति से नेहरू ने औद्योगिकीकरण की नीति के एक महत्त्वपूर्ण बिंदु के तौर पर परमाणु कार्यक्रम को अपनाया था। हालाँकि इसकी शुरूआत 1940 के दशक के अंतिम सालों में होमी जहाँगीर भाभा के निर्देशन में हो चुकी थी। भारत शांतिपूर्ण उद्देश्यों में इस्तेमाल के लिए अणु-ऊर्जा बनाना चाहता था। नेहरू परमाणु हथियारों के विरूद्ध थे। उन्होंने महाशक्तियों पर परमाणु निशस्त्रीकरण के लिए जोर दिया। साम्यवादी शासन वाले चीन में 1964 में अक्टूबर में परीक्षण किया। अणु-शक्ति संपन्न बिरादरी यानी संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, फ्रांस, ब्रिटेन और चीन ने जो संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् के स्थाई सदस्य भी थे, दुनिया के सामने अन्य देशों पर 1968 की परमाणु अप्रसार संधि को थोपने की कोशिश की। भारत हमेशा से इसे भेदभावपूर्ण मानता रहा है। इसी कारण से भारत ने इस संधि पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया था। भारत ने जब अपना पहला परमाणु परीक्षण किया तो इसे उसने शांतिपूर्ण करार दिया। भारत का कहना था कि अणु शक्ति को सिर्फ शांतिपूर्ण उद्देश्य में इस्तेमाल करने की अपनी नीति के प्रति वह दृढ़ संकल्प है।

राजनीतिक दलों के बीच विदेश नीति के बारे में छोटे-मोटे मतभेद जरूर हैं, लेकिन भारतीय राजनीति में विभिन्न दलों के बीच राष्ट्रीय अंखडता, अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा की सुरक्षा तथा राष्ट्रीय हित के मसलों पर व्यापक सहमति है। सन् 1962 से 1971 के बीच जब भारत ने 3 युद्धों का सामना किया और उसके बाद के समय में भी जब समय-समय पर कई पार्टियों ने सरकार बनाई विदेश नीति की भूमिका पार्टी की राजनीति में बड़ी सीमित रही।

पाठगत अवधारणाएँ

1. **गुटनिरपेक्षता:** एक ऐसा आन्दोलन जिस के द्वारा विश्व के गुटों की राजनीति का भाग न बनते हुए अपने देश की उन्नति पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इन आन्दोलन को आरम्भ करने में नेहरू ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
2. **परमाणु अप्रसार संधि:** विश्व की पाँच अणु-शक्ति संपन्न राष्ट्रों द्वारा अन्य राष्ट्रों को अणु-परीक्षण करने से रोकने वाली संधि का प्रस्ताव जो 1968 में प्रस्तुत किया गया जिस पर भारत ने हस्ताक्षर करने से मना कर दिया था।
3. **विदेश नीति:** किसी देश के विदेशों से सम्बन्ध निर्धारित करने वाली नीति।
4. **पंचशील:** 29 अप्रैल 1954 को भारत तथा चीन के मध्य होने वाला समझौता जिसमें मुख्य पाँच बिंदु थे जो भारतीय विदेश नीति के भी मुख्य आधार बने।

क्रियाकलाप

- भारत तथा चीन के साथ शांति संघर्ष के बिन्दुओं की सहायता से एक प्रोजेक्ट तैयार करें।
- शिमला समझौते तथा ताशकंद समझौते पर कक्षा में वाद-विवाद का आयोजन करें।

मूल्यांकन

1. 1966 में ताशकंद समझौते पर किन शासन अध्यक्षों ने हस्ताक्षर किये थे? 1 अंक
2. चीन भारत के किन प्रदेशों पर अपना दावा करता है? 1 अंक
3. पूर्वी पाकिस्तान के किस राजनैतिक दल का नेतृत्व शैख़ मुजीबुर्रहमान करते थे? 1 अंक
4. पंचशील क्या है? यह कब अस्तित्व में आया? 2 अंक
5. भारत ने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर से क्यों इंकार किया था? 2 अंक
6. चीन के आक्रमण के बाद भारत के घटनाक्रम पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए। 4 अंक
7. बांग्लादेश युद्ध कब और क्यों लड़ा गया? 4 अंक
8. गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में भारत की भूमिका की व्याख्या कीजिये। 6 अंक

संवर्धित मूल्य

1. भारत की विदेश नीति के निर्माण का बोध।
2. भारत की पड़ोसियों के साथ विदेश नीति का बोध।
3. गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की शुरूआत के कारणों और भारत की भूमिका का बोध।

पाठ-6

समकालीन दक्षिण एशिया

परिचय

बीसवीं सदी के आखिरी सालों में जब भारत और पाकिस्तान ने खुद को परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्रों की बिरादरी में बिठा लिया तो यह क्षेत्र जिसे दक्षिण एशिया कहते हैं। अचानक पूरे विश्व की नज़र में महत्त्वपूर्ण हो उठा इसका कारण यह था कि इस इलाके में चल रहे संघर्ष, देशों के बीच सीमा विवाद, नदी जल के बंटवारे को लेकर विवाद कायम है। इसके अतिरिक्त यहाँ विद्रोह, जातीय संघर्ष और संसाधनों के बंटवारे को लेकर झगड़े हैं। इसी वजह से दक्षिणी एशिया का इलाका बड़ा संवेदनशील है और विशेषज्ञों का तो यहाँ तक मानना है कि सुरक्षा के लिहाज से यह सबसे ज्यादा ख़तरे वाला क्षेत्र है। विशेषज्ञों का मानना है कि दक्षिण एशिया के देश अगर आपस में सहयोग करें तो यह क्षेत्र विकास करके समृद्ध बन सकता है। इस अध्याय के माध्यम से यह समझने की कोशिश की जाएगी कि दक्षिण एशिया क्षेत्र के देश आपस में किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं। इस अध्याय में दक्षिण एशिया का परिचय और सभी दशों के बीच घरेलू राजनीति की चर्चा भी की जाएगी।

अधिगम परिणाम

1. छात्र दक्षिण एशिया की स्थिति को समझ पाएंगे।
2. छात्र भारत और उसके पड़ोसियों के बीच संघर्ष तथा सहयोग के कारणों की समीक्षा कर पाएँगे।
3. छात्र दक्षिण-एशिया के क्षेत्रीय संगठन की आवश्यकता व महत्त्व जान पाएँगे।
4. छात्र दक्षिण-एशिया में महाशक्तियों की रूचि का कारण समझ पाएँगे।
5. छात्र इस क्षेत्र के देशों के आंतरिक संघर्षों का मूल्यांकन कर पाएँगे।

क्या है दक्षिण एशिया?

यह प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण है कि दक्षिण एशिया है क्या? दक्षिण एशिया बांग्लादेश, मालद्वीप, भूटान, भारत, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका और अफ़गानिस्तान को इंगित करने के लिए उपयोग में आता है। दक्षिण एशिया हर अर्थ में विविधताओं से भरा हुआ इलाका है।

दक्षिणी एशिया के विभिन्न देशों में एक जैसी राजनीतिक प्रणाली नहीं है। अनेक समस्याएँ और सीमाओं के बावजूद भारत और श्रीलंका ब्रिटेन की गुलामी से आज़ाद होने के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था को सफलतापूर्वक कायम रख सके हैं। यह बात पाकिस्तान और बांग्लादेश के संदर्भ में नहीं कही जा सकती है क्योंकि दोनों ही जगहों पर सेना की तानाशाही रही है। इसी प्रकार नेपाल में 2006 तक संवैधानिक राजतंत्र था जिसके कारण इस बात का ख़तरा हमेशा

बना रहता था कि राजा अपने हाथों में कार्यपालिका की सारी शक्तियाँ ले लेगा। लेकिन नेपाल में 2006 में एक सफल जन विद्रोह हुआ और लोकतंत्र की बहाली हुई। पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल के अनुभव के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि पूरे दक्षिण एशिया में लोकतंत्र एक स्वीकृत मूल्य बन चुका है। भूटान अभी राजतंत्र है लेकिन यहाँ के राजा ने भूटान में बहुदलीय लोकतंत्र स्थापित करने की योजना की शुरूआत कर दी है द्वीपीय देश मालद्वीप 1968 तक एक सल्तनत हुआ करता था और इसी वर्ष यह गणतंत्र बना शासन की अध्यक्षात्मक प्रणाली अपनाई गई। जून 2005 मालद्वीप की संसद में बहुदलीय प्रणाली को अपनाने के पक्ष में एकमत से मतदान किया। मल्दिवियन डेमोक्रेटिक पार्टी का देश के राजनीतिक मामलों में दबदबा है परंतु 2005 के चुनावों के बाद मालद्वीप में लोकतंत्र मजबूत हुआ है क्योंकि इस चुनाव में विपक्षी दलों को कानूनी मान्यता दे दी गई है।

दक्षिण एशिया के देशों में लोकतंत्र का रिकॉर्ड मिला जुला रहा है बावजूद इसके दक्षिण एशियाई देशों की जनता लोकतंत्र की आकांक्षाओं में सहभागी है। क्षेत्र के पांच बड़े देशों में हाल ही में एक सर्वेक्षण किया गया था जिसमें आम नागरिकों का यह मानना था कि लोकतंत्र अच्छी व्यवस्था है और वे प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र की संस्थाओं का समर्थन करते हैं। इन देशों के लोग शासन के किसी और प्रकार पर लोकतंत्र को महत्त्व देते हैं। यहां यह निष्कर्ष निकलता है कि और यह मानना कि लोकतंत्र केवल विश्व के धनी देशों में फल-फूल सकता है गलत है क्योंकि दक्षिण एशिया के लोकतंत्र के अनुभवों से लोकतंत्र की वैश्विक कल्पना का दायरा बढ़ा है।

पाकिस्तान में सेना और लोकतंत्र

पाकिस्तान में पहले संविधान के बनने के बाद देश की शासन की बागडोर जनरल अयूब खाँन ने अपने हाथों में ले ली थी और जल्दी अपना निर्वाचन भी करा लिया था। उनके शासन के विरूद्ध जब जनता का गुस्सा भड़का तो उन्हें अपना पद छोड़ना पड़ा। इससे एक बार फिर सैनिक शासन का रास्ता साफ हुआ और जनरल याहियाँ खाँन ने शासन की बागड़ोर संभाली। याहियाँ खाँन के सैनिक शासन के दौरान पाकिस्तान को बांग्लादेश संकट का सामना करना पड़ा और 1971 में भारत के साथ पाकिस्तान का युद्ध हुआ। इस युद्ध के परिणाम स्वरूप पूर्वी पाकिस्तान टूट कर एक स्वतंत्र राष्ट्र बना और बांग्लादेश कहलाया। इसके बाद पाकिस्तान में जुल्फिकार अली भुट्टो के नेतृत्व में एक निर्वाचित सरकार बनी जो सन् 1971 से 1977 तक कायम रही जिसे 1977 में जनरल जियाउल हक़ ने गिरा दिया। सन् 1982 में जियाउल हक को लोकतंत्र समर्थक आंदोलन का सामना करना पड़ा। सन् 1988 में एक बार फिर बेनज़ीर भुट्टो के नेतृत्व में लोकतांत्रिक सरकार बनी उसके बाद की राजनीति बेनजीर भुट्टो की पाकिस्तान पीपल्स पार्टी और मुस्लिम लीग के आपसी होड़ के इर्द गिर्द घूमती रही। यह अवस्था 1999 तक कायम रही। 1999 में एक बार फिर जनरल परवेज मुशर्रफ ने प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की सरकार का तख्ता पलट दिया और सत्ता पर कब्ज़ा जमा लिया। 2001 में परवेज मुशर्रफ ने अपना निर्वाचन राष्ट्रपति के रूप में कराया।

पाकिस्तान में लोकतंत्र के स्थाई न होने के तीन कारण हैं–

- पहला सेना का सरकार के कार्यों में दखल
- धर्म गुरूओं का सामाजिक दखल
- तथा भूस्वामी अभिजनों का सामाजिक दबदबा

इन्हीं वजह से पाकिस्तान में निर्वाचित सरकारों को गिराकर सैनिक शासन कायम कर दिया जाता है। पाकिस्तान की भारत के साथ तनावपूर्ण स्थिति का कारण भी सेना समर्थक समूह के अधिक शक्तिशाली होने को माना जाता है और वह समय-समय पर यह कहते रहते हैं कि पाकिस्तान के राजनीतिक दलों और लोकतंत्र में खोट है। इसी आपसी रस्साकशी की वजह से पाकिस्तानी की सुरक्षा खतरे में पड़ गई है। पाकिस्तानी में लोकतंत्र पूरी तरह सफल नहीं हो सका। लेकिन इस देश में लोकतंत्र का जज़्बा बहुत मजबूती के साथ कायम है क्योंकि यहां स्वतंत्र और ताकतवर प्रेस मौजूद है और मानव अधिकार संगठन भी बहुत मजबूत है।

पाकिस्तान में लोकतंत्र मजबूती से चले इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन मिलता हुआ दिखाई नहीं देता है! अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों ने अपने-अपने स्वार्थों के चलते बीते समय में पाकिस्तानी में सेना के शासन को बढ़ावा दिया है। इन देशों को यह खतरा है कि कहीं 'विश्वव्यापी इस्लामी आतंकवाद' के चलते पाकिस्तान के परमाणु हथियार कहीं आतंकवादियों के हाथ न लग जाए इसलिए लोकतांत्रिक कमजोर सरकार के बजाए एक मजबूत सैन्य शासन अनिवार्य है। इन्हीं बातों की वजह से पाकिस्तान को यह देश पश्चिम और दक्षिणी एशिया हितों का ख्याल रखने वाला मानते हैं।

बांग्लादेश में लोकतंत्र!

1947 से 1971 तक बांग्लादेश पाकिस्तान का भाग था, अंग्रेजी राज के समय के बंगाल और असम के विभाजित क्षेत्रों से पूर्वी पाकिस्तान के रूप में यह बना था। पश्चिमी पाकिस्तान की संस्कृति और उर्दू भाषा को जब पूर्वी पाकिस्तान पर लादने का प्रयास किया गया तो इस के खिलाफ यहाँ के लोगों ने पाकिस्तान के निर्माण के तुरंत बाद अपनी संस्कृति और बंगाली भाषा के साथ हो रहे दुर्व्यवहार पर अपना विरोध जताना शुरू कर दिया। इनकी माँग थी कि प्रशासन में उन्हें न्याय उचित प्रतिनिधित्व और सत्ता में समुचित हिस्सेदारी दी जाए। पश्चिमी पाकिस्तान के प्रभुत्व के खिलाफ आज के बांग्लादेश और उस समय के पूर्वी पाकिस्तान में संघर्ष शुरू हुआ जिसका नेतृत्व शैख़ मुजीब उर रहमान ने किया और पूर्वी क्षेत्र के लिए स्वायत्तता की मांग की।

सिर्फ मुजीब-उर-रहमान के नेतृत्व वाली आवामी लीग ने 1970 के चुनावों में पूर्वी पाकिस्तान की सारी सीटों पर विजय प्राप्त की। आवामी लीग को संपूर्ण पाकिस्तान के लिए प्रस्तावित संविधान सभा में भी बहुमत प्राप्त हो गया था लेकिन सरकार पर पश्चिमी पाकिस्तान के नेताओं का दबदबा था और सरकार ने सभा को आमंत्रित करने से इंकार कर दिया। इसके बाद जब मुजीब-उर-रहमान को गिरफ्तार कर लिया गया और जनरल याहिया खाँन के सैनिक शासन में पाकिस्तानी सेना ने बंगाली जन आंदोलन को कुचलने का प्रयास किया। हजारों लोग पाकिस्तानी सेना के हाथों मारे गए। इस वजह से पूर्वी पाकिस्तान से बड़ी संख्या में लोग भारत आ गए। भारत के सामने इतनी बड़ी संख्या में आए हुए शरणार्थी को संभालने की समस्या उत्पन्न हो गई।

इस घटना के चलते भारत की सरकार ने पूर्वी पाकिस्तान के लोगों की आजादी की माँग का समर्थन किया और उन्हें वित्तीय एवं फौजी सहायता दी। परिणामस्वरूप 1971 में भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध छिड गया। युद्ध की समाप्ति, पूर्वी पाकिस्तान सेना के आत्म-समर्पण तथा एक स्वतंत्र राष्ट्र अर्थात बांग्लादेश के निर्माण के साथ हुई।

बांग्लादेश में अपना संविधान बनाकर अपने आप को एक धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक तथा समाजवादी देश घोषित कर दिया। सन 1975 में शेख-मुजीब-उर-रहमान ने संविधान में संशोधन कराए और संसदीय प्रणाली की जगह अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली को मान्यता दी। इसके उपरान्त शेख-मुजीब-उर-रहमान ने अपनी पार्टी आवामी लीग को

छोड़कर अन्य सभी दलों पर प्रतिंबध लगा दिया। जिसके कारण नवनिर्मित राष्ट्र बांग्लादेश में तनाव और संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई। 1975 के अगस्त में सेना ने बगावत कर दी और शेख-मुजीब-उर-रहमान सेना के हाथों संघर्ष में मारे गए। नए शासक के रूप में सैनिक-शासक ज़ियाउर रहमान ने अपनी बांग्लादेश नेशनल पार्टी बनाई और 1979 को चुनाव कराए जिसमें उनकी पार्टी विजयी रही। जियाउर रहमान की भी हत्या हुई और लेफ्टिनेंट जनरल एच.एम्. इरशाद के नेतृत्व में बांग्लादेश में एक और सैनिक शासन ने कमान संभाली। लेकिन बांग्लादेश की जनता जल्दी लोकतंत्र के समर्थन में उठ खड़ी हुई जिसमें छात्र आगे-आगे चल रहे थे। जनरल इरशाद ने हारकर राजनीतिक गतिविधियों की कुछ हद तक छूट दे दी। जनरल इरशाद 5 सालों के लिए राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। जनता के व्यापक विरोध के आगे झुकते हुए लेफ्टिनेंट जनरल इरशाद को सन 1990 में राष्ट्रपति पद छोड़ना पड़ा। उसके बाद से बांग्लादेश में बहुदलीय चुनावों पर आधारित प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र कायम है।

नेपाल में राजतंत्र और लोकतंत्र

नेपाल अतीत में एक हिंदू राज्य था फिर आधुनिक काल में कई सालों तक यह संवैधानिक राजतंत्र रहा। संवैधानिक राजतंत्र के दौर में नेपाल की राजनीति पार्टियाँ और जनता खुले और उत्तरदायी शासन की माँग में आवाज़ उठाते रहे परन्तु राजा ने सेना की सहायता से पूरे नेपाल के शासन पर नियंत्रण कर लिया जिस के कारण नेपाल में लोकतंत्र की राह अवरूद्ध हो गई। जनता ने लोकतंत्र समर्थन आंदोलन शुरू किया जिसके आगे झुकते हुए सन् 1990 में राजा ने नए लोकतांत्रिक संविधान की बात मान ली।

परन्तु लोकतांत्रिक सरकारों का कार्यकाल बहुत छोटा और समस्याओं से भरा रहा। 1990 के दशक में नेपाल के माओवादी नेपाल के विभिन्न क्षेत्रों में अपना प्रभाव जमाने में कामयाब रहे माओवादी राजा और सत्ताधारी अभिजन के विरूद्ध सशस्त्र विद्रोह करना चाहते थें इसी कारण से राजा की सेना और माओवादी गोरिल्लों के बीच हिंसक लड़ाई छिड़ गई। कुछ समय बाद राजा की सेना, लोकतंत्र समर्थकों, और माओवादियों के बीच त्रिकोणीय संघर्ष हुआ। सन 2002 में राजा ने संसद को भंग कर दिया और सरकार को गिरा दिया। इस तरह नेपाल में जो भी थोड़ा बहुत लोकतंत्र था उसे राजा ने समाप्त कर दिया।

अप्रैल 2006 में नेपाल में लोकतंत्र समर्थक प्रदर्शन हुए। जिसके परिणामस्वरूप पहली बार राजा ज्ञानेंद्र ने संसद को बहाल किया जिसे अप्रैल 2002 में भंग कर दिया गया था। यह संघर्ष मोटे तौर पर अहिंसक रहा। इस प्रतिरोध का नेतृत्व ''सात दलों के गठबंधन'' (सेवन पार्टी एलाइंस), माओवादी तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने किया। नेपाल में माओवादी समूहों ने सशस्त्र संघर्ष की राह छोड़ देने की बात मानी है। उनकी मुख्य माँग है कि संविधान में मूलगामी सामाजिक आर्थिक पुनर्रचना की जाए। माओवादी और कुछ राजनैतिक समूह भारत की सरकार और नेपाल के भविष्य में भारतीय सरकार की भूमिका को लेकर बहुत शंकित हैं।

श्रीलंका में जातिय संघर्ष और लोकतंत्र

हालांकि श्रीलंका में लोकतंत्र 1948 से कायम है परंतु श्रीलंका में एक बहुत बड़ी चुनौती जातिय संघर्ष की है जिसके अनुसार श्रीलंका के एक क्षेत्र को अलग राष्ट्र बनाने की मांग की जा रही है।

श्रीलंका की आज़ादी के बाद से ही यहाँ की राजनीति पर बहु-संख्यक सिंहली समुदाय के हितों की बात करने वालों का दबदबा है। यह लोग भारत छोड़कर श्रीलंका में आ बसी बड़ी तमिल आबादी के खिलाफ हैं। यह भी

उल्लेखनीय है कि तमिल लोगों का बसना श्रीलंका की आजादी के बाद भी जारी रहा। सिंहली राष्ट्रवादियों का मानना है कि श्रीलंका में तमिलों के साथ कोई रियायत नहीं बरती जानी चाहिए क्योंकि श्रीलंका केवल सिंहली लोगों का है। इसी कारण श्रीलंका में उग्र तमिल राष्ट्रवाद की आवाज बुलंद हुई और 1983 के बाद उग्र–तमिल संगठन 'लिबरेशन टाइगरस ऑफ तमिल ईलम' (LTTE) श्रीलंकन सेना के साथ सशस्त्र संघर्ष कर रहा है और एक तमिल ईलम अर्थात् तमिलों के लिए एक अलग देश की मांग कर रहा है। श्रीलंका के उत्तर पूर्वी भाग पर लिट्टे का नियंत्रण रहा है। श्रीलंका की समस्या भारतवंशी लोगों से जुड़ी है भारत की तमिल जनता का भारत सरकार पर भारी दबाव है कि वो श्रीलंका के तमिल लोगों के हितों की रक्षा करें। भारतीय सरकार ने समय-समय पर तमिल लोगों के सवाल पर श्रीलंका की सरकार से बातचीत की कोशिश की है। लेकिन सन 1987 में भारतीय सरकार इस मसले में प्रत्यक्ष रूप से शामिल हुई और श्रीलंका सरकार से एक समझौता किया तथा श्रीलंका सरकार और तमिलों के बीच रिश्ते सामान्य करने के लिए भारतीय सेना को भेजा। आखिर में भारतीय सेना लिट्टे के साथ संघर्ष में फंस गई। सेना का श्रीलंका में भेजा जाना श्रीलंका की जनता को भी पसंद नहीं आया क्योंकि उन्होंने इसे श्रीलंका के अंदरूनी मामलों में हस्तक्षेप माना। 1989 में भारत ने अपनी शांति सेना को लक्ष्य प्राप्त किए बगैर ही श्रीलंका से वापस बुला लिया।

इस तमिल-सिंहाली मसले को मध्यस्ता के माध्यम से हल कराने हेतु नॉर्वे और आइसलैंड जैसे देशों ने दोनों पक्षों के बीच बातचीत के लिए रास्ता बनाया है।

संघर्षों में फंसे होने के बावजूद यह उल्लेखनीय है कि श्रीलंका की आर्थिक वृद्धि और विकास दोनों ने उच्च स्तर को हासिल किया है। श्रीलंका ने जनसंख्या वृद्धि पर सफलतापूर्वक नियंत्रण करने वाले विकासशील देशों में अपना पहला स्थान बना लिया है। दक्षिण एशिया में सबसे पहले श्रीलंका ने ही आर्थिक उदारीकरण को अपनाया और इतने संघर्षों और झंझट के बावजूद श्रीलंका ने आज तक अपने देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था को कायम रखा हुआ है।

भारत-पाकिस्तान संघर्ष

दक्षिण एशिया की घरेलू राजनीति से बाहर निकलते हुए अब इन संबंधों पर भी नज़र डाली जाए कि जहाँ संघर्ष हुए हैं। शीत युद्ध की समाप्ति के बावजूद दक्षिण एशिया क्षेत्र में तनाव समाप्त नहीं हुआ है। इस क्षेत्र के कुछ संघर्ष अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति के हैं। चूँकि दक्षिण एशिया में भारत की स्थिति केंद्रीय है इसलिए अधिकतर संघर्षों का रिश्ता भारत से है।

इस संघर्षो में सबसे प्रमुख भारत पाकिस्तान के बीच का संघर्ष है। विभाजन के तुरंत बाद भारत पाकिस्तान के बीच संघर्ष कश्मीर को लेकर हुआ पाकिस्तान की सरकार कश्मीर को पाकिस्तान का हिस्सा बताती है। भारत और पाकिस्तान के बीच 1947-48 और 1965 के युद्ध से इस मसले का समाधान नहीं हुआ है। 1948 के युद्ध के फलस्वरूप कश्मीर के दो हिस्से हो गए थे। एक हिस्सा पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर कहलाया जबकि दूसरा हिस्सा भारत का जम्मू-कश्मीर प्रांत बना। दोनों के बीच एक नियंत्रण सीमा रेखा है। 1971 में भारत ने पाकिस्तान के विरुद्ध एक युद्ध जीता लेकिन कश्मीर मसला हल नहीं किया जा सका। पाकिस्तान और भारत के बीच सियाचिन ग्लेशियर पर नियंत्रण और हथियारों की होड़ को लेकर भी संबंध तनावपूर्ण रहते हैं। 1990 के दशक में दोनों देशों ने परमाणु हथियार ओर एक दूसरे पर दाग़ने की क्षमता वाले मिसाइल हासिल/विकसित कर लिए हैं जिसके कारण हथियारों की होड़ ने एक नया रूप धारण कर लिया है। 1998 में भारत ने पोखरण में और इसके कुछ दिन के अंदर ही पाकिस्तान ने चगाई पहाड़ी में परमाणु परीक्षण किए। इसके बाद ऐसा प्रतीत होता है कि भारत और पाकिस्तान के बीच सीधे और सर्वव्यापी युद्ध छिड़ने की आशंका कम हो गई है।

भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव का एक क्षेत्र पाकिस्तान द्वारा कश्मीरी उग्रवादियों को हथियार, प्रशिक्षण और धन देने को लेकर है। पाकिस्तान ने 1985 से 1995 की अवधि में खालिस्तान समर्थक उग्रवादियों को हथियार और गोला बारुद उपलब्ध कराया था। पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी 'इंटर सर्विसिज इंटेलिजंस (ISI) पर बांग्लादेश और नेपाल के कुछ ठिकानो से भारत के पूर्वोतर भागों में भारत विराधी अभियानों में संलग्न होने का आरोप भी है। जबकि पाकिस्तान सिंध और बलूचिस्तान में समस्याओं को भड़काने का इल्ज़ाम भारत की खुफिया एजेंसियों पर लगाता है।

भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु नदी के जल बंटवारे को लेकर तीखे विवाद हुए है। 1960 में विश्व बैंक की मदद से भारत और पाकिस्तान ने सिंधु जल संधि पर दस्तखत किए परंतु यह समस्या अभी तक हल नहीं हुई है। अभी भी सिंधु जल संधि की व्याख्या और नदी जल के इस्तेमाल को लेकर छोटे-मोटे विवाद हैं।

कच्छ के रन में सर क्रीक सीमा रेखा को लेकर दोनों देशों के बीच भी मतभेद पाए जाते हैं। हालांकि यह विवाद छोटा जरूर मालूम होता है, लेकिन इस विवाद के साथ एक चिंता भी जुड़ी हुई है कि इसे किस प्रकार हल किया जाए कि उसका असर सर क्रीक इलाके के समुद्री संसाधनों के नियंत्रण पर ना पड़े। इन सभी विषयों पर भारत-पाकिस्तान के बीच वार्ताओं का दौर चल रहा है।

भारत और उसके अन्य पड़ोसी देश

भारत तथा बांग्लादेश के संबंध

तनाव के क्षेत्र।

बांग्लादेश और भारत के बीच कई मुद्दों पर तनाव पाया जाता है। इनमें से एक गंगा और ब्रह्मपुत्र के जल में हिस्सेदारी को लेकर है। बांग्लादेश की सरकार का मानना है कि भारतीय सरकार नदी जल में हिस्सेदारी के सवाल पर इलाके के दादा की तरह बर्ताव कर रही है।

भारत में अवैध अप्रवास पर ढाका का खंडन, भारत विरोधी इस्लामी कट्टरपंथी जमातों का समर्थन, ढाका के भारत को प्राकृतिक गैस निर्यात न करने के फैसले तथा म्यांमार को बांग्लादेशी इलाके से होकर भारत को प्राकृतिक गैस निर्यात न करने जैसे मसले भी विवादों में सम्मिलित हैं। इसके अलावा भारत पर बांग्लादेशी सरकार यह इल्जाम लगाती है कि चटगांव पर्वतीय क्षेत्र में विद्रोह को भारतीय सरकार हवा दे रही है। इसके अतिरिक्त भारत, बांग्लादेश के प्राकृतिक गैस में सेंधमारी और व्यापार में बेईमानी कर रहा है।

सहयोग के क्षेत्र

विवादों के बावजूद भारत और बांग्लादेश कई मामलों में सहयोग करते हैं। गत वर्षों में दोनों के बीच आर्थिक संबंध ज्यादा बेहतर हुए हैं। आपदा प्रबंधन और पर्यावरण के मसले पर भी दोनों देशों ने निरंतर सहयोग किया है। इस बात के भी प्रयास किए जा रहे हैं कि साझे खतरों को पहचानकर तथा एक दूसरों की जरूरतों के प्रति संवेदनशीलता अपनाकर सहयोग के क्षेत्र को बढ़ाया जाए।

भारत तथा नेपाल के बीच संबंध

तनाव के क्षेत्र

दोनों देशों में अतीत में व्यापार को लेकर मनमुटाव पैदा हुए हैं। नेपाल की चीन के साथ दोस्ती को लेकर भारत सरकार में अक्सर अपनी अप्रसन्नता जताई है। नेपाल सरकार भारत विरोधी तत्वों के खिलाफ कदम नहीं उठाती इससे भारत सरकार नाखुश है। इसके अतिरिक्त भारत की सुरक्षा एजेंसियाँ नेपाल में चल रहे माओवादी आंदोलन को अपनी सुरक्षा के लिए खतरा मानती है क्योंकि भारत में बिहार से लेकर आंध्र प्रदेश तक विभिन्न प्रांतों में नक्सलवादी समूहों का उभार हुआ है। दूसरी ओर नेपाल के लोग यह सोचते हैं कि भारत की सरकार नेपाल के अंदरूनी मामलों में दखल दे रही है, और उसके नदी जल और पनबिजली पर बुरी नियत रखती है। नेपाल यह भी सोचता है कि भारत उसको अपने क्षेत्र से होकर समुद्र तक पहुंचने से रोकता है।

सहयोग के क्षेत्र

भारत और नेपाल के बीच मधुर संबंध है। दोंनों देशों के बीच एक संधि हुई जिसके अनुसार दोनों देशों के नागरिक बिना पासपोर्ट और वीजा के एक दूसरों के देश में न केवल आ जा सकते हैं बल्कि कार्य भी कर सकते हैं। नेपाल और भारत के संबंध मजबूत और शांतिपूर्ण है। विवादों के बावजूद दोनों देश व्यापार, वैज्ञानिक सहयोग, साझे प्राकृतिक संसाधन, बिजली उत्पादन और जल प्रबंधन ग्रिड के मसले पर एक साथ है। नेपाल में लोकतंत्र की बहाली से दोनों देशों के बीच संबंधों के और मजबूत होने की उम्मीद बंधी है।

श्रीलंका और भारत के बीच संबंध

तनाव के क्षेत्र

श्रीलंका और भारत की सरकारों के संबंध में तनाव का मुख्य कारण श्रीलंका में जारी जातिय संघर्ष है। क्योंकि तमिल आबादी जो श्रीलंका में रह रही है जब वह राजनीतिक तौर पर नाखुश हों और उन्हें मारा जा रहा हो तो भारतीय नेताओं और जनता का तटस्थ रहना असंभव लगता है। 1987 के सैन्य हस्तक्षेप के बाद से भारतीय सरकार श्रीलंका के अंदरूनी मामलों में ना जोड़ने की नीति पर चल रही है।

सहयोग के क्षेत्र

भारत सरकार ने श्रीलंका के साथ एक मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं इससे दोनों देशों के संबंध मजबूत हुए है। श्रीलंका में सुनामी से हुई तबाही के बाद ही है पुनर्निर्माण कार्यों में भारतीय मदद से भी दोनों देश एक दूसरे के करीब आए है।

भारत और भूटान के संबंध

भारत और भूटान के बीच संबंधों में कोई बड़ा झगड़ा नहीं है। भूटान ने अपने क्षेत्र से उन गोरिल्लों को निकाल बाहर किया है जो पूर्वोत्तर भारत में उग्रवादी कार्यवाहियाँ करते थे। इससे भारत को बड़ी मदद मिली है। भारत भूटान में पन बिजली की बड़ी परियोजनाओं में हाथ बंटा रहा है। इस हिमालयी देश में विकास कार्यों के लिए सबसे ज़्यादा अनुदान भारत से हासिल होता है।

भारत मालदीव संबंध

मालदीव के साथ भारत के संबंध सौहार्दपूर्ण और मधुर हैं। 1988 श्रीलंका से आये कुछ भाड़े के तमिल सैनिकों ने जब मालदीव पर हमला किया और मालदीव ने इस आक्रमण को रोकने के लिए भारत से मदद मांगी तो भारतीय वायु सेना और नौसेना ने तुरंत कार्यवाही की। भारत ने मालदीव के आर्थिक विकास पर्यटन और मत्स्य उद्योग में भी मदद की है।

याद रखने योग्य बातें

यहाँ यह बात याद रखने योग्य है के दक्षिण एशिया में सारे झगड़े सिर्फ भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच ही नहीं है। नेपाल–भूटान, बांग्लादेश–म्यांमार के बीच जातीय–मूल के नेपालीयों के भूटान अप्रवास तथा रोहिंग्या लोगों के म्यांमार में अप्रवास के मसले पर मतभेद रहे हैं। बांग्लादेश और नेपाल के बीच हिमालय की नदियों के जल की हिस्सेदारी को लेकर अनबन रहती है। यह बात सही है कि इस इलाके में सभी बड़े झगड़े भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच हैं। परंतु इसका एक कारण दक्षिण एशिया की भौगोलिक स्थिति है जहाँ भारत बीच में स्थित है और बाकी देश भारत की सीमा के इर्द–गिर्द हैं।

शांति और सहयोग

दक्षिण एशियाई क्षेत्र में तनावों के बावजूद बहुत से क्षेत्रों में शांति स्थापित करने और सहयोग को बढ़ाने के लिए कार्य किया गया है जिसे इस तरह लिखा जा सकता है।

SAARC अर्थात 'साउथ एशियन एसोसिएशन फॉर रिजनल को–ऑपरेशन' की स्थापना जिसके द्वारा दक्षिण एशियाई देश बहुस्तरीय साधनों से आपस में सहयोग करने की दिशा में उठाया गया एक बड़ा कदम है। इसकी शुरुआत 1985 में हुई और सन 2002 में इसके द्वारा दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र समझौते (SAFTA) पर दस्तखत किए गए और पूरे क्षेत्र को मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाने का वादा किया गया। यह समझौता जनवरी 2006 से प्रभावी हो गया है इस समझौते का लक्ष्य है कि इन देशों के बीच आपसी व्यापार में लगने वाले सीमा शुल्क को 2007 तक 20 प्रतिशत तक कम कर दिया जाए। परंतु कुछ छोटे देश मानते हैं इस समझौते की आड़ लेकर भारत उनके व्यापार में सेंघ मारना चाहता है, और व्यावसायिक उद्यम तथा और दूसरी चीजों के जरिए उनके समाज और राजनीति पर असर डालना चाहता है। जबकि भारत का मानना है कि मुक्त व्यापार बढ़ने से राजनीतिक मसले पर सहयोग भी बढ़ेगा और ज़्यादा बेहतर होगा।

हालाँकि पाकिस्तान और भारत के बीच के संघर्ष और झगड़े कभी न खत्म होने वाली कहानी की तरह हैं मगर फिर भी दोनों देश शांति बहाल करने की कोशिश कर रहे हैं। दोनों देश युद्ध के जोखिम को कम करने और आपसी विश्वास की बहाली के उपाय करने पर सहमत हो गए हैं। सामाजिक कार्यकर्ता और महत्वपूर्ण हस्तियां दोनों देशों के बीच दोस्ती का माहौल बनाने के लिए एकजुट हुई हैं। वीजा नियमों में आसानी हुई है। इस क्षेत्र की घटनाओं पर बाहरी ताकतों का भी असर पड़ता है। पिछले चंद वर्षों में भारत तथा चीन के संबंध बेहतर हुए हैं, परंतु चीन की रणनीतिक साझेदारी पाकिस्तान के साथ है और भारत–चीन संबंधों में यह बड़ी कठिनाई है।

शीतयुद्ध के बाद दक्षिण एशिया में अमरीकी प्रभाव तेजी से बढ़ा है। उसने भारत तथा पाकिस्तान दोनों के साथ

अपने संबंध बेहतर किए हैं। और लगातार इन दोनों देशों के बीच मध्यस्थता की भूमिका निभा रहा है। दक्षिण एशिया में अमरीकी भागीदारी ज्यादा गहरी हुई है। चूंकि दक्षिण एशिया भारी-भरकम जनसंख्या वाला क्षेत्र है इसी कारण इसका बाजार का आकार भी बड़ा है अतः इस क्षेत्र में सुरक्षा और शांति का माहौल अमेरीका के हित में है। यह बात भी उल्लेखनीय है कि यदि यह क्षेत्र एक गुट के रूप में उभरेगा तो यह बात किसी बाहरी शक्ति से ज़्यादा इसी क्षेत्र के हित में होगी।

पाठगत अवधारणाएँ

1. **दक्षिण एशिया:** एशिया का वह भाग जो दक्षिण में स्थित है और जिसे प्रायः भारतीय उपमहाद्वीप भी कहते हैं। इस में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान श्रीलंका, तथा मालदीव देश आते हैं।
2. SAFTA : दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के बीच मुक्त व्यापार का समझौता जिसके द्वारा सीमा-शुल्क में भारी कटौती करके सभी देशों में व्यापार की उन्नति की संभावनाओं को बढ़ाना।
3. SAARC : दक्षिण एशिया का संगठन जो क्षेत्रीय सहयोग के लिए बना है।
4. **संवैधानिक राजतन्त्र:** ऐसी व्यवस्था जिसमें राजा देश का अध्यक्ष हो परन्तु उस देश का शासन संविधान के अनुसार चलाया जाता हो और राजा के अधिकार भी संविधान में लिखे हुए हों।
5. **जातीय संघर्ष :** किसी देश में समाज के विभिन्न वर्गों के बीच होने वाला संघर्ष जो प्रायः समान अधिकारों की मांग को ले कर हो।

क्रियाकलाप

- भारत तथा पाकिस्तान के बीच सहयोग के क्षेत्रों और संघर्ष के कारणों की समीक्षा करते हुए एक प्रोजेक्ट तैयार करें।
- सार्क (SAARC) तथा साफ्टा (SAFTA) की आवश्यकता पर कक्षा में परिचर्चा का आयोजन करें।

मूल्यांकन

1. 2006 में दक्षिण एशिया के किस देश में लोकतंत्र की स्थापना हुई थी? — 1 अंक
2. साफ्टा समझौते को किस वर्ष से लागू किया गया है? — 1 अंक
3. किस देश में सिंहली जाति का दबदबा है? — 1 अंक
4. बांग्लादेश ने किस देश से स्वतंत्रता प्राप्त की और किसके नेतृत्व में यह संघर्ष किया गया था? — 2 अंक
5. नेपाल और भारत के मध्य तनाव के दो क्षेत्रों की व्याख्या कीजिए? — 2 अंक
6. श्रीलंका में जातीय संघर्ष के कारणों की समीक्षा कीजिए। — 4 अंक
7. निम्न चित्र का अध्ययन करें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

नेपाल के आंदोलन का फोटो

7.1 यह चित्र किस एशियाई देश के जन आन्दोलन को दिखा रहा है। 1 अंक

7.2 इस आंदोलन का नेतृत्व किस ने किया? 1 अंक

7.3 इस आंदोलन के क्या परिणाम निकले? 2 अंक

8. भारत तथा पाकिस्तान के बीच तीन संघर्ष के क्षेत्रों और तीन सहयोग के क्षेत्रों के बारे में लिखिए। 6 अंक

संवर्धित मूल्य

1. दक्षिण एशियाई क्षेत्र की समस्याओं का बोध।
2. भारत की दक्षिण एशिया में केंद्रीय स्थिति के कारण समस्याओं को बोध।
3. क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता की समझ का विकास।

❑❑❑